वर्ष ११ अंक २२ मई २०१८

कर्मभूमि

हिन्दी यू.एस.ए.
भारत यात्रा
वृतांत

परिवार से बड़ा
कोई धन नहीं

पिता से बड़ा कोई
सलाहकार नहीं

मां की छांव से बड़ी
कोई दुनिया नहीं

भाई से अच्छा कोई
भागीदार नहीं

बहन से बड़ा
कोई शुभचिंतक नहीं

परिवार

हिन्दी USA ®

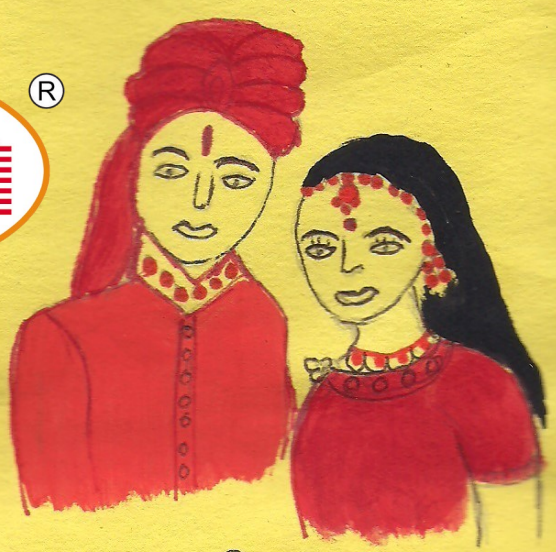

पत्नी से बड़ा
कोई दोस्त नहीं है

सत्रहवें हिन्दी महोत्सव के अवसर पर

Vishwa Sant Brahmrishi Gurudev, Tirupati

(Guruvanand Ji Swami)

Will bless us with his divine presence in NY – NJ

You are cordially invited for his Personal Blessing, Darshan, and Discourse

Saturday, June 30th, 2018
Sunday, July 1st, 2018

New York & New Jersey

Venue and timing - TBD

For details, please contact: 516-484-0018 - info@gurujiusavisit.com

Best compliments:

Meenakshi & Rakesh Bhargava, Roslyn Hts. NY

Rayansh Prasad, Ruchi, Vivek, Richa, Dr. Rahul

www.hindiusa.org

1-877-HINDIUSA

स्थापना: नवंबर २००१ संस्थापक: देवेन्द्र सिंह

हिन्दी यू.एस.ए. के किसी भी सदस्य ने कोई पद नहीं लिया है, किन्तु विभिन्न कार्यभार वहन करने के अनुसार उनका परिचय इस प्रकार है:

निदेशक मंडल के सदस्य

देवेन्द्र सिंह (मुख्य संयोजक) - 856-625-4335

रचिता सिंह (शिक्षण/प्रशिक्षण संयोजिका) - 609-248-5966

राज मित्तल (धनराशि संयोजक) - 732-423-4619

माणक काबरा (प्रबंध संयोजक) - 718-414-5429

सुशील अग्रवाल ('कर्मभूमि' संयोजक) - 908-361-0220

शिक्षण समिति

क्षमा सोनी - कनिष्ठा-१ स्तर

रंजनी रामनाथन - कनिष्ठा-२ स्तर

मोनिका गुप्ता - प्रथमा-१ स्तर

सन्जोत ताटके, सरिता नेमानी - प्रथमा-२ स्तर

इंदु श्रीवास्तव, अदिति महेश्वरी - मध्यमा-१ स्तर

ममता त्रिवेदी, गरिमा अग्रवाल - मध्यमा-२ स्तर

विकास ओहरी, ऋतु जग्गी - मध्यमा-३ स्तर

कविता प्रसाद, सुशील अग्रवाल - उच्चस्तर-१

नेहा माथुर - उच्चस्तर-२

अन्य समितियाँ

अमित खरे – वेब साइट

अद्वैत तारे – वीडियो

योगिता मोदी – बुक स्टाल प्रबंधन

पाठशाला संचालक/संचालिकाएँ

एडिसन: माणक काबरा (718-414-5429), सुनील दुबे (848-248-6500)

साऊथ ब्रंस्विक: उमेश महाजन (732-274-2733)

मॉन्टगोमरी: अद्वैत/अरुणधति तारे (609-651-8775)

पिस्कैटवे: सौरभ उदेशी (848-205-1535)

ईस्ट ब्रंस्विक: मायनो मुर्मु (732-698-0118)

वुडब्रिज: शिव आर्य (908-812-1253)

जर्सी सिटी: मनोज सिंह (201-233-5835)

प्लेंसबोरो: गुलशन मिर्ग (609-451-0126)

लॉरेंसविल: श्वेता गंगराडे (609-306-1610)

चैरी हिल: देवेंद्र सिंह (609-248-5966)

चैस्टरफील्ड: शिप्रा सूद (609-920-0177)

होमडेल: निनिता पटेल (732-365-2874)

मोनरो: सुनीता गुलाटी (732-656-1962)

नॉर्थ ब्रंस्विक: योगिता मोदी (609-785-1604)

बस्किंग रिज: संजय गुप्ता (732-331-9342)

विल्टन: अमित अग्रवाल (630-401-0690)

चेतना मल्लारपु (475-999-8705)

स्टैमफर्ड: अजय जैन (203-331-7701), मनीष महेश्वरी (203-522-8888)

एवॉन: बसवराज गरग (732-201-3779)

ट्रम्बुल: रुचि शर्मा (203-570-1261)

एलिकोट सिटी (MD): मुरली तुल्शियान (201-892-7898)

नीधम (MA): विक्रम कौल (203-919-1394)

अटलांटा (GA): रंजन पठानिया (203-993-9631)

सैन डिएगो (CA): मुदिता तिवारी (858-229-5820)

हमको सारी भाषाओं में हिन्दी प्यारी लगती है, नारी के मस्तक पर जैसे कुमकुम बिंदी सजती है।

संपादकीय

सत्रहवें हिंदी महोत्सव की कर्मभूमि का यह 'परिवार विशेषांक' हमारे शिक्षकों, नन्हे-मुन्ने बच्चों तथा स्वयंसेवकों द्वारा लिखी गयी अनगिनत रचनाओं, रोचक संस्मरणों एवं कविताओं से परिपूर्ण है तथा इसका हर पृष्ठ अति आनंदमय है। इसका एक पृष्ठ पढने के बाद आगे के पृष्ठों को पढ़ने की तन्मयता और जिज्ञासा आपमें स्वतः ही जागृत होती रहेगी। 'परिवार विशेषांक' के इस विशिष्ट अंक के लिए हमारे पास इतनी सामग्री एवं लेख आये हैं कि सबको प्रकाशित कर पाना हमारे लिए एक दुर्लभ कार्य बना हुआ है क्योंकि यह एक ऐसा विषय है जिस पर कोई भी कितना ही लिखे हमेशा कम ही है, यह तो आप इस अंक को पढ़कर ही अनुभव करेंगे।

विगत वर्ष २०१७ ने हिंदी यू.एस.ए. की प्रगति एवं समृद्धि में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। ४ नयी पाठशालाएं, बस्किंग रिज-न्यूजर्सी, एवन-कनेक्टीकट, ट्रमबुल-कनेक्टीकट, और नीधम-मैसाचुस्सेट्स में प्रारंभ की गईं तथा उनका सफ़लता पूर्वक सञ्चालन हो रहा है। स्थापना के पहले वर्ष में ही छात्रों की आशातीत संख्या एवं अभिभावकों का भरपूर सहयोग संस्था के लिए एक गर्व का विषय है। इसका पूरा श्रेय इन पाठशालाओं के संचालक और अभिभावकों को ही दिया जायेगा। इसी वर्ष हिंदी यू.एस.ए. ने चुने हुए १४ छात्र-छत्राओं एवं युवा स्वयं सेवकों के एक दल का १५ दिवसिए शैक्षणिक भारत भ्रमण आयोजित किजिसमें इन छात्रों ने भारत के कई स्थानों का भ्रमण किया, पाठशालाओं का अवलोकन किया एवं भारत के राष्ट्रपति, माननीय राम नाथ कोविंद से मिले। इसका पूरा विवरण आप इस अंक के लेखों में पढ़ें। संस्था के कुछ युवा स्वयंसेवक एवं छात्रों ने अपनी विलक्षण प्रतिभाओं को उजागर कर कुछ ऐसे कीर्तिमान स्थापित किये हैं जिस पर न केवल हमारी संस्था को ही अपितु पूर्ण भारतीय समुदाय को गर्व की अनुभूति होनी चाहिए। संजना विट्ठल, नितान्ता गरग, हर्षल नवाडे, श्रेया घोरपड़े आदि ऐसे कुछ छात्र / स्वयंसेवक हैं जिनकी प्रतिभाओं एवं उपलब्धियों के बारे में आप इस पत्रिका में पढ़ेंगे। हिंदी यू.एस.ए. को ऐसे प्रतिभावान छात्रों पर गर्व है।

करीब १३० पृष्ठों का यह वृहद् अंक छात्रों एवं अध्यापकों की रचनाओं एवं संस्मरणों से सराबोर है। कुछ रचनाएँ जो की पाठकों का विशेष ध्यान आकर्षित करती हैं, 'हिंदी यू.एस.ए. के होनहार बच्चे', 'विस्तृत परिवार'- में लेखिका पारुल दरबारी ने अपने जीवन के एक कटु संस्मरण का वर्णन यह दर्शाकर किया है कि 'रिश्तों को नाम की जरुरत नहीं होती है, सबसे ज़रूरी होता है एक दूसरे के लिए प्यार और समर्पण', 'परिवार के साथ बिताये कुछ क्षण मुहावरे और लोकोक्तियों के संग' में छात्रों ने अपने परिवार के साथ बिताये समय एवं अनुभवों को बहुत ही रोचकतापूर्ण शब्दों में मुहावरों एवं लोकोक्तियों के साथ लिखा है जिसमे पाठकों की जिज्ञासा बच्चों के ढेर सारे अनुभव पढ़ने हेतु बढती ही जाएगी। 'परिवार एक आशीर्वाद' में छात्रा भूमि पाटणी ने अपने परिवार के साथ की एक रोमांचकारी यात्रा का संस्मरण अपने शब्दों में बहुत सुन्दर शब्दों में लिखा है। 'स्वर्णिम भविष्य के उज्जवल सपने' में चेरीहिल पाठशाला के छात्रों ने वे भविष्य में क्या बनना चाहते हैं, अपनी महत्वाकांक्षा का सुन्दर चित्रण इसमें किया है। इनके अतिरिक्त पूरी पत्रिका में अत्यंत महत्वपूर्ण व रोचक सामग्री है, कृपया सभी लेख अवश्य पढ़ें तथा हमें अपने विचारों से अवगत करायें। बहुत से बच्चों के संस्मरण, आलेख उनके बनाये गए चित्रों सहित उन्हीं

की लिपि में ही प्रकाशित किये जा रहे हैं, इससे उनका उत्साहवर्धन होगा और उन्हें सतत् लिखने की प्रेरणा मिलेगी। पत्रिका की मुद्रित प्रतियों पर आये खर्च का एक बड़ा हिस्सा हमारे समर्थकों द्वारा पत्रिका में अपना विज्ञापन देकर पूरा किया गया है। उनकी वित्तीय सहायता हेतु हिंदी यू.एस.ए. उनका आभारी है। पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका पढ़ने के पश्चात अपनी प्रतिक्रियाएं, आलोचना, समालोचना अवश्य भेजें। हमें उनकी प्रतीक्षा रहेगी। जो अभिभावक या पाठक संस्था में स्वयं-सेवक या अध्यापक बनने के इच्छुक हो, कृपया अवश्य संपर्क करें।

धन्यवाद

हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं के संचालक/संचालिकाएँ

हिन्दी यू.एस.ए. उत्तरी अमेरिका की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्था है। निरंतर १७ वर्षों से हिन्दी के प्रचार और प्रसार में कार्यरत है। हिन्दी यू.एस.ए. संस्था ने मोती समान स्वयंसेवियों को एक धागे में पिरोकर अति सुंदर माला का रूप दिया है। इस चित्र में आप हिन्दी यू.एस.ए. संस्था के स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं, जो संस्था के मजबूत स्तम्भ हैं, को देख सकते हैं। किसी भी संस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए नियमावलियों व अनुशासन के धागे में पिरोना अति आवश्यक है। हिन्दी यू.एस.ए. की २२ पाठशालाएँ चलती हैं। पाठशाला संचालकों पर ही अपनी-अपनी पाठशाला को सुचारु रूप से नियमानुसार चलाने का कार्यभार रहता है। संस्था के सभी नियम व निर्णय सभी कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में मासिक सभा में लिए जाते हैं। पाठशालाओं में बच्चों का पंजीकरण अप्रैल माह से ही आरम्भ हो जाता है। हिन्दी की कक्षाएँ ९ विभिन्न स्तरों में चलती हैं। नया सत्र सितम्बर माह के दूसरे सप्ताह से आरम्भ होकर जून माह के दूसरे सप्ताह तक चलता है।

न्यूजर्सी से बाहर अमेरिका के विभिन्न राज्यों में भी हिन्दी यू.एस.ए. के विद्यालय हैं। यदि आप उत्तरी अमेरिका के किसी राज्य में हिन्दी पाठशाला खोलना चाहते हैं तो आप हमें सम्पर्क कीजिए। हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ता बहुत ही तीव्र गति से अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होते हुए अपना सहयोग दे रहे हैं। यदि आप भी अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को संजोय रखने में सहभागी बनना चाहते हैं तो हिन्दी यू.एस.ए. परिवार का सदस्य बनें।

कर्मभूमि

०८ - हिंदी यू.एस.ए. के वार्षिक कार्यक्रम

१० - युवा स्वयंसेवक अभिनन्दन समारोह

१२ - हमारा परिवार - हमारा गौरव

१४ - हिन्दी यू.एस.ए. भारत यात्रा

३१ - हिन्दी यू.एस.ए. के होनहार बच्चे

३३ - परिवार

३४ - पुनर्कवि भव:

३५ - यह जिन्दगी

३६ - वसुधैव कुटुम्बकं

३७ - विस्तृत परिवार

३८ - नार्थ ब्रन्सविक हिन्दी परिवार

३९ - स्वान्तः सुखाय, जन हिताय

४० - वसुधैव कुटुम्बकं

४१ - प्रेरणादायी परिवार

४२ - परिवार - रिश्तों नातों का चक्र

४३ - अपनी धरोहर, अपनी पहचान - अभिभावक की भूमिका

४४ - साउथ ब्रंसविक उच्चस्तर-२

४७ - संयुक्त परिवार - मेरा अनुभव

४८ - परिवार के साथ यादगार यात्रा

४९ - हमारे प्रेरणास्त्रोत्र

५० - परिवार

५२ - संयुक्त परिवार के लाभ

५३ - चिड़ियाघर की तस्वीरें

५४ - मेरा परिवार और दुर्गा पूजा

५६ - परिवार एक आशीर्वाद

५७ - परिवार-एक महत्वपूर्ण हिस्सा

५८ - परिवार के साथ यात्रा

५९ - हमारी कक्षा - एक परिवार

६० - जन-जन है मेरा परिवार

६१ - स्वर्णिम भविष्य के ...

६४ - स्विट्जरलैंड यात्रा

६६ - जब हम परिवार के बारे में ...

६७ - मेरा परिवार

६८ - महात्मा गांधी

६९ - मेरा प्यारा भारतीय परिवार

७० - परिवार के साथ दिवाली

संरक्षक

देवेंद्र सिंह

रूपरेखा एवं रचना

सुशील अग्रवाल

सम्पादकीय मंडल

रचिता सिंह

माणक काबरा

राज मित्तल

अपनी प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें

हमें विपत्र निम्न पते पर लिखें

karmbhoomi@hindiusa.org

या डाक द्वारा निम्न पते पर भेजें:

Hindi USA
70 Homestead Drive
Pemberton, NJ 08068

मुख्य पृष्ठ – गीतांजलि गरग (एवॉन पाठशाला)

७२ - खूबसूरत पल

७४ - एडिसन पाठशाला, उच्चस्तर-२

८३ - परिवार - परिभाषा और महत्त्व

८४ - लॉरेंसविल पाठशाला, उच्चस्तर-२

८६ - हमारे परिवार के सदस्य

९० - ईस्ट ब्रंस्विक, उच्चस्तर - २

९१ - मेरा हिन्दी यू.एस.ए. परिवार

९२ - चेस्टरफील्ड पाठशाला-उच्चस्तर-२, मध्यमा-३

९६ - परिवार और व्यवसाय

९७-१२८ पाठशालाओं के लेख

देश–विदेश के 26 हिंदी सेवियों को सम्मानित करेगा हिंदी संस्थान

जागरण संवाददाता, आगरा

- संस्थान ने की हिंदी सेवी सम्मान के लिए नामों की घोषणा
- जून में राष्ट्रपति करेंगे सम्मानित, पांच–पांच लाख रुपये भी मिलेंगे

केंद्रीय हिंदी संस्थान ने अखिल भारतीय हिंदी सेवी सम्मान योजना 2016 के लिए हिंदी जगत में उल्लेखनीय कार्य करने वालों के नामों की घोषणा कर दी है। ये सम्मान 26 लोगों को प्रदान किए जाएंगे। जून में राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति सम्मानित करेंगे। सम्मानित व्यक्तियों को पांच-पांच लाख रुपये की धनराशि भी प्रदान की जाएगी।

केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. नंदकिशोर पांडेय ने पत्रकार वार्ता में बताया कि हिंदी प्रचार व हिंदी प्रशिक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए जम्मू-कश्मीर के डॉ.भारत भूषण शर्मा, महाराष्ट्र के डॉ. सूर्य नारायण रणसुभे, ओडिशा के डॉ. अजय कुमार पटनायक, तेलंगाना के डॉ. पी माणिक्यांबा का चयन किया है। इन्हें गंगाशरण सिंह पुरस्कार मिलेगा। हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए दिल्ली की शीला झुनझुनवाला और रोहित सरदाना को गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार मिलेगा। विज्ञान व चिकित्सा विज्ञान एवं अभियांत्रिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए राजस्थान के प्रो. बनवारी लाल गौड़ और उत्तर प्रदेश के वन विभाग के अफसर महेंद्र प्रताप सिंह को आत्माराम पुरस्कार दिया जाएगा। सृजनात्मक व आलोचनात्मक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए मध्य प्रदेश के प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल और कैलाश चंद्र पंत को सुब्रह्मण्यम भारती पुरस्कार मिलेगा, जबकि हिंदी माध्यम से ज्ञान के विविध क्षेत्र, पर्यटन और पर्यावरण से संबंधित क्षेत्र में मौलिक अनुसंधान के लिए गुजरात के प्रो. दया शंकर शुक्ल और केंद्रीय हिंदी संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो. महावीर सरन जैन को महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार मिलेगा। विदेशी हिंदी विद्वान को विदेश में हिंदी के प्रचार-प्रसार व लेखन में उल्लेखनीय कार्य के लिए मॉरीशस के सत्यदेव टेंगर और चीन के प्रो. जियांग जिंग ख्वे को डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन पुरस्कार दिया जाएगा। अप्रवासी भारतीय विद्वान को विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार व लेखन में उल्लेखनीय कार्य के लिए यूएसए के देवेंद्र सिंह और यूके की उषा राजे को पद्मभूषण डॉ. माटूरि सत्यनारायण पुरस्कार दिया जाएगा।

कृषि विज्ञान और राष्ट्रीय एकता के क्षेत्र में उल्लेखनीय लेखन कार्य के लिए बीएचयू के कृषि विज्ञान संकाय के पूर्व अध्यक्ष प्रो. रमेश चंद्र तिवारी और हिमाचल प्रदेश के प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री को सरदार बल्लभ भाई पटेल पुरस्कार दिया जाएगा। मानविकी और कला, संस्कृति व विचार की भारतीय चिंतन परंपरा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए दिल्ली स्थित हिंदी अकादमी के पूर्व अध्यक्ष डॉ. रामशरण गौड़ और राजस्थान के डॉ. बद्री प्रसाद पंचोली को दीनदयाल उपाध्याय पुरस्कार दिया जाएगा। भारत विद्या (इंडोलॉजी) के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए बीएचयू के प्राचीन इतिहास व कला संकाय के पूर्व अध्यक्ष प्रो. ठाकुर प्रसाद वर्मा और हरियाणा के प्रो. नंदलाल मेहता वागीश को स्वामी विवेकानंद पुरस्कार दिया जाएगा। शिक्षाशास्त्र व प्रबंधन में हिंदी के माध्यम से उल्लेखनीय लेखन कार्य के लिए एनसीईआरटी के पूर्व निदेशक प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत और राजस्थान के प्रो. भगवती प्रसाद शर्मा को पंडित मदन मोहन मालवीय पुरस्कार दिया जाएगा।

सत्र २०१७-१८

हिन्दी यू.एस.ए. के वर्ष भर के कार्य तथा कार्यक्रम

हिन्दी यू. एस. ए. एक ऐसी स्वयंसेवी संस्था है जो पूरे वर्ष सक्रिय रहती है। इसके हिन्दी शिक्षण का सत्र सितंबर माह से जून माह तक चलता है। इन दस महीनों में संस्था की सभी पाठशालाओं में हिन्दी कक्षाएँ तो प्रति शुक्रवार अनवरत चलती ही हैं, साथ ही नीचे दिए गए कार्य और कार्यक्रम भी वर्ष भर चलते रहते हैं। हिन्दी यू. एस. ए. जिस नियमितता तथा गंभीरता से कार्य करती है उसे देखते हुए भारत के एक उच्च पद पर आसीन हिन्दी विभाग के अधिकारी ने कहा था कि "यह संस्था नहीं संस्थान है और इस पर शोध होना चाहिए"। तो आइए जानते हैं हिन्दी यू. एस. ए. के वर्ष भर के कार्य।

१. पंजीकरण - पिछले ६ वर्षों से संस्था ऑन लाइन रजिस्ट्रेशन (**www.hindiusa.org**) कर रही है जिससे अभिभावकों और संचालकों का कार्य सुलभ हो गया है।

२. पुस्तक मुद्रण तथा वितरण - हिन्दी यू. एस. ए. ने अपनी स्वयं की पुस्तकें तथा पाठ्यक्रम ९ स्तरों में तैयार किया है जो विदेशों में जन्मे तथा पले-बढ़े विद्यार्थियों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। प्रत्येक स्तर में ४-४ पुस्तकें तथा फ्लैश कार्ड्स का एक सेट सम्मिलित है। छोटे स्तरों में सीडी तथा डीवीडी का भी उपयोग किया जाता है। इन पुस्तकों के लिए ३ भंडार गृह हैं। ४,००० विद्यार्थियों में इन पुस्तकों का सही वितरण पाठशाला संचालकों के लिए एक बड़ी चुनौती होता है।

३. प्रचार एवं प्रसार - ग्रीष्मकालीन अवकाश तथा पंजीकरण के समय संस्था दूरदर्शन, रेडियो तथा पुस्तक-स्टॉल के माध्यम से हिन्दी तथा हिन्दी कक्षाओं का प्रचार करती है।

४. त्यौहार का परिचय - प्रवासी विद्यार्थियों को भारतीय त्यौहार तथा संस्कृति का परिचय देने के लिए संस्था प्रतिवर्ष न्यू जर्सी में आयोजित दशहरे के आयोजन में सक्रिय रूप से भाग लेती है तथा दीपावली के समय प्रत्येक पाठशाला में दीपावली उत्सव का आयोजन धूम-धाम से किया जाता है। होली, मकर संक्रांति, लोड़ी, बैसाखी आदि त्यौहार जो सत्र के दौरान आते हैं उन्हें कक्षाओं में मनाया जाता है।

५. अर्धवार्षिक परीक्षा - दिसंबर माह में छुट्टियों के पहले लिखित तथा मौखिक अर्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन किया जाता है जिसके लिए प्रतिवर्ष नए परीक्षा-पत्र बनाए जाते हैं।

६. शिक्षक अभिनंदन समारोह - हिन्दी यू. एस. ए. प्रतिवर्ष दिसंबर माह के प्रथम सप्ताह में अपने सभी ४०० स्वयंसेवकों का अभिनंदन तथा धन्यवाद करने के लिए प्रीतिभोज तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है। इस समारोह में सभी स्वयंसेवकों के जीवनसाथी भी आमंत्रित किए जाते हैं तथा कुछ चुने स्वयंसेवकों को प्रतिवर्ष उनकी विशेष सेवाओं के लिए पुरुस्कृत किया जाता है तथा बाकी सभी स्वयंसेवकों को भी हिन्दी यू. एस. ए. उपहार प्रदान करता है।

७. विद्यार्थियों की भारत यात्रा - इसका विस्तृत विवरण आगे के पृष्ठों पर विस्तार के प्रकाशित किया गया है।

८. पाठशाला स्तर पर कविता पाठ का आयोजन - प्रत्येक हिन्दी पाठशाला जनवरी माह में अपनी-अपनी पाठशाला में कविता-पाठ का आयोजन करती है जिसमें उस पाठशाला के सभी विद्यार्थियों को भाग लेने का अवसर मिलता है।

९. कर्मभूमि की तैयारी - जनवरी और फरवरी माह में सभी स्तरों के शिक्षक कर्मभूमि में भेजने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रोजेक्ट विद्यार्थियों को देते हैं, जिनके माध्यम से विद्यार्थी हिन्दी के साथ-साथ भारतीय संस्कृति तथा इतिहास का ज्ञान भी प्राप्त करते हैं।

१०. अंतरशालेय कविता पाठ - इस प्रतियोगिता का आयोजन प्रति वर्ष फरवरी माह के अंत में किया जाता है। इस कविता पाठ में हिन्दी यू. एस. ए. की २० पाठशालाओं के विजेता विद्यार्थी स्तरानुसार प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। यह प्रतियोगिता २ दिन चलती है तथा इसमें लगभग ४५० विद्यार्थी ९ स्तरों में भाग लेते हैं। प्रत्येक स्तर से १० सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को चुन कर महोत्सव में होने वाले अंतिम चरण की प्रतियोगिता के लिए भेजा जाता है।

११. युवा कार्यकर्ताओं का अभिनंदन - इसका विस्तृत विवरण पेज १० पर देखें।

१२. महोत्सव तथा परीक्षा की तैयारी - मार्च और अप्रैल माह में सभी पाठशालाओं के विभिन्न स्तरों में महोत्सव की प्रतियोगिताओं की तैयारी तथा परीक्षा के लिए पाठ्यक्रम का दोहराव प्रारम्भ हो जाता है।

१३. मौखिक परीक्षा - मार्च के अंतिम सप्ताह से लेकर अप्रैल के अंतिम सप्ताह तक सभी पाठशालाओं में मौखिक परीक्षा का आयोजन होता है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की हिन्दी समझने, बोलने तथा पढ़ने की क्षमता को जाना जाता है। यह व्यक्तिगत परीक्षा होती है।

१४. हिन्दी महोत्सव - यह एक ऐसा सांस्कृतिक कार्यक्रम और मेला है जिसमें हिन्दी और हिंदुस्तान को प्यार करने वाले मिलते हैं तथा विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी अपने हिन्दी ज्ञान तथा अन्य कलाओं जैसे नृत्य, अभिनय, वेषभूषा, संगीत आदि का प्रदर्शन करते हुए अपने आपको भारत से जोड़ते हैं। महोत्सव में विभिन्न सामूहिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है, जैसे लोकनृत्य प्रतियोगिता, विभिन्न त्यौहार पर नृत्य, अभिनय गीत प्रतियोगिता, देशभक्ति गीत प्रतियोगिता, भजन प्रतियोगिता, नाटक प्रतियोगिता, हिन्दी ज्ञान तथा व्याकरण जेओपर्डी प्रतियोगिता तथा फ़ाइनल कविता पाठ प्रतियोगिता। इसी दिन हिन्दी यू. एस. ए. से स्नातक होने वाले विद्यार्थियों का दीक्षांत समारोह भी होता है। इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए भारत से विशेष अतिथि भी आते रहते हैं।

१५. वार्षिक परीक्षा - जून के प्रथम सप्ताह में लिखित वार्षिक परीक्षा का आयोजन सभी पाठशालाओं में किया जाता है तथा जून के मध्य में सभी विद्यार्थियों के प्रगति-पत्र तथा प्रमाण-पत्र देकर सत्र का अंत किया जाता है।

अब तो आप जान ही गए होंगे कि यदि किसी ने हिन्दी यू. एस. ए. को संस्थान कहा तो गलत नहीं कहा। हिन्दी यू. एस. ए. अपने सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करता है तथा उन्हें कोटिश धन्यवाद देता है। उनके अथक प्रयास से जो हिन्दी की पवित्र धारा न्यू जर्सी और अन्य राज्यों में बह रही है वह प्रशंसनीय है।

क्या आप भी अपने बच्चों को भारतीय बनाना चाहते हैं?

क्या आप भी अपने बच्चों को हिन्दी सिखाना चाहते हैं?

क्या आप भी हिन्दी की सेवा कर आत्म संतोष चाहते हैं?

यदि हाँ तो हमारी वेबसाइट **www.hindiusa.org** पर जाएँ या हमें **1-877-HINDIUSA** पर फोन करें।

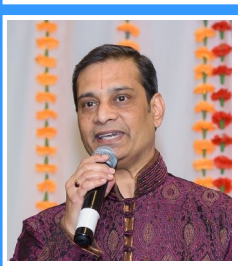

युवा स्वयंसेवक अभिनन्दन समारोह

माणक काबरा

हिंदी यू.एस.ए. संस्था पिछले १७ वर्षों से न्यू जर्सी में हिंदी सिखाने में कार्यरत है। संस्था की करीब २२ पाठशालाओं से लगभग ६०० से भी ज्यादा विद्यार्थी स्नातक की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। आज उनमे से १३३ छात्र-छात्राएं इन पाठशालाओं में युवा स्वयंसेवक के रूप में हिंदी सिखा रहे हैं। इससे इनको हिंदी से जुड़े रहने और सीखी हुई भाषा को और लोगों तक पहुंचाने में सहायता मिलती है।

इस वर्ष के अभिनन्दन समारोह का आयोजन प्लेंसबोरो में मार्च २४ को रखा गया, जहाँ ९० से ज्यादा युवा स्वयंसेवक के साथ पाठशाला संचालक एवं कुछ अभिभावक भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का आरम्भ गायत्री मंत्र से हुआ और बाद में श्री देवेंद्रजी और श्रीमती रचिता सिंह जी ने सभी को सम्बोधित करते हुए कुछ महत्वपूर्ण बातें बताई। फिर पाठशाला संचालकों से अपनी-अपनी पाठशाला के युवा स्वयंसेवकों के कार्यों की प्रशंसा की और उनके बारे में अच्छी-अच्छी बातें बताई। सभी युवा स्वयंसेवकों ने भी अपने-अपने अनुभव साझा किये और कुछ सुझाव भी दिए। कुछ ने अपने अनुभव बताये कि उन्हें आगे की पढाई में हिंदी सीखने का लाभ कैसे मिल रहा है और वे इसको और भी लोगों तक कैसे पहुँचा रहे हैं। इसके साथ ही कुछ युवा स्वयंसेवकों ने अपना दूसरा पक्ष भी दिखाया और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। हमने देखा है कि हमारे युवा स्वयंसेवक केवल सिखाते ही नहीं, बल्कि अपने अनुभवों का प्रयोग भी करते है जैसे कि हर्षल नवाड़े ने एक मोबाइल ऐप बनाया और नितान्ता गरग ने एवोन कन्नेक्टिकट पाठशाला शुरु करने में सहयोग किया। इसके अतिरिक्त संजना विट्ठल, प्लेंसबोरो पाठशाला, ने चैस चैंपियनशिप में अमरीका का प्रतिनिधित्व किया और पहला स्थान प्राप्त किया। इसे सुनकर क्राउन ऑफ़ इंडिया, जहाँ यह कार्यक्रम हो रहा था, के मालिक ने १०० डॉलर का उपहार दिया। सभी युवा स्वयंसेवकों को एक साथ देख कर ऐसा अनुभव हुआ कि हमारी अगली पीढ़ी अब हिंदी की मशाल आगे बढ़ने के लिए तैयार हो रही है। सभी के सहयोग से यह कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा और हम आशा करते हैं कि आने वाले वर्षों में इसमें ज्यादा से ज्यादा युवाओं की भागीदारी होगी और वे इसे सफल बनाएंगे।

संजना

नितान्ता

हर्षल

हिन्दी

हिन्दी
USA

हिन्दी
USA

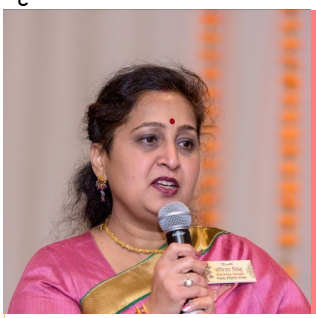

रचिता सिंह

परिवार की परम्परा - हमारा गौरव

भारतीय संस्कृति परिवार पर आधारित संस्कृति है। भारतीय सभ्यता के अनुसार यह मान्यता है कि परिवार जितना सुदृढ़ और सुसंस्कृत होगा, समाज भी उतना ही मज़बूत और सभ्य होगा, और समाज जितना संस्कृति और मूल्यों पर आधारित होगा वह देश उतना ही उन्नतिशील और गौरवशाली होगा।

यदि हम भारत के इतिहास के पन्ने पलटें तो पाएंगे कि प्राचीन भारत में परिवार की परंपरा बहुत सुदृढ़ थी। परिवार चाहे राजवंश का हो, गुरुवंश का हो या सेवक वंश का, सभी में अपने परिवार, समाज और राष्ट्र की प्रतिष्ठा के लिए मर मिटने का गुण देखने को मिलता था। पूर्वकाल में प्रत्येक व्यक्ति का परिचय उसके माता-पिता तथा दादा-दादी के नाम से होता था। इस बात से यह पता चलता है कि उस समय एक युवा अपने माता-पिता तथा अपने परिवार पर कितना गर्व करता था। उस समय परिवार के बाल और युवा सदस्य अपने माता-पिता द्वारा दी जाने वाली शिक्षा और परंपरागत मूल्यों को ग्रहण करने में किसी प्रकार का विद्रोह या अवज्ञा नहीं करते थे, और उसे सहर्ष अपनाकर अपनी आने वाली पीढ़ी को स्थानांतरित करते थे। यह सब कुछ इतना स्वाभाविक होता था कि टकराव की स्थिति बहुत कम ही देखने को मिलती थी। समय बदलने के साथ साथ हम इतना बदल गए कि एक ही देश के अन्दर कई देश बन गए। समाज में संघर्ष और अराजकता व्याप्त हो गयी और इस आग में कई परिवारों का प्रेम, गौरव, शांति और एक दूसरे के प्रति समर्पण कहीं धुआं बनकर उड़ गए। परिवार टूटने लगे, एक दूसरे से दूर रहकर परिवार के सदस्य खुश रहने लगे। स्वार्थ और ईर्ष्या ये दोनों राक्षस हर परिवार में अपना स्थान बनाने में सफल हो गए। क्या आपने कभी सोचा कि ऐसा क्यों हुआ, या ऐसा क्यों हो रहा है? और हम इसे कैसे रोक सकते हैं? यहाँ पर हम केवल अमेरिका में रहने वाले परिवारों के सन्दर्भ में बात करें तो ज्यादा उचित होगा। अमेरिका में रहने वाले परिवारों ने परिवार की इस टूटन को समय का तकाजा मानकर स्वीकार कर लिया है। इसका एक कारण यह है कि जब हम अपने आस-पास के परिवारों में यही सब होते देखते हैं तो हमें यह सभी सामान्य ही लगता है। मेरे विचार से प्रत्येक परिवार के माता-पिता उस परिवार के संरक्षक और मार्गदर्शक होते हैं। परिवार के सदस्यों के बीच में प्रेम, समर्पण, जिम्मेदारी तथा भागीदारी की भावना को जगाना और उसे आगे बढ़ाना इन्ही का काम होता है। बच्चे अपने माता-पिता में गुरु का रूप तभी देख पाते हैं जब माता-पिता का व्यवहार और आचरण उच्चकोटि का होता है। उनकी कथनी और करनी में अंतर नहीं होता, जब उनके पास बच्चों के हर प्रश्न का सुन्दर और सही जवाब होता है। यहाँ पर मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि प्रत्येक माता-पिता को PhD या बहुत पढ़ा लिखा ही होना चाहिए। यहाँ माता-पिता और दादा-दादी के अनुभव पर आधारित जीवन जीने का ज्ञान, जीवन मूल्यों का ज्ञान, धर्म का सही ज्ञान, अपनी परम्पराओं और संस्कृति का सही ज्ञान ही एक परिवार से जोड़ता है। हम बच्चों को प्रेम करना तभी सिखा सकते हैं जब हम स्वयं निःस्वार्थ भाव से अपने बच्चों और परिवार के अन्य सदस्यों को प्रेम करें। आज वैश्वीकरण के युग में जहाँ संस्कृतियाँ और परम्पराएँ एक-दूसरे से मिल गयी हैं, जब आधुनिकता के नाम पर मूल्यों को

छोड़ना गर्व की बात हो गयी है, जहाँ शिक्षा केवल धनोपार्जन का साधन बन गयी है, वहाँ परिवार से बच्चों को जोड़े रखने की बात करना सचमुच एक कठिन कार्य हो गया है पर हमें यह याद रखना चाहिए कि यह कठिन अवश्य है पर असंभव नहीं, और हमें किसी भी मोड़ पर हिम्मत हार कर आत्मसमर्पण नहीं करना है। यदि हम जीवन की भाग-दौड़ में कुछ बातों का ध्यान रखें तो हम अमेरिका में रहते हुए भी अपने बच्चों को हिन्दू संस्कार दे सकते हैं और एक सुदृढ़ परिवार बना सकते हैं।

१. माता-पिता का आपसी प्रेम और उच्च आचरण (बात करने का तरीका, व्यवहार तथा जीवन मूल्यों का पालन करना, व्यसनों से दूर रहना, कथनी और करनी समान रखना आदि) बच्चों में उनके प्रति आदर का भाव जगाता है।

२. अक्सर माता-पिता केवल स्कूली शिक्षा को ही सर्वोपरि मानते हैं, जिससे बच्चे अपनी संस्कृति और परम्पराओं के ज्ञान से वंचित रह जाते हैं।

३. अपने धर्म का दर्शन (Philosophy) क्या है? यह समय-समय पर बच्चों को बतलाना बहुत आवश्यक है।

४. प्रतिदिन आप अपने धर्म को अपने परिवार में कैसे जीते हैं यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है। प्रतिदिन सुबह प्रार्थना करना, सूर्य नमस्कार करना, संध्या को आरती करना, कुछ श्लोकों का पाठ सिखाना, भोजन के पहले प्रार्थना करना, आदि कुछ ऐसे कार्य हैं जिनमे १० मिनट से ज्यादा समय नहीं लगता, इनमे से आप अपनी पसंद का काम प्रतिदिन नियम के लिए चुन सकते हैं। ऐसा करने से परिवार की एक परंपरा बनती है और बच्चे नियम का पालन करना सीखते हैं।

५. विदेश में रहकर अपने त्योंहारों को घरों, मंदिरों, और सभा स्थलों में मनाना केवल आवश्यक ही नहीं अपितु अतिआवश्यक है।

६. जीवन मूल्यों का ज्ञान कराना। यह काम धार्मिक ग्रंथों, कहानी की पुस्तकों, धार्मिक और ऐतिहासिक टी.वी. सीरियल या DVD के माध्यम से किया जा सकता है। महान पुरुषों की कहानियां बच्चों के चरित्र को दृढ़ बनाने में अमूल्य योगदान देती हैं।

७. जीवन में आप चाहे कितने भी व्यस्त हों प्रतिदिन अपने परिवार के साथ कम से कम १ घंटे का मूल्यवान समय (quality time) अवश्य व्यतीत करें।

८. अपने बच्चों के लिए कुछ सपने जरूर देखें पर उन सपनों को साकार करने के लिए स्वार्थी न बनें। बच्चे की असफलता पर न तो आप निराश हों और न ही उसे निराश होने दें, उसे डांटने और कोसने के बजाय और अधिक प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चों के अच्छा करने पर शाबाशी के साथ साथ उन्हें कुछ उपहार अवश्य दें। ये उपहार उनकी यादों में हमेशा के लिए रहेगा और उन्हें आपसे दूर नहीं होने देगा।

९. सभा और मित्रों में अपनी पत्नी और बच्चों की प्रशंसा करना न भूलें पर अति प्रशंसा से बचें। इससे परिवार के प्रति गर्व की भावना और एक दूसरे के प्रति सम्मान बढेगा। और अंत में जो बात बताने जा रही हूँ इसका पालन अधिकांश परिवार पहले से ही बहुतायत में करते हैं।

१०. अपने परिवार के साथ साल में कमसे कम दो बार छुट्टियों (vacation) पर घूमने अवश्य जाएँ तथा अपने परिवार की फोटो हर अवसर पर खींचने का मौका कभी न चूकें।

अपनी मधुर यादों को और बच्चों द्वारा बनाये गए चित्रों या अन्य कलाकृतियों को पूरे घर में अवश्य सजाएँ। बच्चों द्वारा जीते पुरस्कारों को गर्व के साथ केवल उनके कमरे में ही नहीं पूरे घर में सजाएँ।

ये सब बातें आपके घर को दुनियां का सबसे प्यारा घर और आपके परिवार को एक बहुत अच्छा परिवार बना देंगी।

हिंदी यू.एस.ए. भारत-यात्रा

भारत की विशाल सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर से बच्चों का प्रत्यक्ष परिचय

कर्मभूमि पढ़ने वाले सभी पाठकों को सरिता नेमाणी का नमस्ते! इस साल हिन्दी यू.एस.ए. ने चौदह प्रतिभाशाली बच्चों का भारत यात्रा के लिए चयन किया था। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे उनके साथ संरक्षिका के रूप में जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ। श्री सुनील दुबे जी भी हमारे साथ संरक्षक के रूप थे। इस यात्रा के अनुभव को शब्दों में कैद करना थोड़ा कठिन है, फिर भी मैंने यहाँ इस लेख में इन्हें शब्दों में पिरोने का प्रयास किया है। आशा है कि आपको पंसद आएगी।

मुंबई, एक फ़िल्मी नगरी

हमारी यात्रा न्यु यार्क के विमानघर (एयरपोर्ट) से दिनांक दिसंबर १८, २०१७ की प्रात:काल से शुरू हुई। सभी बच्चों की आँखों में एक अनोखा सा उत्साह झलक रहा था। सभी अभिभावक बच्चों को अलविदा कह रहे थे। हमने अपनी यात्रा का आरम्भ किया। लगभग पंद्रह घंटे की यात्रा के बाद हम मुंबई के विमानघर पहुँचे। वहाँ हमें लेने के लिए श्री कल्याण गिरी जी (उभरते युवा लेखक), श्री आकाशादित्य लामा जी (पटकथा लेखक एवं फिल्म निर्देशक) एवं श्री प्रवीण मित्तल जी (स्थानीय व्यापारी) आये थे। इन स्थानीय स्वयंसेवकों के साथ श्री बाबा सत्यनारायण मौर्या जी भी आये। उनसे मिलकर बच्चों का उत्साह और भी दुगुना हो गया था। सभी बच्चों ने बस में बैठते ही हमारी हिंदी पाठशाला की "धन्य धन्य हो ईश्वर..." प्रार्थना की। यही नहीं, हर रोज की शुरुआत बच्चे हमेशा प्रार्थना से करते थे। रात का खाना खाने के बाद सब बच्चों ने होटल के कांफ्रेंस रूम में अपने सांस्कृतिक कार्यक्रम का अभ्यास किया।

अगले दिन हम व्हिस्टलिंग वुड्स इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ फिल्म देखने गए। स्वंय सुभाष घई जी ने हमसे बहुत सारी बातें की। हर बच्चे को एक एक प्रश्न पूछने का अवसर प्राप्त

हुआ। उन्होंने अपनी एक डाक्यूमेंट्री फिल्म की शूटिंग के लिए भी हमें आमंत्रित किया। बच्चों को उनके साथ शूटिंग देखकर बहुत अच्छा लगा। फिर हमें उस महाविद्यालय के दो कार्यकर्ताओं ने उस कैंपस का निर्देशित दौरा करवाया। बच्चों के सभी प्रश्नो के उत्तर दिए और फिल्मों के बारे में कई जानकारियाँ भी दीं। फिर हमने फिल्म-सिटी का दौरा किया। बच्चों को कई

टीवी सीरियल के सेट्स भी देखने को मिले। उसके बाद हम मुकेश खन्ना जी के दफ्तर में उनसे मिलने गए। उन्होंने बच्चों के साथ ढेर सारी बाते की। बच्चों को मुकेश जी, जिन्होंने भारत के पहले सुपरहीरो "शक्तिमान" का किरदार निभाया था, से मिलकर बहुत अच्छा लग रहा था। होटल जाते समय बस में बच्चे आपस में कह रहे थे की आज उन्हें भारत के "सुपरमैन" से मिलने का अवसर मिला।

अगले दिन हम गेटवे ऑफ़ इंडिया गए, फिर एक जहाज से एलिफेंटा की गुफाओं के लिए रवाना हो

गए। जहाज में पंक्षियो के झुण्ड को देख कर बहुत अच्छा लग रहा था। एलिफेंटा में इतनी सारी प्राचीन मूर्तियों को देख कर बच्चे बड़े की प्रफुल्लित हो गए। बच्चों को पुरानी तोपों को देखने में और उनके इतिहास को जानकर भी मजा आया। तोपों के पास जाते समय रास्ते में बंदरो को देखकर सभी एक अलग ही अनुभव महसूस करे थे। वापसी में बच्चों ने मरीन ड्राइव्स पर जो समुद्र के चारो ओर रोशनी देखी, तब उन्होंने जाना कि क्यों इसे रानी का हार (queen's necklace) कहते हैं।

अमृतसर, देशप्रेमियों का नगर

दिसंबर २२ की सुबह को हम दिल्ली के लिए हवाई अड्डे पर पहुँचे। यहाँ हमें कप्तान नीरज जी लेने आये थे। भारतीय पाठशालाएँ छुट्टियों की तैयारी में थीं और बच्चों को वहाँ की पाठशाला का अनुभव करवाना था। इसी उद्देश्य से हम विकासपुरी के के. आर. मंगलम वर्ल्ड स्कूल पहुँचे। पाठशाला में हमारा स्वागत माथे पर तिलक, गले में मालायें और उस पाठशाला के विद्यार्थियों द्वारा बजाये गए संगीत के साथ हुआ। उनके द्वारा आयोजित अभिनन्दन समारोह

सराहने लायक था। हमारे यात्रियों ने भी बहुत सुंदर प्रस्तुतियाँ दीं। बच्चों ने पाठशाला का भ्रमण किया और कई मित्र भी बनाये। रात का खाना खाने के बाद बच्चों ने अपने अपने बैग अगली यात्रा के लिए तैयार किये और सो गए।

अगली सुबह शीघ्र उठ कर हम रेलगाड़ी से यात्रा कर अमृतसर पहुँचे। यहाँ हम सबसे पहले अटारी

-बाघा बॉर्डर (सीमा) पर पहुँचे। सिपाहियों की परेड एक अविस्मरणीय रोंगटे खड़े कर देने वाली प्रदर्शनी थी। उस माहौल में जो जोश था वह शब्दों द्वारा बयान नहीं किया जा सकता, उसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है। मुझे बहुत गर्व महसूस हुआ जब मुझे अपने हाथ में तिरंगा लेकर चलने का मौका मिला।

अगली सुबह सर्वप्रथम हम दुर्गयाना हिन्दू मंदिर गए, तत्पश्चात स्वर्ण मंदिर गए। भीड़ की वजह से हमें अंदर जाने में थोड़ी तकलीफ जरुर हुई, मगर मंदिर देखने के बाद हम सब उस तकलीफ को भूल गए। वहाँ से हम जलियाँवाला बाग़ गए, जहाँ बच्चों ने दो मिनट का मौन रख कर शहीदों को सम्मान दिया।

जयपुर, एक गुलाबी शहर

हम रात्रि में रेलगाड़ी द्वारा पहुँचे अपने अगले पड़ाव, जयपुर। स्टेशन पर हमें लेने के लिए स्थानीय स्वयंसेवक श्री गौरव पारसरामपुरिया जी आये थे। बस ने हमें इस गुलाबी शहर का दर्शन करवाया। रास्ते में हमने हवा-महल भी देखा। फिर हम एक संग्रहालय में गए जहाँ बच्चों ने जयपुर के इतिहास के बारे में विस्तार से जाना। संग्रहालय से हमने बिरला मंदिर और फिर चोखी ढाणी देखा। यहाँ बच्चों को भारत के गाँव और संस्कृति, राजस्थान के पहनावे, रहने का तरीका, खाना-पीना, इत्यादि का अनुभव करने को मिला। बच्चों ने ऊँट की सवारी भी की। एक जादूगर की प्रस्तुति ने सबको विचंभित कर दिया। बच्चों को लोक नृत्य देखने और खरीददारी करने में भी मजा आया।

प्रात:काल का नाश्ता करके हम जल महल देखने गए। वहाँ के दृश्यों को कैमरे में कैद करके हम आगे बढ़े आमेर के किले की ओर। किले के ऊपर जाने के लिए हमने हाथी की सवारी की। किले को देखकर बच्चों को भारत के कुछ और ऐतिहासिक पन्नों की जानकारी मिली। किले के नीचे जब हमने सुरंग देखी तो बच्चों को संभालना मुश्किल हो रहा था। वे अधिक जानकारी पाने के लिए बहुत व्याकुल हो गए थे। बच्चों का उत्साह सचमुच सराहनीय है। वहाँ की मशहूर चाट की दुकान एल.एम. बी. में दोपहर का खाना खाने के बाद हम सीधे पहुँचे जंतर मंतर। यहाँ भारत की ज्योतिषशास्त्र एवं खगोलशास्त्र के ज्ञान को देख कर बच्चे बहुत प्रभावित हुए। उनकी जिज्ञासा का अनुमान लगाना कठिन था। थोड़ी खरीददारी के बाद हम गौरव जी के घर गए। उन्होंने हमारा बहुत आदर सत्कार किया। रात का स्वादिष्ट खाना खाने के बाद हम सबको एक लिफाफा और एक फोटोफ्रेम तोहफे के रूप में दी। इस घटना से "अतिथि देवो भव:" यह क्यों कहते है बच्चों को बखूबी समझ आ गया था। होटल पहुंच कर बच्चों ने अपने-अपने बैग संभाले और सो गये अगले दिन का सफर शुरू करने के लिए।

बनारस, एक धार्मिक स्थल

सभी बच्चों को जल्दी सुबह तैयार देख कर काफी ख़ुशी मिलती थी कि बच्चों में नई जगह और नई बातें सीखने के लिए कितना उत्साह और जिज्ञासा है। पहले हमने रेलगाड़ी से दिल्ली का सफ़र तय किया। वहाँ हमें नीरज जी मिले। उनके पास हमने अपनी यात्रा का अतिरिक्त सामान रखा। बच्चे नीरज जी से वार्तालाप करके बड़े प्रसन्न नजर आ रहे थे। फिर हवाई-जहाज से हम सीधे बनारस पहुंचे। यहाँ हमें लेने के लिए श्री गुंजन शुक्ल जी (अभिनेता और सहायक निदेशक), श्री सुमित श्रीवास्तवा जी (उभरते रंगमंच निर्देशक) एवं श्री भास्कर चेतिया जी आये थे। इन तीनों स्थानीय स्वयंसेवकों ने पूरी बनारस की यात्रा में हमारी बहुत मदद की। गुंजन जी ने बच्चों को महाकवि भास जी के कर्णभरम नाट्य का संस्कृत में एक संवाद भी याद करवाया।

एक तरफ बच्चों ने बाटी-चोखा में पारंपरिक भोजन का आनंद लिया तो दूसरी तरफ जैपुरिआ पाठशाला में क्रिकेट खेल कर मजे लुप्त किये। गंगा नदी में नाव पर बैठ कर जहाँ गंगा के घाट पर हो रही आरती का सुख प्राप्त किया, वहीं अपनी मम्मी के लिए बनारसी साडियां खरीदकर इतरा रहे थे। दिन में बच्चे सारनाथ के मंदिर में गए तो वहीं रात्रि में उन्हें काशी विश्वनाथ मंदिर देखने का मौका मिला। बनारस में बच्चों को गुरुकुल की जीवन शैली देखने मिली, वहीं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रोफेसर माया शंकर पांडेय जी एवं प्रोफेसर राकेश पांडेय जी से पंडित श्री मदन मोहन मालवीय जी के विषय में जानकारी भी हासिल हुई। बच्चों को वाराणसी के दैनिक जागरण के पत्रकार से साक्षात्कार करने का अनुभव भी मिला।

भारतीय मूल के | काशी भ्रमण के बाद छात्र-छात्राओं का दल शुक्रवार को आगरा के लिए रवाना

अमेरिकी विद्यार्थियों को भा गई काशी

जागरण संवाददाता, वाराणसी : हिंदी को बढ़ावा देने के लिए भारतीय मूल के अमेरिकी छात्रों का 14 सदस्य दल गुरुवार व शुक्रवार को काशी को निहारा। दो दिन के प्रवास के दौरान दल में शामिल 12 से 16 साल तक के बच्चे गंगा आरती और घाटों को देख भाव-विभोर हो गए। किसी ने अपनी मम्मी के लिए बनारसी साड़ियां खरीदीं तो कुछ ने दुपट्टे लिए। यह दल 19 दिसंबर को भारत आया और तीन जनवरी को अमेरिका लौट जाएगा।

दल में शामिल लोग : इस भ्रमण दल में जॉर्जियन कोर्ट यूनिवर्सिटी की प्रो. सरिता नेमानी, आइटी प्रोजेक्ट मैनेजर सुनील दुबे संरक्षक हैं। इनके अलावा सिया चतुर्वेदी, चाहत कटोच, देव द्विवेदी, ध्रुव गुप्ता, ईशा श्रीवास्तव, जास्मीन जुल्का, कौस्तुभ तिवारी, मानसी दुबे, नलिनी जैन, निखिल कुंडु, प्रणव उदेशी, सार्थ चतुर्वेदी, सार्थक उप्पल, वसंत भारद्वाज शामिल हैं। इन विद्यार्थियों ने मुंबई, अमृतसर, जयपुर और वाराणसी का भ्रमण किया। इसके बाद यह दल आगरा, मथुरा, वृंदावन और नई दिल्ली पहुंचेगा। भारत में दल का मार्ग दर्शन भास्कर चेतिया और काशी में सुमित श्रीवास्तव ने किया।

प्रो. नेमानी ने बताया कि हिंदी-यूएसए संस्था की शुरुआत वर्ष 2001 में अमेरिका के न्यूजर्सी में रहने वाले देवेंद्र सिंह व उनके दोस्तों ने की। शुरुआत में उन्होंने अपने घर के बेसमेंट में बच्चों को हिंदी पढ़ाना शुरू किया। वर्तमान में अमेरिका के चार राज्यों में 24 पाठशाला खोली गई हैं, जिसमें करीब दो हजार बच्चे हिंदी पढ़ना, लिखना और बोलना सीख रहे हैं। बताया कि इसका उद्देश्य विश्व भर में हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति का प्रचार करना है। सिया ने बताया कि उसको सबसे अच्छा अमृतसर और अटारी बार्डर लगा। साथ ही काशी में सिया को गंगा आरती भा गई। कहा मैं अपने मम्मी-पापा को भी काशी भेजूंगी। वहीं वसंत ने कहा वह बार-बार काशी आना चाहेंगे। देव ने कहा कि वह भले ही अमेरिका रहते हैं लेकिन उनका दिल भारत में ही बसता है। वहीं ईशा श्रीवास्तव ने बताया कि मैं वाराणसी के बारे में सुनी थी, लेकिन पहली बार देखने का अवसर मिला। विद्यार्थी के दल में सिर्फ ईशा को पता था कि पीएम मोदी वाराणसी के ही सांसद हैं। बच्चों ने बीएचयू के मालवीय मूल्य अनुशीलन केंद्र में संवाद कार्यक्रम में भाग लिया।

- तीन जनवरी तक विभिन्न शहरों की जानेंगे संस्कृति व सभ्यता
- बनारस में गंगा आरती व घाटों की छटा देख हुए भाव विभोर

भारतीय मूल के अमेरिकी छात्रों का दल बीएचयू में • जागरण

आगरा, विश्व के सात अजूबों में से एक

रात्रि में हमने बनारस से आगरा का सफर बस से किया। रास्ते में धुंध की वजह से हम अपेक्षित समय से थोड़ा विलंबित हो गए थे। बच्चों ने ताज महल और उसके जुड़े हुए इतिहास के बारे में सीखा।

मथुरा/वृन्दावन, मुरलीधर धाम

आगरा से हम वृन्दावन के वात्सल्य गृह पहुंचे जहाँ हमें दीदी माँ का प्रवचन सुनने का सुअवसर मिला। दोपहर के भोजन के पश्चात हमें दीदी माँ से वार्तालाप करने को मिला। दीदी माँ बच्चों के कविता

पाठ से बड़ी प्रभावित हुईं। हमने उस आश्रम का एक भ्रमण किया। बच्चों ने जब वहाँ की सारी व्यवस्था को देखा तो सारे बच्चें बड़े ही भावुक हो उठे, उन्हें बहुत अच्छा लगा कि किस प्रकार समाज मिलकर निस्वार्थ भाव से एक दूसरे की मदद करता है। उसके बाद हम वहाँ स्तिथ शहीदों से संबधित एक संग्रहालय में गए। अंतत: हमने रात्रि मथुरा में बिताई।

दिल्ली, नगरी दिलवालों की

नए साल की शुरुवात हमनें हमारी यात्रा के आखरी पड़ाव दिल्ली से की। सुबह ही हम राष्ट्रपति भवन गए और हमें भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री राम कोविंद जी के साथ हाथ मिलाने का मौका मिला। हमें संसद भवन जाकर भारत के संसदीय कार्यक्रम के बारे में जानने को मिला, यही नहीं, भारत के सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्य मंत्री श्री विजय संपाला जी ने शाम का चाय नाश्ता करने के लिए हमें अपने निवास स्थान पर आमंत्रित किया। बच्चों को आकाशवाणी भवन जाने का अवसर मिला। यही नहीं, उनका साक्षात्कार आकाशवाणी में घोषित भी हुआ। ज़ी टीवी में बच्चों के कार्यक्रम एवं उनके अनुभव का प्रसारण किया गया। बच्चे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के रंगमंच पर अपनी प्रतिभा दिखा कर बहुत वाहवाही के हकदार बने। अक्षरधाम की सब प्रदर्शनियाँ देख कर बच्चों को भारत की कला, संस्कृति, विज्ञान एवं आध्यात्मिकता के बारे में काफी कुछ सीखने को मिला।

जनवरी ४, २०१८ को हम सब घर वापस आ गए। आपसी सहयोग और स्नेह के साथ समय कैसे बीता हमें पता ही नहीं चला। मुझे बहुत गर्व महसूस होता है कि इतने प्रतिभाशाली बच्चों के साथ यात्रा करने का अवसर मिला। अब बच्चों के लिए भारत केवल एक उनकी नानी की बगिया ही नहीं, लेकिन उनको भारत को एक नए अंदाज और विभिन्न नजरिये से देखने और समझने का मौका मिला। मैं तहे दिल से हिंदी यू. एस. ए. की आभारी हूँ कि मुझे भारत यात्रा के माध्यम से एक नए परिवार का हिस्सा बनने का अवसर प्रदान किया।

जयपुर और वृंदावन अनुभव

रिया चतुर्वेदी हिंदी यू.एस.ए. की चेरी हिल पाठशाला की स्नातक हैं। स्नातकोत्तर वे इसी पाठशाला में सहायक शिक्षिका के रूप में स्वयंसेवक हैं। सामान्य पाठशाला में वे नवीं कक्षा में पढ़ती हैं। रिया चौदह वर्ष की हैं। वे भारतीय नृत्य विधा में रुचि रखती हैं।

जयपुर एक बहुत ही सुंदर शहर है जहाँ हमने बहुत सारी ऐतिहासिक जगह देखीं। जयपुर में हम सब ने बहुत मस्ती की और साथ में बहुत कुछ सीखा। जयपुर के पुराने महल और किलों को देख कर हमें पुराने समय का एक अनोखा दृश्य मिला। उसके अलावा हमने यह भी देखा कि लोग अभी भी इन पुराने और एंटीक इमारतों का कैसे आदर करते हैं। इन जगहों में से एक जगह आमेर फ़ोर्ट है। यहाँ पर हमने आमेर फ़ोर्ट की आंतरिक और बाहरी सुंदरता देखी। यहाँ पर हमने हाथी की सवारी का अनुभव भी लिया। वहाँ पर हमने थोड़े राजस्थानी आभूषण भी ख़रीदे। हमें यह पुरानी इमारतें बहुत अच्छी और अद्वितीय लगीं।

राजस्थान सिर्फ़ अपनी पुरानी इमारतों, महलों ओर फ़ोर्ट के लिए ही नहीं जाना जाता है। इस प्रदेश में बहुत ही सुंदर कपड़े और आभूषण भी मिलते है। हम दो-तीन बार शोपिंग गए और हर बार हम सब ने कुछ न कुछ लिया, जैसे कि स्कर्ट्स, हार, झूमके, दुपट्टा, वगैरह। राजस्थान में खाना भी बहुत अच्छा मिलता है। हमने ख़ूब तरह-तरह का राजस्थानी खाना खाया। एक बार हमें घर का खाना भी खाने को मिला। गौरव अंकल, जो जयपुर में ही रहते है, हम सब को अपने घर ले गए और हमें घर का बना ताजा खाना खिलाया। जयपुर में हम सब को ख़ूब मज़ा आया और अगर मुझे फिर से जाने का मौक़ा मिला तो मैं ज़रूर जाऊँगी!

आगरा को घूमने के बाद हम क़रीब ४५ मिनट दूर एक गाड़ी से वृंदावन गए। पहुँचते ही हम एक जगह गए जिसका नाम वात्सल्य गृह है। यहाँ पर दीदी माँ, एक समाज सेविका, अपने विचार का प्रचार करती हैं और बहुत सारी औरतों और बच्चों की देख भाल भी करती है। दीदी माँ मानती है कि वात्सल्य गृह उनके भक्तों और उपदेश के लिए नहीं बना है। यह गृह एक ख़ुश और सुरक्षित घर देने के लिए बना है। यहाँ पर बहुत सारी औरतें और बच्चे रहते हैं, जिनके पास कोई घर नहीं हैं और जिन्हें अकेले छोड़ दिया गया है। हमें यह देख कर बहुत ख़ुशी मिली क्योंकि वात्सल्य गृह ने हमें दिखाया कि भले ही कोई अकेला रह गया है, वह असल में अकेला नहीं है। इस गृह को घूमकर और महान समाज सेवक, दीदी माँ, से मिलकर हम सब भाव विभोर हो गए। इसके बाद हम मथुरा के लिए चल पड़े। यह यात्रा हमने गाड़ी से की। हमने मथुरा में नए साल की रात गुज़ारी। ९:३० बजे हमने थोड़ा बहुत जश्न मनाया, लेकिन फिर हम जल्दी से सो गए। वृंदावन में हमने बहुत सारी चीज़ सीखने को मिली और वात्सल्य गृह को देखने के बाद हम सब के दिल में ख़ुशी भर गयी थी!

बनारस

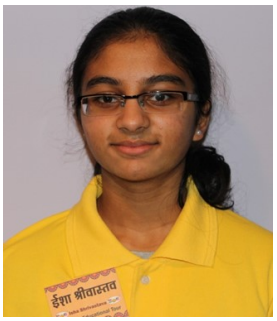

ईशा श्रीवास्तव हिंदी यू. एस. ए. की साउथ ब्रुन्सविक पाठशाला में उच्च स्तर-२ कक्षा की छात्रा हैं। सामान्य पाठशाला में वे सातवीं कक्षा में पढ़ती हैं। ईशा बारह वर्ष की हैं। वे बाँसुरी अच्छी बजाती हैं। उन्हें कविता पाठ में भी बहुत रुचि है।

हमारी भारत यात्रा का पहला पड़ाव मुंबई था। न्यू जर्सी से मुंबई तक की पंद्रह घंटे की लम्बी हवाई यात्रा के बाद हम सभी थके हुए थे। परंतु हम सब इतने उत्साहित थे कि देर रात तक अपने टैलेंट शो की तैयारी करते रहे। अगले दिन हम व्हिस्लिंग वुड्स और फ़िल्म सिटी घूमने गए। वहाँ हमने सुभाष घई जी और मुकेश खन्ना जी से मुलाक़ात की। दोनों ही हमारे हिंदी के वार्तालाप से बहुत प्रभावित हुए। तीसरे दिन हम गेट वे आफ इंडिया से जहाज़ लेकर एलीफैंटा टापू गए। पूरी यात्रा में हमको बहुत आनंद आया। हमारी लम्बी हवाई यात्रा की थकान अब पूर्णतः समाप्त हो चुकी थी।

दिल्ली से बनारस का सफ़र हमने हवाई जहाज़ से पूरा किया। हमको बनारस दूसरे शहरों की अपेक्षा साफ़ लगा, परंतु प्रदूषित हवा के कारण हमको मास्क का उपयोग करना पड़ा। रात को हमने शुद्ध बनारसी खाने का आनंद लिया। हमको मिट्टी के बरतनों और पत्तों पर भोजन परोसा गया। यह मेरे लिए एक अलग तरह का अनुभव था।

बनारस में दूसरे दिन हम सारनाथ, जयपुरिया पाठशाला, गंगा आरती, और काशी विश्वनाथ के मंदिर गये। सारनाथ में हम कई बुद्ध मन्दिर गए थे। यहाँ भगवान बुद्ध ने अपने शिष्यों को धर्म की शिक्षा दी थी। इसीलिए इस स्थान को बुद्ध धर्म का मुख्य तीर्थ स्थल माना गया है।

दोपहर में हम जयपुरिया पाठशाला पहुँचे। हमारा स्वागत बड़े जोर शोर से हुआ। यहाँ पर हमारी टीम ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। हमने इस पाठशाला के बच्चों के साथ क्रिकेट भी खेला। दोपहर के स्वादिष्ट भोजन के बाद हमें गंगा दर्शन और गंगा आरती के लिये प्रस्थान करना था।

गंगा दर्शन के लिए हमें नाव में सवार होना था। आज हमने गंगा नदी की सुंदरता का दर्शन किया। यह अनुभव मैं कभी नहीं भूल सकती। हमने नाव में गाजर का हलवा और मटर का चूड़ा खाया। अब हमें गंगा आरती को देखने के लिये दशाश्वमेध घाट जाना था। हम कुछ दूर से गंगा आरती में शामिल हुए। हजारों दीपों की रौशनी ने दूर से भी मेरा मन मोह लिया। आरती के बाद हमारी गंगा यात्रा जानकी घाट पर समाप्त हुई। इसके बाद हम बनारस नगर के दर्शन के लिए निकल पड़े।

बनारस अपनी छोटी और सकरी गलियों के लिए प्रसिद्ध है। हमने रास्ते में एक शव यात्रा को भी जाते हुए देखा। हम बनारसी साड़ी ख़रीदने के लिए एक दुकान पर पहुँचे। कुछ समय मोल भाव करने के बाद मैंने अपनी माँ के लिए एक सुनहरी और बैंगनी साड़ी ख़रीदी। टीम के सारे बच्चों ने भी साड़ियाँ ख़रीदीं। हम सभी के लिए यह एक अनोखा अनुभव था। अब तक काफ़ी रात हो चुकी थी और काशी विश्वनाथ के दर्शन करना

शेष अगले पृष्ठ पर ...

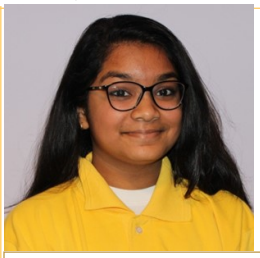

भारत भ्रमण - मेरा अनुभव

नलिनी जैन

नमस्ते! मेरा नाम नलिनी जैन है। मैं आठवीं कक्षा में पढती हूँ और मेरी पाठशाला का नाम क्रोसरोड साउथ है। यह मेरा हिंदी यू.एस.ए. में अंतिम वर्ष है क्योंकि मैं उच्चस्तर-२ की विद्यार्थी हूँ, इसलिए मुझे भारत यात्रा पर जाने का अवसर मिला। मुझे भारत यात्रा पर बहुत मजा आया और बहुत सारी जगह देखने का मौका मिला। भारत यात्रा में मुझे ताजमहल देखने को मिला जो दुनिया के सात अजूबों में से एक है। वहाँ पर बहुत भीड़ थी और हमने ताजमहल को सिर्फ बाहर से ही देखा। फिर हम एक नाटक देखने गए जिसमें शाहजहाँ के बारे में बताया गया था और हमें पता चला कि ताजमहल शाहजहाँ ने अपनी पत्नी के लिए बनवाया था। उसमे सब को बहुत मजा आया। इस यात्रा में हमें कई पाठशालाओं में जाने का मौका मिला। जहाँ पर हमने सांस्कृतिक कार्यक्रम देखें और प्रस्तुत भी किये। भारत यात्रा बहुत ही रोमांचक रही।

वृन्दावन और मथुरा में हम दीदी माँ से मिले। दीदी माँ एक आश्रम में रहती हैं और वहाँ पर बहुत सारे लोग रहते हैं। उनमे से कुछ बच्चे भी थे। हमको सभी बच्चों से मिलने का मौका मिला और वे सब बहुत प्यारे थे। हम एक खेत में गए और वहाँ हमने गायों को खाना खिलाया। मुझे बहुत डर लगा था लेकिन मजा भी बहुत आया। हमने अपने नए वर्ष की शुरुआत मथुरा से की और अगले दिन सुबह हम दिल्ली के लिए निकल गए। दिल्ली हमारी भारत यात्रा का आखरी स्थान था। मेरा भारत यात्रा का अनुभव बहुत ही यादगार रहा। मैं बहुत गौरव का अनुभव करती हूँ कि मुझे भारत यात्रा पर जाने का मौका मिला। मैंने इस यात्रा में बहुत सारे नए नए दोस्त बनाये और बहुत कुछ सीखा।

शेष था। विश्वनाथ दर्शन के साथ ही हमारी दूसरे दिन की यात्रा पूर्ण हुई!

तीसरे दिन सबसे पहले हम बनारस के एक गुरुकुल में गये। हमको यहाँ गुरुकुल का मतलब बताया गया। गुरुकुल में छात्र वैदिक मंत्रों का पाठ कर रहे थे। इसके बाद हम बनारस हिंदू विश्वविद्यालय पहुँचे। वहाँ हम दो प्राध्यापकों से मिले। उन्होंने हमको विश्वविद्यालय के इतिहास के बारे में बताया। वहां हमको पंडित मदन मोहन मालवीय जी के योगदान के बारे में भी पता चला। हमने यहाँ दोपहर का भोजन भी किया। इसके बाद हमारा एक दैनिक समाचार पत्र से साक्षात्कार हुआ। हम सब अब बहुत उत्साहित थे, क्योंकि अब हमें बस से आगरा के लिए प्रस्थान करना था।

अमृतसर

देश प्रेम, संस्कृति और इतिहास का अमूल्य मिश्रण

प्रणव उदेशी हिंदी यू. एस. ए. की पिस्कैटवे पाठशाला के स्नातक हैं। स्नातकोत्तर वे इसी पाठशाला में शिक्षक सहायक के रूप में स्वयंसेवक हैं । सामान्य पाठशाला में वे दसवीं कक्षा में पढ़ते हैं। प्रणव पन्द्रह वर्ष के हैं। वे हिन्दी कविता पाठ और खेलों में रुचि रखते हैं।

मैं भारत यात्रा मे भाग लेने के लिए बहुत ही उत्सुक था क्योंकि इस यात्रा से मुझे वह अद्भुत अनुभव मिलता जो कि मैं अपने परिवार के साथ नहीं पा सकता था। इस यात्रा ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है, जैसे कि अपनी ज़िमेदारियों को स्वयं संभालना और दूसरों की भी मदद करना। इसीलिए मैं हिन्दी यू. एस. ए. का आभारी हूँ। मेरी इस यात्रा की अनमोल यादें मेरे साथ जिंदगी भर रहेंगी।

मैं सभी जगहों में से अमृतसर से सबसे ज़्यादा प्रभावित रहा। हम अमृतसर दिल्ली से रेलगाड़ी द्वारा गए। वहाँ पहुँचते ही हमें कप्तान नीरज जी मिले जो हमे वाघा बॉर्डर दिखाने ले गए। नीरज जी ने सही कहा था कि यह अनुभव स्वयं दहलाने लायक है, और उसका विवरण शब्दो में देना मुश्किल है। जब मैने फाटक देखा तो मुझे अचम्भा हुआ कि यह एक छोटा सा दरवाजा दो देशों की सीमाओं को कैसे सुरक्षित रखता है। जल्द ही वहाँ पर परेड चालू हो गयी। दोनो देशों के सिपाहियों मे होड़ चालू हो गई कि कौन कितने ज़ोर से परेड का संगीत बजा सकता है। वहाँ जो दृश्य देखा, मैंने वैसा और कहीं नहीं देखा। आवाजें तेज होती जा रही थीं, और हम लोग भी साथ साथ में “भारत माता की जय” की पुकार लगाने लगे। अगले दिन मैंने अपनी आवाज़ खो दी।

दूसरे दिन हम स्वर्ण मंदिर देखने गये। ऐसा लगा जैसे समुंदर के बीचों बीच एक सोने का टापू हो और हज़ारो लोग मानो चीटियों जैसे उसे देखें जा रहे थे। हमें एक दूसरे सैनिक की सहयता से अलग द्वार से प्रवेश करने को मिला। हम मंदिर के सबसे ऊँचे स्तर तक जा सके जहाँ पर बिल्कुल शांति थी। यहाँ भी मुझे एक अलग ही अनुभव हुआ जो मैंने कभी पहले किसी भी मंदिर मे नहीं पाया। इसके बाद हम जलियाँवाला बाग देखने को निकल गए। जब हमने वहाँ कुआँ देखा और उसकी कहानी सुनी हमारे रौंगटे खड़े हो गये। देश के लिए और अपने आत्मसम्मान के लिए लोगों ने अपनी जान का बलिदान दे दिया था।

अमृतसर ऐसी जगह है जहाँ देश प्रेम, संस्कृति और इतिहास का अमूल्य मिश्रण है। दुनिया में ऐसी जगह बहुत कम देखने को मिलती है।

भारत भ्रमण: मेरे पसंदीदा स्थल

नमस्ते, मेरा नाम देव द्विवेदी है। मैं जॉन एडम्स मिडिल स्कूल की आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला की उच्चस्तर-२ कक्षा में पढ़ता हूँ। २०१७-२०१८ में भारत यात्रा का आयोजन किया गया था। इस यात्रा मे १४ यात्री थे और २ संरक्षक भी थे। मैं भी इस भारत यात्रा के लिये चुना गया था। भारत यात्रा के दौरान हम बहुत सारी जगह देख कर आये, जैसे कि मुम्बई, अमृतसर, जयपुर, बनारस, आगरा, वृन्दावन, मथुरा, और दिल्ली। पर जो दो जगह मुझे बहुत अच्छी लगी थी, वे हैं अमृतसर और बनारस।

जब हम अमृतसर से रेलगाड़ी द्वारा अटारी स्टेशन पहुँचे, तब वहां से हम सीधा बी. एस. एफ. की गाड़ी में बैठकर वाघा बॉर्डर जाने के लिए तैयार हो गए। थोड़ी देर में हम वाघा बॉर्डर पहुँचे और हमने पूरी परेड देखी। परेड देखते-देखते हमे बहुत मजा आया और हम सभी के रोंगटे खड़े हो गए। वाघा बॉर्डर के बाद हम वापस गाड़ी में बैठ कर होटल की तरफ गए। होटल जाते समय मैं बीमार हो गया था। इसलिए मुझे अमृतसर में गोल्डन टेम्पल और जलियांवाला बाग देखने को नहीं मिला। परंतु मै बहुत खुशनसीब था कि सरिता आँटी और सुनील अंकल जैसे अच्छे और ध्यान रखने वाले संरक्षक मेरे साथ थे। उन दोनों ने मेरा बहुत अच्छा ध्यान रखा। नीरज अंकल, जो भारत यात्रा के भारतीय स्वयंसेवक है, उन्होंने भी मेरा बहुत ख्याल रखा।

बनारस में हम बहुत सारी जगह गए। पहले दिन हम सारनाथ के बुद्धिस्ट मंदिर, पाठशाला, गंगा आरती, और काशीविश्वनाथ मंदिर गए थे। काशी विश्वनाथ मंदिर के बाद हम एक साड़ी की दुकान में गए, जहाँ पर हमने साड़ियां खरीदीं। दूसरे दिन हम गुरुकुल, और बी. एच. यू. गए। बी. एच. यू. में हमारा इंटरव्यू हुआ। उसके बाद हम सब आगरा जाने के लिए तैयार हो गए थे।

एक गुलाबी शहर जयपुर

नमस्ते, मेरा नाम चेहल कटोच है। मैं ईस्ट ब्रंसविक हिन्दी यू.एस.ए. पाठशाला में उच्चतर-२ कक्षा की छात्रा हूँ और मैं सातवी कक्षा में पढ़ती हूँ। इस वर्ष मुझे हिन्दी स्कूल की तरफ़ से भारत यात्रा पर जाने का मौक़ा मिला। हमारी भारत यात्रा की शुरूआत दिसम्बर १८, २०१७ को हुई। इस यात्रा में हम बहुत से स्थानों, स्कूल और यूनिवर्सिटी में गए। सब स्थानों पर हमारा बहुत अच्छे से स्वागत हुआ। हमने सबकी प्रस्तुति भी देखी और अपना कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया।

इस यात्रा में हमारे बहुत से पड़ाव थे और मुझे सभी बहुत अच्छे लगे, परंतु मेरा सबसे मनपसंद स्थान जयपुर रहा। सबसे पहले हम ट्रेन से उतर कर एक बस में बैठे और वहाँ से हमारी जयपुर की यात्रा की शुरूआत हुई। होटल के रास्ते में हमको पिंकसिटी देखने को मिली। वहाँ सारी इमारतें बाहर से गुलाबी रंग की हैं। होटल पहुँच कर हम तैयार हो कर संग्रहालय के लिए चल पड़े। वहाँ हमें जयपुर के इतिहास के बारे में ज्ञान मिला। फिर हम बिरला मन्दिर गए। वहाँ से हमें बहुत सुन्दर जयपुर का दृश्य देखने को मिला। रात को हम चोखी धानी गए। वहाँ पर हमने नृत्य, ऊँट की सवारी, ख़रीददारी और खाना भी खाया। हमें बहुत मज़ा आया। इसी से जयपुर का पहला दिन समाप्त हो गया।

दूसरे दिन सबसे पहले हम जल महल गए। हमने वहाँ बहुत सारे फ़ोटो खींचे। उसके बाद हम आमेर किला गए। हम हाथी पर बैठ कर क़िले के अन्दर गए। उसके बाद हमें क़िले का टूर मिला, वह मज़ेदार था। फिर हमने ख़रीददारी की और इस समय हम तोल मोल सीख रहे थे। आख़िर में हमें घर का खाना खाने को मिला। हमने दाल बाटी चूरमा खाया, वह बहुत अच्छा था। इस यात्रा में मैंने बहुत से दोस्त बनाये, समय से उठना, अपना समान पैक करना और कई छोटे-छोटे काम जिनके लिए हम मम्मी पर निर्भर रहते थे वे खुद किए। मुझे यह अनुभव बहुत अच्छा लगा। अगर मुझे इस तरह की यात्रा पर जाने का एक और मौक़ा मिला तो मैं ज़रूर जाऊँगी। इस यात्रा के अवसर के लिए मैं हिन्दी यू.एस.ए की आभारी हूँ।

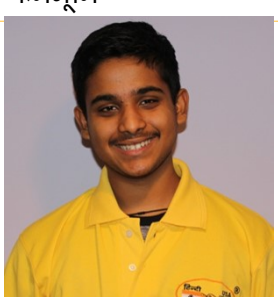

मुंबई और दिल्ली

सार्थ चतुर्वेदी हिंदी यू. एस. ए. की चेरी हिल पाठशाला के स्नातक हैं। स्नातकोत्तर वे इसी पाठशाला में शिक्षक सहायक के रूप में स्वयंसेवक हैं। सामान्य पाठशाला में वे नवीं कक्षा में पढ़ते हैं। सार्थ चौदह वर्ष के हैं। वे हिन्दी कविता पाठ और खेलों में रुचि रखते हैं।

मुंबई में हमने बहुत सारी जगह देखीं। हमने फ़िल्म सिटी, एलीफैंटा केव्ज़ और गेट्वे ओफ़ इंडिया देखा। फ़िल्म सिटी में आकाश जी ने हमें कई सेट्स दिखाए। उधर हमने कई फ़िल्मों के मंदिर के सेट भी देखे। लेकिन हम अंदर तक नहीं जा पाए, क्योंकि उधर उस समय शूटिंग चल रही थी। जब हम फ़िल्म सिटी में थे हमें सुभाष घई जी की फ़िल्म की पाठशाला को देखने और उनसे मिलने का अवसर मिला। उन्होंने हमारे लिए समय निकालकर उनके साथ बातचीत करने का अवसर दिया।

अगले दिन हम एलीफैंटा केव्ज़ गए। हम पहले गेट्वे ओफ़ इंडिया गए। उधर हमने थोडी देर तस्वीरें खींची और फिर उसके बाद एक नाव में एलीफैंटा केव्ज़ गए। मुझे उधर जाकर बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि इतने साल पहले भी लोगों ने इतनी अच्छी-अच्छी मूर्तियाँ बनाईं थी। उधर कल्याण जी ने हमें उस इलाके का इतिहास समझाया। हम सबने इसके पहले ऐसी कोई जगह नहीं देखी थी। काश, हम इधर और भी बहुत समय के लिए रुक पाते। हमने ऐसी-ऐसी जगह देखीं जो हमें शायद ही कभी देखने का मौका मिलता।

दिल्ली में हमने बहुत दिलचस्पत जगह देखी जो हम शायद सिर्फ़ दूरदर्शन पर ही देखते हैं। दिल्ली में नीरज जी ने हमारी बहुत मदद की। सिर्फ़ दिल्ली में ही नहीं बल्कि नीरज जी ने हमारी हर जगह पर मदद की। दिल्ली में हमने बहुत सारी सरकारी इमारतें देखीं जैसे राष्ट्रपति भवन जहाँ हमें राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद जी से मिलने का अवसर मिला। यह हम सब के लिए बहुत सम्मान की बात थी कि उन्होंने हम सबसे हाथ मिलाकर नए साल की शुभकामनाएँ दी। हमने पार्लियामेंट देखा ओर हमें मंत्री विजय संप्ला जी से मिलने का अवसर मिला। उन्होंने हमें उनके भविष्य की योजनाओं और उनके इतिहास के बारे में बताया। हमें प्रश्न-उत्तर का समय मिला। उसके बाद हमने जे.एन.यू. में जाने का और परफ़ोर्म करने का अवसर मिला। हमें दिल्ली जाकर बहुत चीज़ों के बारे में सीखने को मिला और यह यात्रा हमें हमेशा याद रहेगी।

भारत यात्रा - दिल्ली और अमृतसर

वसंत भारद्वाज हिंदी यू.एस.ए. की एडिसन पाठशाला के स्नातक हैं। स्नातकोत्तर वे इसी पाठशाला में सहायक शिक्षक के रूप में स्वयंसेवक हैं। सामान्य पाठशाला में वे ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ते हैं। वसंत सोलह वर्ष के हैं। वे हिन्दी कविता पाठ और पियानो वाद्ययन्त्र में रुचि रखते हैं।

पहली बार नई दिल्ली को छोड़ने के बाद हम अमृतसर गए। जब हम वहाँ पहुंचे, हम सीमा पर गए और गार्ड के बदलाव को देखा। फिर हम होटल गए और सो गए। अगले दिन हम एक हिंदू मंदिर गए और वहाँ प्रार्थना की। फिर हम स्वर्ण मंदिर में गए। जब हम वहाँ पहुंचे, हमें थोड़ी देर बाहर इंतजार करना पड़ा। फिर मै मंदिर के अंदर चला गया। वहाँ बहुत सारे लोग थे और भीड़ के कारण अंदर जाना मुश्किल था। हर जगह गार्ड थे। उन्होंने हमें चित्र लेने नहीं दिया। वहाँ प्रार्थना करने के बाद हमने उसके पास दोपहर का भोजन किया। फिर हम जलियांवाला बाग गए और वहाँ मारे गए लोगों को सम्मानित किया। दिल्ली में हमने इंडिया गेट देखा था, मगर हमने वहाँ बहुत समय नहीं बिताया। उसके बाद हम अधिकारियों के साथ मिलने के लिए संसद भवन गए। हमने देखा कि भारत में सरकार कैसे चला रही है और सामाजिक न्याय मंत्री के साथ मुलाकात की। हम संसद के बाद उनके साथ मिले और राजनीति पर चर्चा की। फिर हम अक्षरधाम के मंदिर में गए और सुंदर वास्तुकला को देखा। फिर सभी लड़के मेट्रो सिस्टम से नीरज जी के साथ होटल वापस चले गए और रात के लिए बिस्तर पर चले गए। अगले दिन हम एक बातचीत शो में गए और हममें से कुछ को पता नहीं था की इस शो पर हम क्या करेंगे। इसके बाद हम ज़ी टीवी के लिए एक फिल्मांकन के लिए गए और वहां लोगों ने मेरा साक्षात्कार लिया। फिर हम एक शो में गए, जहाँ हममें से कुछ ने प्रदर्शन किया। मैंने वहां लोगों की तस्वीरें लीं और फिर हम रात के लिए होटल वापस चले गए। जब हम वहां थे, नीरज जी ने कहा कि वह हममें से कुछ को एक सैन्य हवाई अड्डे के पास ले जा सकते हैं। हम वहां गए और वहां हेलीकॉप्टरों को देखा। फिर हम वापस चले गए और रात के लिए बिस्तर पर चले गए। आखिरी दिन हमने पैकिंग की और घर जाने की तैयारी की। हम सभी को अलविदा कह चुके थे और फिर हवाई अड्डे तक पहुंच गए और घर चले गए।

भारत भ्रमण

एक यादगार यात्रा

सार्थक उप्पल हिंदी यू.एस.ए. की चेस्टरफील्ड पाठशाला के स्नातक हैं। स्नातकोत्तर वे इसी पाठशाला में सहायक शिक्षक के रूप में स्वयंसेवक हैं। सामान्य पाठशाला में वे दसवीं कक्षा में पढ़ते हैं। सार्थक पन्द्रह वर्ष के हैं। वे हिन्दी कविता पाठ और भांगड़ा नृत्य में रुचि रखते हैं।

हिंदी यू.एस.ए. ने हमें अन्य स्कूलों के १३ बच्चों के साथ भारत यात्रा करने का अवसर दिया। मैंने नए दोस्त बनाये और भारत के विभिन्न हिस्सों का दौरा किया। सभी शहर खूबसूरत थे, लेकिन बनारस और दिल्ली मेरे पसंदीदा हैं। मुझे बनारस को बहुत ही निकट से देखने का अवसर मिला। हमने जयपुरिया स्कूल का दौरा किया और छात्रों से उनके पाठ्यक्रम और शिक्षा प्रणाली और खेल के बारे में बात की। उन्होंने हमें स्कूल दिखाया और बाद में हमारे साथ क्रिकेट खेल खेला। हमारा पूरा समय बहुत अच्छा बीता। हमें उनके प्रदर्शन को देखने का मौका मिला।

शाम को हमने गंगा आरती को देखा। पवित्र गंगा में लाइव आरती देखना बहुत आश्चर्यजनक लग रहा था। अगले दिन हम बनारस हिंदू विश्वविद्यालय भी गए। मैंने वास्तव में बनारस में हमारे प्रवास का आनंद लिया।

जिस दिन हम दिल्ली पहुंचे, हम विकासपुरी के के.आर मंगलम स्कूल गए, जहां उनके छात्रों ने हमारा बैंड के साथ स्वागत किया और आरती उतारी। उन्होंने हमें माला दी और तिलक हमारे माथे पर लगाया। हमने उनके प्रदर्शन को देखा और प्रदर्शन भी किया। दिल्ली में हम नीरज अंकल से मिले। उन्होंने हमें कुछ आत्मरक्षा युक्तियां सिखाईं। हम उनके साथ अक्षरधाम मंदिर देखने गए। अक्षरधाम मंदिर एक अद्भुत जगह है और मैं इसे बहुत पसंद करता हूँ। यह एक विशाल मंदिर और बहुत साफ है। वहाँ पर पानी के फव्वारे भी हैं।

वापिसी में हम मेट्रो में गए और रेलगाड़ी की सवारी का अनुभव किया। हम कैबिनेट मंत्री श्री विजय संपला जी से मिले। हमने उनके साथ अपने अनुभव साझा किए। हमने कुछ विस्तृत जवाब वाले प्रश्न भी पूछे। हम संसद को देखने के लिए गए थे। यह एक महान अनुभव था। हम भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री राम कोविंद जी से मिले। कुल मिलाकर यह एक महान यात्रा थी, जहाँ हमने भारत के बारे में बहुत सीखा और संस्कृति को बहुत निकट से देखा। मेरे पास इस यात्रा की अच्छी यादें हैं जो मैं हमेशा याद रखूंगा। धन्यवाद हिंदी यू.एस.ए.

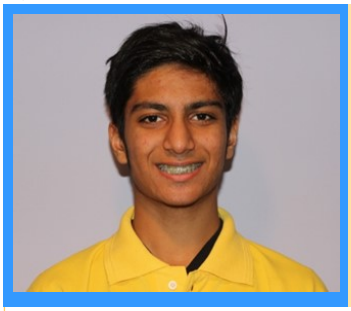

ऐतिहासिक नगरी - बनारस

नमस्ते, मेरा नाम ध्रुव गुप्ता है। मैं नवीं कक्षा में पढ़ता हूँ और मैं Hightstown High School का छात्र हूँ। हम जयपुर से दिल्ली सुबह रेल से गए थे और वहाँ से सीधे हवाई अड्डा गए थे। हम दिल्ली से बनारस हवाई जहाज से गए थे। बनारस में आते ही हम सब खाँसने लगे क्योंकि वहाँ बहुत धुंध (smog) थी। वहाँ के हवाई अड्डे के अंदर भी हम सभी को खाँसी हो रही थी। हवाई अड्डे के बाहर हम अपने स्वयंसेवकों से मिले और वहाँ उन्होंने हमें माला पहनाई। सामान रखने के बाद हम खाना खाने गए। बस में हमने अंताक्षरी खेल खेला था और थोड़ी देर बाद हम खाने की जगह पहुंचे। वहाँ पर हमने पत्तों पर खाना खाया था। मैं और सार्थ दोनों ने एक-एक मिर्च खाई। मुझे मिर्च बहुत अच्छी लगती है लेकिन वह बहुत ही ज़्यादा तीखी थी। मैं पूरी मिर्च खा पाया लेकिन मेरे आँखों में आँसू आ गए थे, क्यूंकि मैं अपने आप को सम्हाल नहीं पा रहा था। उसके बाद मेरे लिए खाने के लिए पायसम आया था और मै बस यह कहूंगा कि पायसम मुझे उतना अच्छा कभी भी नहीं लगा।

खाने के बाद हम अपने होटल में गए और सुबह हम वहाँ से सारनाथ गए थे। सारनाथ बुद्धिज़्म के लिए एक बहुत बड़ी धार्मिक जगह है। वहाँ पर हम एक मंदिर में गए थे और फिर हम वहाँ पर एक संग्रहालय में गए थे और वहां पर बुद्धिज़्म के इतिहास के बारे में सीखा। सारनाथ के बाद जैपुरिआ पाठशाला में हमारा एक कार्यक्रम था। पाठशाला के बच्चों का कार्यक्रम पहले था और वह बहुत सुन्दर था। उसके बाद हमारी बारी आयी और मैं सबसे पहले गया था। मुझे थोड़ा सा ड़र लग रहा था लेकिन गाते वक्त वह सब चला गया। सबके जाने के बाद पाठशाला के प्राचार्य ने हम सब को बधाई दी।

इसके बाद उन्होंने हमको एक क्रिकेट मैच की चुनौती दी। हम पहले बैट कर रहे थे और केवल ३ रन बनाए। मैंने पहले बैटिंग की और मै तीसरी गेंद पर catch-out हो गया था। उसके बाद जब हम फील्डिंग कर रहे थे तो मै बोलिंग कर रहा था। उन्होंने ९ गेंद में ४ रन बना लिए थे। हम हार गए लेकिन हमें मज़ा आया और मैच के बाद संचालिका हमें पाठशाला के दौरे पर लेकर गयी। हम सब को नज़र आया कि यह हमारे स्कूलों से कितना अलग है।

स्कूल के बाद हम गंगा आरती के लिए चल पड़े। हमने नाव पर चढ़कर गंगा के घाटों के बारे में सीखा, क्यूंकि आरती तो रात को थी। फिर आधा घंटे बाद हम आरती की जगह पहुंचे, और वापस जाने से पहले करीब देढ़ घंटे के लिए रुके। आरती के बाद हमारे स्वंसेवक हमें काशी विश्वनाथ मंदिर में लेकर गए। वह एक बहुत पवित्र मंदिर है और वहाँ पर कुछ बन्दर मंदिर में घुस गए। उसके आलावा बहुत अच्छा अनुभव था और मंदिर के बाद हम बनारस की साड़ी खरीदने गए। हमारे एक स्वयंसेवक के पिताजी की एक साड़ी की दुकान थी, तो फिर हम उनकी दुकान पर गए। वहाँ पर हमने फिर से अपनी बार्गेनिंग का अभ्यास किया। मुझे एक साड़ी ७,००० रुपये की मिली।

अगले दिन हमारा पूरे दिन का कार्यक्रम बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी में था, लेकिन सुबह हम एक गुरुकुल गए और वहाँ के बच्चों की ज़िन्दगी के बारे में

सीखा। हम यह देख कर आये कि वे बच्चे कैसे रहते हैं और क्या करते हैं। यह अनुभव मुझे बहुत अच्छा लगा और इसके बारे में मैंने बहुत कुछ सीखा। गुरुकुल के बाद हम बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी गए, जहाँ पर हमारा दिन का मुख्य कार्यक्रम था। वहाँ पर एक प्रोफेसर ने हमें मदन मोहन मालवीय जी के ऊपर एक भाषण दिया। उन्होंने बताया कि मालवीय जी ने अपनी ज़िन्दगी को कैसे जिया और उन्होंने दूसरे लोग को क्या बताया। उसके बाद हमसे बात करने के लिए एक आदमी आया।

बनारस के बाद हम आगरा गए थे। लेकिन आगरा जाने वाली हमारी ट्रेन रद्द हो गयी थी। इसके कारण हमें बस से जाना पड़ा। बस में हम सब अपनी-अपनी सीट पर बैठ गए और सो गए। हम आगरा दोपहर को पहुंचे और सीधे अपने होटल में गए। फिर तैयार होकर हम सब ताजमहल देखने पहुंचे। यह ताजमहल की मेरी दूसरी यात्रा थी। इस बार मुझे ताजमहल के इतिहास के बारे में और अधिक जानकारी मिली। ताज महल में हम ज़्यादा देर नहीं रुके, क्यूंकि हम देर से पहुंचे थे और उतना समय नहीं था। सर्दी की वजह से वहां बहुत धुंध थी। हम ताजमहल के भीतर नहीं जा सके, परन्तु हमने बाहर से बहुत आनंद उठाया। हमने बहुत सारी तस्वीरें खींची। फिर हम एक कार्यक्रम देखने कलाकृति केंद्र पहुंचे। वह एक light and sound नाटक था जो कि ताजमहल के इतिहास के ऊपर आधारित था। कार्यक्रम का नाम मोहब्बत-ए-ताज था। वह मुग़ल बादशाह शाहजहाँ और उनकी पत्नी मुमताज़ महल की प्रेम कहानी पर आधारित था। हमें वहां ताजमहल के एक नमूने पर लाइट एंड साउंड शो भी देखने को मिला। हमें मुग़ल साम्राज्य के बारे में बहुत जानकारी मिली। आगरा में यह कार्यक्रम मुझे सबसे अच्छा लगा।

मुंबई, एक अनोखा शहर

मेरा नाम निखिल कुंडू है और मैं हिन्दी यू. एस. ए. की पिस्केटवे पाठशाला में उच्चस्तर-२ कक्षा का छात्र हूँ। सामान्य पाठशाला मे मैं दसवी कक्षा में पढता हूँ। मैं सोलह वर्ष का हूँ। मैं शास्त्रिय संगीत का अभ्यास पिछले ८ साल से कर रहा हूँ।

इस साल, १८ दिसंबर को मैं और १३ सहपाठी भारत यात्रा पर रवाना हुए। हमारे साथ दो शिक्षक भी थे। हम भारत के कई शहरों का दर्शन करने वाले थे, जैसे मुंबई, दिल्ली, अमृतसर, जयपुर, वाराणसी, आगरा, वृंदावन। हमारा पहला स्थान मुंबई था। हम १९ दिसंबर को मुंबई के छत्रपति शिवाजी अंतर्रराष्ट्रीय हवाई अड्डे पहुँचे। मुंबई का हवाई अड्डा बहुत बड़ा और सुंदर है। हवाई अड्डे से होटल तक जाने के लिए हिन्दी यू. एस. ए. ने एक बड़ी गाड़ी का प्रबंध किया था। हम पवई में, Hotel Renaissance में दो दिन के लिए रहे थे। जब हम होटल पहुँचे शाम को मैं बहुत आश्चर्यचकित हो गया क्योंकि मेरी नानी मुझसे मिलने आयी थीं, सांताक्रूज़ से। नानी को देखकर मैं बहुत खुश हो गया और हमने कुछ देर के लिए बातचीत की।

अगले दिन हम गोरेगाँव में फिल्म सिटी देखने गए। फिल्म सिटी बहुत मशहूर है क्योंकि वहाँ पर हिन्दी चलचित्र बनाये जाते हैं। वहाँ हम Whistling Woods महाविद्यालय गए। यह पाठशाला सुभाश घई जी ने शुरु की थी। वह एक महान फ़िल्मकार हैं। सुभाश घई जी के साथ हमने काफी फोटो खीचें। वहाँ हमने एक फिल्म की शूटिंग देखी और पाठशाला की सैर की। उसके बाद हम मुकेश खन्ना जी के दफ्तर गए। काफी साल पहले मुकेश जी ने टीवी पर महाभारत मे भीष्म पितामह का अभिनय किया था। हमने उनके साथ बहुत सारी फोटो खीचीं।

तीसरे दिन हम लोगों ने पहले कुलाबा मेंगेट्वे अफ इंडिया देखा। गेट्वे अफ इंडिया एक प्रसिद्ध इमारत है और महारानी विक्टोरिया के भारत में स्वागत करने के लिए बनाया गया था। गेट्वे अफ इंडिया देखने के बाद हम एक नाव के द्वारा एलेफान्टा की गुफाएं देखने गए। गुफाओं में बहुत पुरानी मूर्तियां और चित्र थे। मुझे यह जगह बहुत अच्छा लगी क्योंकि मैं दंग रह गया कि मनुष्य हज़ारों साल पहले एक छोटे से द्वीप पर इतनी अच्छी कलाकृति बना सकते थे। होटल जाते वक्त हमने मुंबई के कई प्रसिद्ध जगहों को देखा, जैसे मरीन ड्रैव और बांड्रा-वर्ली सी लिन्क।

मुझे मुंबई शहर बहुत अच्छा लगता है। हमारा परिवार मुंबई से है और यह भारत में मेरा सबसे प्रिय शहर है।

"परिवार वह सुरक्षा कवच हैं जिसमें रहकर व्यक्ति शांति का अनुभव करता है"

हिंदी यू.एस.ए. के होनहार बच्चे

श्रीमती योगिता संगळीकर और श्री जीतेन्द्र घोरपड़े की बेटी श्रेया एडिसन हिंदी पाठशाला में मध्यम-१ की होनहार छात्रा है। श्रेया जॉन मार्शल एलिमेंट्री स्कूल, एडिसन की दूसरी कक्षा में पढ़ रही है। अपने खाली समय में श्रेया को गाना और डांस करना अच्छा लगता है। श्रेया ने ढाई वर्ष की उम्र से लाइव लव स्केट्स से रोलर स्केटिंग सीखना शुरु किया। कोच सुसन और कोच जो की कड़ी ट्रेनिंग के कारण श्रेया ने अपनी पहली रोलर स्केटिंग प्रतियोगिता ४ वर्ष की उम्र से प्रारम्भ की और वहीं से पदक पाने का सिलसिला शुरु हुआ। हफ्ते में चार से पांच दिन स्केट्स की क्लासेज होने के बावजूद श्रेया स्कूल की पढाई में हमेशा आगे रही है। प्रतिदिन के २ घंटे अभ्यास के कारण श्रेया अपना स्कूल का गृहकार्य कई बार स्केट्स क्लास में ही करती है। अपनी कड़ी मेहनत से उसने २०१५ में ट्राइस्टेट वुडब्रिज न्यू जर्सी, २०१७ ट्राइस्टेट और स्प्रिंग व्हील्स ईस्ट कोस्ट रीजनल में सोने का पदक जीता। १५ जनवरी २०१८ फ्लोरिडा में "अमेरिका'स कप रोलर स्केटिंग चैंपियनशिप" अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किया गया था, जिसमें श्रेया ने ७ वर्षों से कम के समूह में न केवल हिस्सा लिया, बल्कि फ्लोरिडा और कोलंबिया के स्केटर्स से जीतकर स्वर्ण पदक हासिल किया और न्यू जर्सी और अपने माता-पिता का नाम रोशन किया। एडिसन टाउनशिप कौंसिल ने उसके रोलर स्केटिंग की ओर मेहनत, लगन और उपलब्धि के लिए उन्हें सम्मानित किया। एडिसन हिंदी पाठशाला संचालक माणक काबरा ने कहा "हमें गर्व है कि श्रेया हमारी पाठशाला की छात्रा है। हिंदी यू.एस.ए. की ओर से श्रेया को बहुत बहुत बधाई और ढेर सारी शुभकामनाएँ।"

सच्चा परिवार

परिवार में - क़ानून नहीं परन्तु अनुशासन होता है
परिवार में - भय नहीं परन्तु भरोसा होता है
परिवार में - शोषण नहीं परन्तु पोषण होता है
परिवार में - आग्रह नहीं परन्तु आदर होता है
परिवार में - सम्पर्क नहीं परन्तु सम्बन्ध होता है
परिवार में - अर्पण नहीं परन्तु समर्पण होता है

वही सच्चा परिवार होता है

Beautiful Smiles For The Entire Family

Healthy Teeth & A Bright Smile For The Whole Family!
New Patients Always Welcome · State-Of-The-Art-Equipment
All Your Family Needs Under One Roof
Complimentary Dental Kit For New Patients!

Dr. Bhavi Bhagia, DDS

A-1 DENTAL

253 Talmadge Road
Edison, NJ
08817

3000 Route 27
Kendall Park, NJ
08824

732-650-9999

www.a1dental.com

VISA Most Insurance Plans Accepted

Saturday & Evening Appointments Available
invisalign

"Super efficient, friendly and professional staff! I'm always in and out of my appointment and I love my kind, comforting and talented dentist!"
~Elizabeth H.

$99
exam, x-rays and cleaning
732-650-9999
Limited time offer. With this coupon.
Not valid with other offers.

ONLY $249
ZOOM!® teeth whitening
(reg. $600)
732-650-9999
Limited time offer. With this coupon.
Not valid with other offers. One per family.

परिवार

मायनो मुर्मु - संचालिका, ईस्ट ब्रंस्विक पाठशाला

जब हम किसी से पहले बार मिलते हैं तो नाम के बाद हम यही पूछते हैं कि आप के परिवार में कौन -कौन हैं। "परिवार" शब्द लेते ही मन में अपने बच्चों के अलावा माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी, चाचा-चाची का विचार आता है जो एक खास सम्बन्ध से जुड़े हैं। इसी को ही परिवार कहते हैं। परिवार ही हमारा पहला स्कूल है जहाँ हम बहुत कुछ सीखते हैं। हमें एक दूसरे को कैसे मान-सम्मान देना चाहिए, अपने से बड़ो की बात मानना चाहिए, छोटों से गलती हो तो माफ़ कर देना चाहिए आदि। हर सदस्य की छोटी बड़ी जरूरतों को कैसे पूरा करना चाहिए, जैसे खाने के लिए रोटी, पहनने के लिए कपडे, रहने के लिए मकान तथा बच्चों की पढ़ाई के लिए उचित साधन ये सब हम परिवार से ही सीखते हैं। परिवार में रिश्ते बड़े मायने रखतें हैं। हर रिश्ता कैसे निभाना है सीख जाते हैं। मुसीबतों में एक दूसरे की मदद करना चाहिए और हमेशा एक दूसरे के लिए प्रेम भाव बनाये रखना चाहिए। जिस परिवार में एक “पॉजिटिव एनर्जी” होती है ऐसे परिवार से ही ऐसे चिराग पैदा होते हैं जो समाज के लिए कुछ अच्छा करते हैं। पूरा परिवार समाज के लेये महत्पूर्ण योगदान देता है।

मेरा भी जन्म ऐसे ही पॉजिटिव एनर्जी परिवार में हुआ। लेकिन बाल्यकाल में ही पिता जी के असामयिक निधन हो जाने पर माता जी ने ही हमारा ख्याल रखा। हर जम्मेदारी को निभाती रहीं। सारी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं कर सकीं, लेकिन हमें कठिन परिश्रम करना सिखाया, हमारे हौसले और उत्साह को हमेसा बढ़ावा दिया। परिवार आदर्श होना चाहिए, पति पत्नी में प्रेम होना चाहिए और झूठ का स्थान नहीं होना चाहिए। बुजुर्गों का सम्मान करें, इससे पारवारिक रिश्तों में दरार नहीं आती। इससे आप एक खुशहाल जिंदगी जी सकते हैं। हमारी मानसिक स्थिति ख़राब नहीं होती तथा रिश्तेदारों में, हमारे समाज में हमारी इज़्जत बढ़ती है। आजकल ऐसे परिवार कम देखने को मिलते हैं। आज का युग विज्ञान का है, नई औषधियों से महामारी जैसे बीमारियां कम हो गई हैं, जिससे गाँव में जनसँख्या बढ़ने लगी, और टेक्नोलोजी ने काफी हद तक लोगों की सोच भी बदल दी। अब लोग उसमें जरुरत से अधिक भरोसा और इस्तेमाल करने लगे, जिससे स्वास्थय बिगड़ रहे हैं और मानसिक संतुलन भी कुछ काबू में नहीं रहा, जिसका असर हमारे बच्चों पर पड़ रहा है। हमारे युवा इसके शिकार हो रहे हैं। नये दौर के आविष्कार पर गर्व होता है, लेकिन सही प्रकार से उसे उपयोग करने से ही परिवार और समाज का भला होगा। हमें टेक्नोलॉजी का गुलाम नहीं होना चाहिए। आज ऐसी कुछ संस्थाएँ हैं जो परिवार को जोड़े रहने का कार्य कर रही हैं, उनमें हमारा हिन्दी यू.एस.ए. भी है। यह अपने आप में एक बहुत ही बड़ा परिवार है जो मिलजुल कर बच्चों को हिंदी पढ़ना, लिखना और बोलना सिखाने के आलावा बच्चों को अपनी संस्कृति और परंपरा से जुड़े रहने का कार्य भी कर रही है। मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि यह परिवार ऐसे ही बढ़ता रहे, फूलता-फलता रहे। मुझे गर्व है कि मैं ऐसे परिवार का हिस्सा हूँ।

पुनर्कवि भव!

सुनील दुबे

जब मैं तीन साल का तब से देख रहा हूँ चित्रकथाएँ
फैंटम, मैंड्रेक, बैटमैन, सुपरमैन, ये सब मेरे दिल पर छाये
कुछ दिन पहले सोमवार को, द्वार खुले थे किस्मत के
भये प्रकट जब दीन दयाला, मेरे घर की चौखट पे
बोले प्रभु, "चल रे कविवर! बोल तुझे क्या दे दूँ वर?
अगर कहे तो "टाटा" कर दूँ? या बनना है प्राइम मिनिस्टर?"
मैं बोला, "प्रभु मैं बेचारा, जिसने चाहा दिए हाथ दो
अंडे जूतों से बच पाऊँ, प्रभु मुझको वेताल (फैंटम) बना दो।"
बनते ही वेताल झपट कर, आलोचक घर छापा मारा
संपादक के दफ्तर का फिर किया प्रेम से वारा न्यारा।
दुनिया भर के गुंडों का मैं करता फिरा अकेले नाश
पड़ी विपद जब जोकर जैसा, आ पहुंचा विद्रूप विनाश।
मैंने प्रभु को हाँक लगाई, "लाज रखो हे किशन कन्हाई
इस जोकर को हरा सकूँ मैं, ऐसा कुछ कर दो रघुराई
बैटमैन की काया दे दो, उसके जैसी माया दे दो
जोकर से तब पार मैं पाऊँ, दुनिया को कुछ सुख दे पाऊँ।"
बैटमैन की काया में मैं, बस महिने दो चार रहा
सुपरमैन की काया ली तब, जब उससे न काम चला
महीना गुज़रा, गुज़रा साल, रहा नहीं अब मुझे मलाल
दुनिया का बेताज बादशाह, सुपरमैन ने किया कमाल
मगर तभी एक झटका खाया, नया एक था दुश्मन आया
सुना सुना अपनी कविताएं, कवि ने अपना रौब जमाया

सुपरमैन ने जब ललकारा, कवि क्रिमिनल का चढ़ गया पारा
अपनी नयी नयी कविता को, सुपरमैन पर ऐसे वारा
कपिल देव सा मारा छक्का, सुपरमैन रह गया भौंचक्का
दाएं बाएं बगले झांके, आँखें फाड़े हक्का बक्का
भूल गया सब उड़ना वुड़ना, एक्स रेज़ से सब कुछ पढ़ना
वो बौराया, चक्कर खाया, प्रभु में फिर से ध्यान लगाया।

शेष अगले पृष्ठ पर

यह जिंदगी

मेरा नाम पारुल काम्बोज है। मैं स्टेमफोर्ड हिंदी स्कूल में पिछले दो साल से हिंदी पढ़ा रही हूँ। मुझे बच्चों को हिंदी पढाना अच्छा लगता है। मैं कभी-कभी अपनी दिनचर्या में से थोड़ा समय निकाल कर कुछ लिखना पसंद करती हूँ।

थोड़ी रेत सी थोड़ा पानी सी,
कभी फिसलती है कभी बहती है यह जिंदगी।
अगर समझ आ जाए तो सौगात,
नहीं तो बोझ सी लगती है यह जिंदगी।
पतंग की तरह आसमान में उड़ती,
ख्वाहिशों की उड़ान सी लगती है यह जिंदगी।
लोग आते है खुशियां लाते हैं,
रंगों से भर देते हैं यह जिंदगी।
दीपक की लौ की तरह जलती,
तो कभी समुन्दर की लहरों सी शांत यह जिंदगी।
कभी हँसाती कभी रुलाती हैरान परेशान करती,
बहुत कुछ सिखाती यह जिंदगी।
कभी उम्मीदों पर खरी न उतरी,
कभी लाचार सा कर देती है यह जिंदगी।
माँ की कोख से शमशान की राख तक,
कठपुतली सा नाच नचाती यह जिंदगी।
दोस्तों के साथ हँसी ठिठोली करती एक प्यारा सा
एहसास जगाती,
रंगबिरंगे फूलों की चादर सी यह जिंदगी।
आपस के बैर मिटाती लोगों को गले लगाती,
सबको पल में अपना बना लेती यह जिंदगी।
कभी चाहने पर कुछ नहीं,
कभी बिन चाहे सब दे देती है यह जिंदगी।
हँसते मुस्कुराते रहो तो दोस्तों,
सुंदर उपहार सा लगती है यह जिंदगी।

"हे प्रभु मुझको कवि बना दो, मैं तो कवि का कवि ही अच्छा
अंडे, जूते, पत्थर, कीचड़, सड़ा टमाटर पक्का कच्चा,
कुछ भी नहीं अगर तुम देखो, कवि की रचना के आगे
सुपरमैन सा शक्तिशाली भी, कवि से पूँछ दबा भागे।
शक्तिमान है कवि ही जग में, यह मुझको अब ज्ञात हुआ
कविता की ताकत का मुझको, अब जाकर ही भास हुआ।
हे प्रभु मेरा मन लौटा दो, मुझको फिर से कवि बना दो।"
"पुनर्कवि भव!" कहकर प्रभु जी, बिल्कुल अंतर्ध्यान हो गए
सपना टूटा, कवि पीड़ा से, हम तो अब आज़ाद हो गए।

वसुधैव कुटुम्बकम्

सीमा वशिष्ट शिक्षिका - प्लेंसबोरो हिन्दी पाठशाला - मध्यमा-२

परिवार... इन चार अक्षरों में एक व्यक्ति के लिए सारी सृष्टि समायी होती है किंतु भारतवर्ष में माना जाता है कि "वसुधैव कुटुम्बकम्" अर्थात् समस्त विश्व ही हमारा परिवार है। जिस प्रकार एक परिवार में विभिन्न व्यक्तित्व व विचारों के प्राणी एक ही छत के नीचे स्नेह व सौहार्द्रपूर्वक एक दूसरे की अपेक्षाओं तथा भावनाओं का सम्मान करते हुए एक साथ रहते हैं वैसे ही इस विश्व रूपी विशाल परिवार में भिन्न-भिन्न संस्कृतियों व धाराओं का विलय है। जिस प्रकार एक परिवार की एकता निर्भर करती है कि उसके प्रत्येक सदस्य का आदर किया जाए, उचित प्रेम किया जाए और हर कठिन समय में एक दूसरे का साथ दिया जाए उसी प्रकार विश्व में भी प्रत्येक धर्म, सभ्यता तथा मान्यता का समुचित सम्मान होना चाहिए। विश्व प्रेम और आपसी सौहार्द्र का यह भारतीय मूलमंत्र केवल मानव जाति के लिए ही नहीं अपितु प्रकृति में पाई जाने वाली समस्त वनस्पतियों व पशु-पक्षियों को भी अपने में समाविष्ट करता है। एक उद्यान की सुंदरता उसमें पल्लवित होने वाले नाना प्रकार के रंगबिरंगे और सुगंधित फूलों से होती है। विभिन्न प्रजातियों और आकारों के पुष्प वातावरण में एक अनोखी छटा बिखेरते हैं। भाँति-भाँति के पशु-पक्षी जो पर्यावरण के संतुलन को रखते हुए अपने जीवन चक्र को पूर्ण करते है, वे भी इसी धरती माँ की संतान हैं। गगनचुंबी पर्वत श्रृंखलाएँ, कल कल बहती सरिताएँ, अल्हड़ झरनें, विशाल समुद्र, हरे- भरे वृक्ष और एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैले मखमली घास के मैदान वे अलंकार हैं जिनसे सुसज्जित होकर इस वसुंधरा को अनुपम सौंदर्य की प्राप्ति होती है और ये सभी इस महान विचारधारा में समाहित हैं। इन सभी को उचित सम्मान व संरक्षण देने की संस्कृति है वसुधैव कुटुम्बकम्। आइये हम सभी मिलकर यह प्रयास करें कि समस्त विश्व आपसी राग-द्वेष को बिसरा कर भारत के इस विश्व शांति और भाईचारे के संदेश को आत्मसात् करने की दिशा में अग्रसर हो।

मेरा परिवार

नमस्ते मेरा नाम कुश गाँधी है। मैं चैस्टरफ़ील्ड हिंदी पाठशाला की उच्चस्तर-१ कक्षा में पढ़ता हूँ। मेरा परिवार बहुत प्यारा है। मेरे परिवार में मेरी मम्मी, पापा व छोटी बहन हैं। मेरे माता-पिता कम्प्यूटर इंजीनियर हैं। मेरी बहन चौथी कक्षा में पढ़ती है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे फ़ुट्बॉल खेलना पसंद है। मुझे कराटे भी पसंद है। कराटे में मिझे ब्लैक बेल्ट भी हासिल की हुई है। मुझे संगीत में भी रुचि है। मुझे अपने परिवार के साथ में समय बिताना अच्छा लगता है। पिछले साल हम लोग क्रूज पर गए थे। हम सबने बहुत मस्ती की। वह साथ में बिताया हुआ समय मैं जीवन भर याद रखूँगा। मैं अपने परिवार के साथ बोर्ड गेम भी खेलता हूँ। हम हमेशा साथ में अच्छा समय बिताते हैं। मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि मुझे इतना अच्छा परिवार मिला।

विस्तृत परिवार

पारुल दरबारी, शिक्षिका एवन हिंदी पाठशाला, मध्यमा-२

नमस्ते, मेरा नाम पारुल दरबारी है और मैं एवन हिंदी यू.एस.ए. में मध्यमा-२ स्तर की अध्यापिका हूँ। यह हिंदी यू.एस.ए. में मेरा प्रथम वर्ष है और मैं बहुत उत्साहित हूँ कि मैं इस परिवार से जुड़ी। मैंने भारत में साइकोलॉजी में सनातक और संगणक में स्नात्तकोत्तर उपाधि प्राप्त की है।

परिवार की परिभाषा तो हम सब जानते हैं, किन्तु उसकी असली पहचान और उसकी एहमियत को हम जाने अनजाने भुला देते हैं या उसको मूल्य नहीं देते। हम सब यहाँ अपने अपने परिजनों से दूर ज़िन्दगी बिता रहे हैं और इस कोशिश में हैं कि हमारे बच्चे भी हमारे संस्कारों को सीखे और समझें। ज़िन्दगी की इस भाग दौड़ में कभी कभी हम भी परिवार की असली पहचान भूल जाते हैं। इस बात का एहसास हाल ही में मुझे और मेरे विस्तृत परिवार को हुआ।

हुआ यूं कि अगस्त २०१७ में मैं अपने परिवार, जिसमें मेरे पति और दो बच्चे (बेटी १० वर्ष और बेटा ८ वर्ष), के साथ भारत अपने माता-पिता से मिलने गए। किन्तु वीसा की कुछ परेशानी के कारण मुझे भारत में ही रुकना पड़ा। मेरे पति और बच्चे वापस अमेरिका आ गए। हमने सोचा था कि सब काम कुछ दिन में हो जायेगा और मैं वापस आ जाऊँगी। दुर्भाग्य से मुझे वहां ४ महीने रुकना पड़ा। हम बड़े सौभाग्यशाली हैं कि मेरी बहन पास में मेसाचुसेट्स में ही रहती है, और उसने इस समय में बहुत मदद की। किन्तु हमारे मित्रजन जो आस-पास रहते हैं, उन्होंने इतना सहयोग और इतना स्नेह दिखाया कि जैसे हम सब एक विस्तृत परिवार हों। महिला मित्रों ने मिल कर खाना देने के दिन बाँट लिए, छुट्टी वाले दिन बच्चों को अपने घर बुला कर या उन्हें बाहर ले जाते अथवा अपने साथ रखते। स्कूल के बाद अतिरिक्त पाठयक्रम की कक्षाओं में भी समय-समय पर बच्चों को ले जाते। पुरुष मित्र अपने अपने व्यस्त दिनचर्या से समय निकाल कर थोड़ी देर मेरे पति से मिलने आते व उनको समय-समय पर अपने घर बुलाते। इन सब लोगो ने निश्छल भाव से हमारे परिवार को अपना परिवार मानते हुए बहुत सहायता और प्रेम दिया। हम सब एक विस्तृत परिवार के सामान हैं। इस परिवार में हम एक दूसरे को किसी नाम से संबोधित नहीं करते, क्योंकि रिश्तों को नाम की ज़रुरत नहीं होती है। सबसे ज़रूरी होता है एक दूसरे के लिए प्यार और समर्पण। मैंने यह सीखा कि जिस तरह हमारे सब मित्रों और परिवार के लोगो ने मिल कर इस कठिन समय में हमारा साथ दिया और अपनापन दिखाया, यही असली परिवार का रूप होता है। परिवार सिर्फ नाम दिए हुए रिश्तों से नहीं बनता, किन्तु परिवार एक दूसरे के लिए प्यार की भावनाओ से बनता है। परिवार हमारे आस पास ही है जिसको हमें पहचानना है और सहेज कर रखना है।

"परिवार सिर्फ नाम दिए हुए रिश्तों से नहीं बनता, किन्तु परिवार एक दूसरे के लिए प्यार की भावनाओ से बनता है"

नार्थ ब्रंस्विक हिंदी परिवार

योगिता मोदी — संयोजिका एवं शिक्षिका

ये मेरा छोटा सा सुन्दर सा
नार्थ ब्रुंस्विक हिंदी परिवार।
नन्हे मुन्ने बच्चों से सजा-बसा
ये अनूठा और प्यारा संसार॥

हिंदी सीखने - सिखाने को
मिलते हम सब हर शुक्रवार।
रोचकता और खेल -खेल में
क्रम यह चलता रहता लगातार॥

तुम्ही हो माता-पिता प्रार्थना से
करते शुरुआत शाला की।
जन मन गण गाते और
बोलते जय भारत माता की॥

हिंदी यू. एस. ए. की यह
एक प्रगतिशील इकाई।
पूर्व नियोजित पाठ्यक्रम से
होती हर कक्षा में पढ़ाई॥

शिक्षक अपने पूरे मनोभाव से
निभाते अपनी हर ज़िम्मेदारी।
पढ़ाई और सभी कार्यक्रमों की
छात्रों को करवाते तैयारी॥

होली हो या हो दिवाली
हो कोई अन्य भारतीय त्यौहार।
साथ मनाते और बांटते
ढेर सारा स्नेह और प्यार।

यह हमारी है उत्कट अभिलाषा
खूब हो इस शाला का विस्तार।
हिंदी प्रसार के इस महान कार्य से
हर भारतीय के जुड़ते जाएँ तार॥

स्वान्तः सुखायः, जन हिताय

श्रीमती सुनीता लुल्ला भारत के हैदराबाद शहर की निवासी हैं। हिंदी और अंग्रेजी में स्नातक कर इन्होंने बी.एड की पढ़ाई की। शिक्षण कार्यक्षेत्र में कदम रख कर ये साधु वासवानी स्कूल से सेवा निवृत्त प्राचार्या हुईं। इन्होंने अपना पूरा समय हिंदी और सिंधी भाषा को आगे बढ़ाने में लगाया है। लेख, गीत, कविताएँ एवं ग़ज़ल की रूचि को इन्होने तीन प्रकाशित पुस्तकों में प्रस्तुत किया है। इन्हे भाषा हेतु कई पुरूस्कार एवं सम्मान मिले। हाल ही में इन्हे इंदौर में 'हिंदी भाषा सारथी' के नाम से सम्मानित किया गया है। इनके लेखन का उद्देश्य है - स्वान्तः सुखायः, जन हिताय। हिंदी यू.एस.ए. के बच्चों के लिए इनकी ये प्यार भरी भेंट है।

पतंग

देखो पतंग ,ये रंग रंग
उड़ती ही है जाती
डोर बंधी है ,फिर भी उसको
रोक नहीं ये पाती।
डोरी का आश्रय ही उसको
ये उड़ान देता है
बन्धन ही जीवन को देखो
कुछ उठान देता है।
डोर बिना क्या ये पतंग
ऊपर तक जा पायेगी
एक हवा के झोंके में ये
नीचे आ जायेगी।
इसीलिए बच्चों तुम सीखो
अनुशासन में रहना
कभी न पीछे मुड़ना तुम
बस आगे बढते रहना।

कछुआ और खरगोश

कछुए और खरगोश ने देखो दौड़ लगाई है
पहले कौन पहाड़ी पहुँचे, ये समझाई है।
था खरगोश को बडा भरोसा अपनी दौड़ लगाने का
कितना ही भागे ये कछुआ, जीत नहीं ये पाने का।
शुरू हो गये दोनों अपनी अपनी चाल सम्हाले
सरपट था खरगोश मगर कछुआ था ढीलम ढाले।
एक मोड़ खरगोश ने सोचा थोडा मैं सुस्ता लूँ
कछुआ वैसे भी हारेगा, देख जरा रस्ता लूँ।
लगी नींद तब समय भी जाने कितना था गहराया
कछुआ लेकिन लगा रहा वो पल भर न घबराया।
ढलते सूरज ने देखा कि कछुआ जीत गया है
रुकने वाले खरहे का सब समय ही बीत गया है।
जल्दी हो या धीरे हो, जो चलता ही रहता है
जीत उसी की होती जग में, समय यही कहता है।

मुक्ता कापसे

वसुधैव कुटुम्बकम

मैं मुक्ता कापसे, मोनरो हिंदी पाठशाला में पिछले ६ वर्षों से प्रथमा-२ की अध्यापिका हूँ। मैं मोनरो पब्लिक स्कूल में भी अध्यापिका का काम करती हूँ। काव्य और लेख में मेरी विशेष रूचि है। कर्मभूमि के माध्यम से इस बार के हमारे विषय 'परिवार' के बारें में आज मैंने अपने विचार इस लेख में प्रस्तुत किये हैं। आशा करती हूँ कि आप सभी मुझसे सहमत हो पाएँगे। इस अवसर के लिए मैं सभी की बहुत आभारी हूँ।

"वसुधैव कुटुम्बकम" इसका मतलब कि सारी पृथ्वी ही मेरा कुटुंब है। आज कल तो हमारे परिवार भी छोटे हो गए हैं। परिवार में गिने चुने तीन-चार सदस्य ही होते हैं। लेकिन पहले ऐसा नहीं था। परिवार रिश्तों नातों से भरपूर हुआ करता था। लेकिन भाग दौड़ भरी इस जिंदगी में परिवार का अर्थ अब कहीं खो सा गया है। परिवार जो प्यार, स्नेह और सम्मान का स्वाभाविक सम्बन्ध है। हमारी भारतीय संस्कृति में सारी पृथ्वी को ही अपना परिवार माना है। सारी पृथ्वी, मतलब कि सारी सृष्टि, और इसमें बसने वाले विविध पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, यहाँ तक कि पर्वत और नदियाँ इन सभी को हमारी संस्कृति ने अपने परिवार के रूप में अपनाया है। धरती पर बसने वाले और समंदर में रहनेवाले सभी प्राणी जीव, हर प्रकार के पेड़, वनस्पति, पहाड़, नदियाँ, सारे पर्यावरण का एक अविभाज्य अंग है। हमारी सृष्टि का नैसर्गिक संतुलन बनाये रखने में ये सभी अपना योगदान देते हैं। हमें साँसे देने वाली हवा, प्यास भुझाने वाला पानी, और हमारी भूख मिटाने वाले सभी जीव, वह चाहे प्राणी हो या जलचर या फिर कोई फल, वनस्पति इत्यादि, ये सभी हमारे प्यार, स्नेह और सम्मान के हक़दार है बिलकुल हमारे परिवार की तरह।

अपनी सृष्टि के प्रति कृतज्ञता प्रस्तुत करने के लिए हमारे पूर्वजों ने कई त्योहारों का आयोजन किया है। अलग-अलग ऋतुओं में भारत, में कई उत्सव अपनी सृष्टि की ओर सन्मान की भावनाओं को प्रदर्शित करने के लिए करते है। हमारा जीवन इसी सृष्टि की देन है इसलिए हमें अपने पर्यावरण की उसी प्रकार कदर करनी चाहिए जैसे कि हम अपने परिवार के किसी भी सदस्य की करते है। हम जिस प्रकार अपने रिश्तों की परवाह करते है, उसी जागरूकता के साथ हमें अपने आसपास के निसर्ग की भी देखभाल करनी होगी। आसपास नियमित स्वच्छता बनाये रखनी होगी। हवा और पानी की स्वच्छता हमारे जीवन को आरोग्य सम्पन्न बनाये रखती है, जो हमारे प्राथमिक सुख की अनुभूति है। चीज़ों का पुनर्चक्रण (रीसाइक्लिंग) भी अपने पर्यावरण की सही देखभाल करने का एक तरीका है।

धन पर्यजन के प्रवाह में हम अपनी असली सम्पदा जो आरोग्य है उसे अनदेखा नहीं कर सकते। हमें मिले सृष्टि के इस वरदान को हमें बड़े ध्यान से संभालना होगा। यही हमारी धरोहर-विरासत बनके हमें अपनी अगली पीढ़ी को सौपनी है। हमारे बच्चों को इस वरदान का लाभ लेते हुए देखना है। अपने व्यवहार को उदहारण बनाकर अगली पीढ़ी को यह सीख देनी है कि इस धरती पर हमारे अपनों में सिर्फ हमारे रिश्ते ही नहीं बल्कि हमारी सारी सृष्टि हमारे परिवार का हिस्सा है!! सही मायने में "वसुधैव कुटुम्बकम" का अर्थ बच्चों को समझाना है।

प्रेरणादायी परिवार

मेरा नाम निरल देसाई है। मैं नॉर्थ ब्रुंस्विक पाठशाला में कनिष्ठा-२ की शिक्षिका हूँ। मैं हिंदी यू.एस.ए. से पिछले ३ वर्षों से जुड़ी हूँ। मेरे दोनों बेटे, आरव- ९ वर्ष और क्रिशिव- ५ वर्ष हिंदी यू.एस.ए. में क्रमशः प्रथम-२ एवं कनिष्ठा-२ में पढ़ते हैं।

मैं पहले से ही संयुक्त कुटुंब में रह कर बड़ी हुई हूँ। मेरे माता-पिता ने हमारे सामने बहुत ही आदर्श पारिवारिक जीवन की आधारशिला रखी है। मेरे पिताजी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद् तथा संस्कार भारती से बहुत वर्षों से जुड़े हुए हैं। भारत और भारतीय मूल्यों से लगाव की प्रेरणा हमेशा मुझे उनसे मिलती रही। शादी के बाद भी मुझे ऐसा ही सुन्दर संयुक्त परिवार मिला जहाँ पर घर की महिला सदस्यों ने घर को बहुत अच्छी तरह से जोड़ रखा है। यहाँ अमेरिका में भी पहले से किसी न किसी परिवार के साथ रहना हुआ है। पहले चाचा-चाची के परिवार साथ रहती थी। बाद में हम लोग मेरे जेठ-जेठानी के साथ ९ वर्ष संयुक्त परिवार में रहे।

हमारे बच्चे एक साथ एक घर में बड़े हुए। मेरे दोनों बेटे भारत में दाद-दादी और नाना-नानी के साथ रहते थे। मेरे दोनों बेटों को भारत में सभी नजदीकी रिस्तेदारो से बहुत लगाव है। वह दोनों भारत जाने के लिए हमेशा उत्सुक रहते हैं। हिंदी यू.एस.ए. के माध्यम से हमको एक बड़े परिवार से जुड़ने का मौका मिला है। मेरे माता-पिता यहाँ अमेरिका में अपने नाती को हिंदी यू.एस.ए. की कक्षा में जाते देखकर बहुत आनंदित होते हैं। वह हमारे बच्चों को पाठशाला में भारत के राष्ट्र गीत गाते देख कर गर्व अनुभव करते हैं। हिंदी यू.एस.ए. का परिवार हमारे बच्चों को सिखाता है कि हम एक बड़े "भारतीय परिवार" का हिस्सा है। मैं ईश्वर से पार्थना करती हूँ कि हिंदी यू.एस.ए. का परिवार अमेरिका में रहने वाले भारतीय बच्चों को हमेशा अच्छी प्रेरणा देता रहे।

जय हिन्द।

परिवार - रिश्ते नातों का चक्र

नमस्ते, मैं **नीलम दलवी**, मेरे परिवार के साथ अमेरिका के कनेटिकट राज्य में साउथ विंडसर शहर में रहती हूँ। मेरे परिवार में मेरे पति, बड़ी बेटी (१४ साल) और छोटी बेटी (९ साल) है। मैं एवन हिंदी यू.एस.ए. में प्रथमा-१ स्तर की अध्यापिका हूँ। अपने देश से और परिवार से दूर जब यहाँ रहने आए तो शुरुआत के दिन हमारे लिए बहुत कठिन थे। साल दो साल अपनों को न मिलना बहुत दुःख देता था। धीरे-धीरे आसपास के लोगों से जान पहचान हुई और दोस्त परिवार मिला। आज अपने बच्चों को अपना परिवार, संस्कृति और भाषा सिखाने के उद्देश्य से हिंदी यू.एस.ए. के परिवार से जुड़ गए। इतने बड़े परिवार में शामिल होकर अपने देश और परिजनों से दूर रहने का दुःख कम हो गया है। इस स्नेह और अपनेपन के लिए मै हिंदी यू.एस.ए. परिवार की बहुत आभारी हूँ।

जब एक नन्ही सी बच्ची अपने माता-पिता की लाड़ली, प्यारी सी गुड़िया इस दुनिया में आयी, तो आँख खोलते ही उसने अपने सामने देखा तो वे थे उसके माता-पिता "उसका अपना परिवार"। उसके माता-पिता ने उस बच्ची को अपने परिवार के बाकि सदस्यों से परिचित कराया। उसमें उसके अपने भाई, बहन, दादा, दादी, नाना, नानी, चाचा, चाची, बुआ, फूफा, मामा, मामी, मौसा और मौसी आदि रिश्तों से पहचान हो गयी। उस बच्ची के लिए यह परिवार ही उसकी पूरी दुनिया थी, "रिश्तों की दुनिया"। यह परिवार सिर्फ उसकी बुनियादी आवश्यकताओं को ही पूरा नहीं करता था, बल्कि वह उसके हर सुख दुःख में उसके साथ खड़े रहके उसकी हिम्मत बढ़ाता था, उसको जीने के लिए ताकत दिलाता था। उसको अपने परिजनों को प्यार और आदर देना, उनका सहारा बनना सिखाता था। इन्हीं के सहारे उस बच्ची ने चलना, दौड़ना, बोलना सीखा। थोड़े ही सालों में उसने जब पाठशाला के लिए बाहर की दुनिया में कदम रखा, तो उसे अपने परिवार से अलग एक और दुनिया मिली, जिसमें उसने अपने गुरुजनों से और सहेलियों से वही स्नेह और अपनापन पाया जो उसे अपने परिवार से मिल रहा था। धीरे-धीरे ये बाहरी दुनिया के लोग उसको अपने परिवार के जैसे लगने लगे। जैसे-जैसे साल बीतने लगे, उसके आसपास के इन्हीं रिश्तों ने उसे बड़े होने का आत्मविश्वास दिलाया। फिर एक दिन आया जब उसका परिवार उसकी शादी के बारे में सोचने लगा। उसकी शादी होने के बाद एक नया सदस्य उसके परिवर में शामिल हुआ, वे थे उसके पति। पति के साथ-साथ वह लड़की उनके परिवार से भी जुड़ गयी। यहाँ वह और कई नए रिश्तों से परिचित हुई, जैसे सास-ससुर, देवर, ननद। अब उसके अपने परिवार में मायके के साथ ससुराल के परिवार का भी समावेश हुआ। परिवार के इन रिश्ते नातों को संभालना और सहेज कर रखना उसके जीवन में आनंद दिलाता गया। वह खुद को इन रिश्तों की दुनिया में सुरक्षित पाने लगी। रिश्तों को निभाते निभाते एक समय आया जब वह अपने बच्चों को जन्म देकर माँ बन गयी। एक दिन जहाँ से बच्चे के रूप में उसने अपना जीवन शुरू किया था, आज उसने अपने बच्चों को जीवन देकर उन्हें उनके परिवार से परिचित कराया। जीवन में इन रिश्ते नातों का चक्र ऐसे ही चलता रहता है। अपना परिवार ही है जो हमें जीने के लिए उद्देश्य दिलाता है, हमारा सहारा बनता है। जीवन का सफर परिवार के बिना अधूरा है।

अपनी धरोहर, अपनी पहचान - अभिभावक की भूमिका

मेरा नाम अदिति चौधरी है और मैं हिन्दी यू.एस.ए. में उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ। मुझे पेंटिग, स्विमिंग और म्यूजिक का शौक़ है।

मैं भारत में पैदा नहीं हुई, इसीलिए मैं अपने माता-पिता की तरह भारत को अनुभव नहीं कर पाती हूँ, जो उनकी स्मृति में है, परन्तु मैं अपने माता-पिता की आभारी हूँ जो मुझे और मेरी बहन को प्रत्येक साल भारत ले जाते हैं। जब भी हम लोग भारत जाते हैं, मेरे माता-पिता यह सुनिश्चित करते हैं कि मैं अपने रिश्तेदारों से जरूर मिलूँ। मेरे सारे करीबी रिश्तेदार भारत में ही रहते हैं। मुझे उन लोगों से मिलना अच्छा लगता है और मैं यह अनुभव करती हूँ कि उनका रहन-सहन और उनका खान-पान हम लोगों से कितना अलग है।

मेरे माता-पिता बिहार और झारखण्ड से हैं। वहाँ का खान-पान एक जैसा ही है। मेरे पसंदीदा व्यंजनों में से लिट्टी, चोखा, और दाल पिट्टी हैं। मेरी संस्कृति का एक अन्य बहुत महत्यपूर्ण हिस्सा है मधुबनी पेंटिंग जो अपनी जटिलता और विस्तार के लिए विश्व प्रसिद्ध है। प्रत्येक पेंटिंग की अपनी एक अनूठी कहानी होती है। यह मुख्यतय देवताओं और प्रकृति के बारे में होती है। जब भी मैं अपने भारत देश के बारे में सोचती हूँ तो मुझे वहाँ के दर्शनीय स्थान, वहाँ का खान पान सब याद आता है, जो कि अब मेरे जीवन का एक अटूट हिस्सा बन चुका है।

हम लोग यह भी कोशिश करते हैं कि प्रत्येक वर्ष जब हम भारत जायें, तो कोई न कोई पर्यटक स्थल पर भी जरूर जायें। अभी मुझे बिहार, झारखण्ड, राजस्थान, दिल्ली, आगरा और पंजाब की संस्कृति को नजदीक से देखने का अवसर मिला और वहाँ के खान-पान के आनंद का भी अवसर मिला। अगली बार हम लोग भारत के किसी और हिस्से में जायेंगे और वहाँ के बारे में भी जानेंगे। मुझे भारत की यात्रा काफी अच्छी लगती है। हम लोग बीमार भी हो जाते हैं पर फिर भी अगले साल भारत जाने का इन्तजार करते हैं। भारत के इतिहास के बारे में जानने के लिए वहाँ जा कर ही जानना ज्यादा अच्छा है।

मुझे भारत में सभी पर्व त्यौहार के समय में भी जाने की इच्छा है। अभी तक मुझे सिर्फ होली पर ही वहाँ जाने का अवसर मिला है, पर मैं दिवाली दशहरे और छठ के पर्व पर भी जाना चाहती हूँ। होली पर जब मैं वहाँ गयी थी तो मुझे बहुत मजा आया। मैं और मेरी छोटी बहन दिन भर रंग खेलती रही और तरह-तरह के स्वादिष्ट खाने का आनंद लेती रही। मुझे किसी ने रंग से खेलने पर भी डांटा नहीं। मैं समझ सकती हूँ कि होली की तरह वहाँ के अन्य पर्वों पर भी बहुत आनंद आता होगा। मैं अपने त्योहारों के द्वारा अपने धर्म और संस्कृति को समझना चाहती हूँ।

मैं अपने रिश्तेदारों से हिंदी में ही बात करती हूँ। इस कारण सभी मुझ से बात करते हैं और अब तो मेरे थोड़ी गलत हिंदी बोलने पर कोई हँसता भी नहीं है। सभी मुझसे हिंदी में ही बात करते हैं। हिंदी यू.एस.ए. के कारण ही मैं हिंदी में लिख पढ़ भी पाती हूँ और भारत को घूमने और समझने में इस वजह से काफी मदद मिलती है।

साऊथ ब्रुन्सविक, उच्चत्तर-२, अ

परिवार के साथ बिताये कुछ क्षण
मुहावरे और लोकोक्तियों के संग

कविता प्रसाद, उन्नति जैन

हिंदी भाषा में मुहावरे बहुत रुचिकर होते हैं। मुहावरों का उपयोग करके हम अपनी बात कुछ बड़ी आसानी से कम शब्दों में ज्यादा अच्छी तरह से समझा सकते हैं। बातचीत के दौरान मुहावरों का उपयोग भाषा को प्रभावशाली बनाने के साथ-साथ रुचिकर भी बना देता है, किन्तु इनका सही प्रयोग अत्यधिक आवश्यक है, अन्यथा कही गयी बात का अर्थ बिलकुल बदल जाता है। उच्चस्तर-२ कक्षा के विद्यार्थी अपने परिवार के साथ बिताये कुछ क्षणों एवं घटनाओं का विवरण दे रहे हैं, जहाँ उन्होंने अपने विचारों को सही रूप से प्रकट करने के लिए मुहावरों का कुशल प्रयोग किया है।

आरव हाथिरामानी

दो साल पहले की घटना है, जब मेरे पापा के पास एक पुराना फोन था। मेरी मम्मी और मैंने विचार किया कि हमें पापा के लिए नया फोन खरीदना चाहिए। हमें एक नया और सस्ता फोन चाहिए था। हमने अपने मित्रों से राय ली। हमारे एक विश्वसनीय मित्र ने हमें एक ऑनलाइन खरीददारी की वेबसाइट के बारे में बताया और हम उस वेबसाइट पर फोन देखने लगे। एक दिन हमे अपने पसंद का एक फोन दिखा जिसकी कीमत ठीक ठाक थी। हमने उस फोन को आर्डर कर के खरीद लिया। फ़ोन जब घर आया तो मैं बहुत उत्साहित था। मै पहले दिन दो घंटे फोन के साथ खेला। पर दूसरे ही दिन उस में कई दिक्कतें आने लगीं। जांच करने पर हमें पता चला कि वह फोन नकली था। उस फोन की वेबसाईट ने बड़ी आसानी से हमारी **आखों में धूल झोंक दी** थी।

आन्या सुभेदार

मैं अपने परिवार से बहुत प्यार करती हूँ। हफ्ते में एक दिन हम सभी लोग एक साथ बैठ कर ताश खेलते हैं। मुझे इस दिन का इन्तजार बेसब्री से रहता है क्यूंकि इस खेल की मैं चैम्पियन हूँ। मुझे इसमें कोई भी हरा नहीं पाता है और मेरी चाल देख कर मेरे माता-पिता **दांतों तले उँगलियाँ दबा लेते** हैं। मैंने यह खेल अपने आप ही सीखा है।

ईशा श्रीवास्तव

विगत गर्मी की छुट्टियों में मैं और मेरा परिवार ह्यूस्टन गया था। वहाँ मुझे और मेरे छोटे भाई को एक राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में भाग लेना था। मैंने स्पेलिंग बी में और मेरे छोटे भाई ने वोकैब्युलरी बी में भाग लिया था। हम दोनों ने प्रतियोगिता की तैयारी के लिए **दिन रात एक कर दिया** था। मुझे जब पता चला कि प्रतियोगिता के बाद हम दो दिन और रुककर ह्यूस्टन घूमेंगे, तो मैंने अपने भाई से खुश होकर कहा, "**यह तो एक पंथ, दो काज** जैसा हो गया!"।

ईशा पद्ये :

एक बार हम हिंदी चलचित्र देखने के लिए थियेटर गए। मुझे याद है कि वह शुक्रवार का दिन था। बहुत भीड़ थी। टिकिट लेने के बाद हम जब थियेटर के अंदर पहुँचे। काफी सारी कुर्सियों में पहले से लोग बैठे थे। हमने देखा की पीछे की कतार में काफी सारी कुर्सियां खाली थी पर किसी ने शाल और अन्य सामान उन पर कब्जा करने के लिए रखा था। जब हमने वहाँ बैठने की कोशिश की तो आगे बैठे लोगों ने हमें मना किया । फिर भी हम लोग शाल उठा कर बैठ गए और मेरे पिताजी ने कहा की "**जिसकी लाठी उसकी भैंस**"।

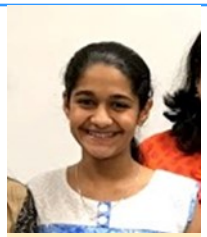
लेखा राकुण्डलिया

मेरा परिवार दिवाली का त्यौहार बड़ी धूम धाम से मनाता है। हम अपने करीबी दोस्तों के परिवार के साथ मिल कर बहुत उल्लास के साथ उत्सव मनाते हैं। हमारे बहुत सारे मित्र हैं जिनको हम अपने घर उनके परिवार के साथ आमंत्रित करते हैं। मेरे माता-पिता जी दिवाली के उत्सव की तैयारी में **दिन रात एक कर देते** हैं। हम नाना प्रकार के दिलचस्प सामूहिक खेल खेलते हैं और हर तरह के व्यंजन और पकवान बनाते हैं। बहुत हँसी ख़ुशी का वातावरण होता है। नए-नए उपहार और खाने की चीजें मिलती हैं बहुत सारे नए दोस्त भी बनते हैं। दिवाली का त्यौहार का मतलब है खुशी का त्यौहार।

मीरा बालाजी

मैं और मेरा परिवार दूरदर्शन देखना बहुत पसंद करते हैं। हमारा पसंदीदा कार्यक्रम "सुपर सिंगर" है। इस कार्यक्रम में बहुत सारे लोग भाग लेते हैं और गाना गा कर अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। कुछ बहुत अच्छा गाते हैं और कुछ बहुत बेसुरा। सभी लोग सुपर सिंगर की पदवी पाने के लिए होड़ में लगे रहते हैं। मैं जब भी यह कार्यक्रम देखती हूँ तो मुझे लोकोक्ति याद आती है -**एक अनार सौ बीमार**।

नलिनी जैन

जब भी मेरा पूरा परिवार "देव एंड बस्तर" जाते हैं तो बहुत मजा आता है। हम वहाँ ढेर सारे खेल खेलते हैं, मगर हमारा पसंदीदा खेल है जिसमें हम एक पहिये को घुमाते हैं और फिर उसमें से टिकिट निकलता है। ढेर सारे टिकट देख कर मैं और मेरी बहन **ख़ुशी से फूले नहीं समाते** क्योंकि उन टिकट के बदले हम उपहार लेते हैं। देव एंड बस्तर जाने के बाद हम डोमिनोस जाते हैं और सारा परिवार एक साथ बैठ कर पिज्जा खाते हैं।

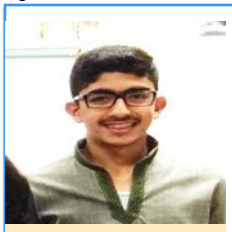
निहाल भोजवानी

एक बार मैं और मेरा परिवार न्यू यॉर्क गए। जब हम शहर के अंदर पहुँचे तो मैंने आसमान में एक हेलिकोप्टर उड़ते देखा। एक दम से मुझे हेलिकोप्टर से शहर देखने का विचार कौंधा। जब मैंने अपने पिताजी से पूछा तो उन्होंने मना कर दिया। परन्तु मेरे निरंतर जिद्द करने पर वे मान गये। हेलिकोप्टर सवारी का टिकट लेने के लिए हमें एक ऊँची इमारत पर जाना था। जब हम वहाँ पहुँचे तो टिकट देने वाले ने बताया कि एक टिकट का दाम एक सौ पचास डौलर है। यह सुन कर मरे पिताजी एक दम भड़क गए और मुझसे बोले "हम न्यू यॉर्क पास से देखने के लिए आये हैं दूर से नहीं'। यह सुन कर मैंने बोला कि "**अंगूर खट्टे हैं**"।

सिमरन बिडये

यह बीते हुऐ त्यौहार के समय की ही बात है। मैं और मेरा भाई दोपहर घर पर थे, तभी दरवाजे की घंटी बजी। मैंने डर डर के दरवाजा खोला तो यू.पी.एस. का ट्रक जा रहा था और दरवाजे पर बहुत ही बड़ा अमेजन का बक्सा पड़ा था। हम दोनों मिल कर वह बक्सा घर में ले आये। वह बक्सा उतना भी भारी नहीं था। हमे बिल्कुल अन्दाजा नहीं था कि अंदर क्या होगा। मेरे भाई को लगा की उसका टेनिस का सामान होगा। तो मुझे लगा मेरे क्रिसमस के तोहफ़े होंगे। हमने पापा को फोन किया तो उन्हें भी अंदाजा नहीं था कि क्या होगा। जब पापा ने बक्सा खोलने को कहा तो हम दोनों काफी उत्साहित हुए। जब अंदर देखा तो बहुत सारा कागज़ था। उसे निकाला तो देखा की अंदर दो छोटे एयर फ़िल्टर थे जो पापा ने मंगाए थे। देख कर हम बहुत हँसे। यह तो "**खोदा पहाड़ निकली चुहिया**" इस लोकोक्ति का अच्छा उदाहरण निकला।

समीर वर्मा

जब मैं सात साल का था मैं पढाई में हमेशा अव्वल आता था, किन्तु मेरा एक दोस्त हमेशा पढ़ाई में पीछे रहता था। एक दिन कक्षा में वह कुछ भी नहीं लिख रहा था। मेरे पूछने पर उसने कहा कि उसे कुछ समझ नहीं आ रहा है। मैंने पूछा कि तुमने गृह कार्य किया तो उसने जबाब दिया नहीं। वह घर पर खेल रहा था। मैंने मन में सोचा कि '**जैसी करनी वैसी भरनी**'।

श्रेयस मेनन

मैं और मेरा परिवार बाहर खाना पसंद करते हैं। हमें भोजनालय जा कर बहुत मजा आता है और मेरी माँ को आराम मिल जाता है। हर महीने हम एक नये भोजनालय में जा कर खाना खाते हैं। मेरे माता-पिताजी को भारतीय व्यंजन खाना पसंद है, लेकिन मुझे इटालियन खाना ज्यादा भाता है। मेरा भाई अपने स्वास्थ्य के प्रति काफी सजग है और वह सिर्फ स्वास्थ्यवर्धक खाना खाना चाहता है। मेरी माता का पसंदीदा भोजनालय चोप्सस्टिक है। जब भी हम वहाँ खाने जाते हैं हम सब बस **उँगलियाँ चाटते रह जाते** हैं।

यशी श्रीवास्तव

मेरे परिवार में मेरी एक मौसी जी काफी बडबोली हैं। वे हमेशा सबसे कहती हैं कि वे सबसे अच्छा खाना बनाती हैं। एक बार मेरी बहन के जन्मदिन के उपलक्ष में हमारे घर पर दावत थी। बहुत सारे मेहमान और रिश्तेदार आये हुए थे। उस दिन हमारी खाना बनाने वाली आंटी बीमार थीं और खाना बनाने नहीं आईं। सब लोग परेशान होने लगे। इतने में मेरी माँ ने मेरी मौसी से कहा कि क्यों न वे खाना बना दें। मेरी मौसी रसोई घर में गयीं और थोड़ी ही देर में शिकायत करने लगीं कि यहाँ तो कुछ भी अच्छा सामान नहीं है, इसलिए वे खाना नहीं बना सकतीं। हमने एक दूसरे को देखा और सोचा "**नाच न जाने आंगन टेढ़ा**"।

संयुक्त परिवार

मेरा अनुभव

मेरा नाम आरुशी मालिक है। मैं सातवीं कक्षा में हूँ और मैं पिछले आठ वर्ष से हिंदी यू.एस.ए. पाठशाला जा रही हूँ। मैं उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ और हिंदी पाठशाला में यह मेरा आखरी वर्ष है

गर्मी की छुट्टियों में मैं भारत गई और मुझे अपने दादा-दादी, चचेरे भाई, चाचा-चाची, ताऊजी और ताईजी सहित अपने विस्तृत परिवार के साथ रहने का शानदार अवसर मिला। हम वहाँ दो महीने तक रहे और हमने इस बार भारत घूमने की बजाए परिवार के साथ अमूल्य समय एक साथ बिताने का फैसला किया। संयुक्त परिवार में एक अनकहा पदानुक्रम है, जो परिवार के हर सदस्य को समझ में आता है। घर में सभी दादाजी और दादीजी का बहुत आदर करते हैं। मेरे दादाजी और दादीजी ने जीवन के बारे में हमें नई चीजें सिखाने के लिए अपने अनुभव की कहानियाँ सुनाईं। मेरे चाचा-चाची ने वही बातें अपने नए अनुभवों से सिखाईं। उन्होंने कितनी ही अच्छी बातें हँसी-मजाक में सिखा दीं। सभी ने मेरा और मेरे भाई का बहुत ख्याल रखा। मेरे माता-पिता वहाँ जाकर परिवार की गतिविधियों में ऐसे जुड़ गए मानो वे वहीं रहते हों। हम सब रोज सुबह और रात को एक साथ खाना खाते थे और मेरे पिताजी, चाचाजी, ताऊजी लम्बी चर्चा करते थे। मुझे अपने पिताजी को अपने परिवार से बात करते और हँसते देखकर बहुत अच्छा लगा। मेरी चाची और मैं एक विशेष संबंध रखते हैं। मेरे चाचा हमेशा मुझे और मेरे चचेरे भाई का मज़ाक उड़ा रहे थे। इतने लंबे समय तक अलग होने के बाद भी उन्होंने मुझे बहुत प्यार दिया। यह जानने के साथ कि मेरे पास केवल 2 महीने ही थे, मैंने हर एक पल का आनंद लिया। मैंने वहाँ रहकर संयुक्त परिवार की महत्ता को समझा। अमेरिका वापस आने के बाद मुझे उन सब की बहुत याद आई। मैं अगली बार उनके साथ अधिक समय बिताना चाहती हूँ।

तेजस भारद्वाज

पिछले वर्ष मैं और मेरा परिवार गर्मी की छुट्टियों में सिक्स फ्लैग घूमने गए। मैंने वहां के किंगदा रोलर कोस्टर के बारे में बहुत सुन रखा था कि वह विश्व का सबसे ऊँचा रोलरकोस्टर है। हम सभी लोग उस पर झूलने के लिए बहुत उत्साहित थे। सौभाग्य से हमें पहली सीट मिली। मैं अपने पिताजी के साथ बैठा और मेरी माँ पिछली सीट पर बैठीं। जैसे ही झूला उपर गया और तेजी से नीचे आया हम सबको डर से अपनी **नानी याद आ गयी**।

परिवार के साथ यादगार यात्रा

कविता ठाकुर, एडिसन पाठशाला

नमस्ते! मेरा नाम कविता ठाकुर है। हिंदी यू.एस.ए. में शिक्षिका के रूप में यह मेरा चौथा वर्ष है। हिंदी के आलावा में संगीत और कला में रूचि रखती हूँ।

अपनों के साथ बिताया हुआ समय बहुत ही अच्छा लगता है। इस बार हमारी भारत की यात्रा कुछ ऐसी ही थी। हम सब साथ मिलकर अंडमान निकोबार गए थे। यह एक बहुत ही खूबसूरत द्वीप है। वहाँ के समुन्दर का पानी स्वच्छ और नीला है। सुबह का सूर्य ऐसा लग रहा था जैसे समुन्दर से आग का गोला निकल रहा हो, और शाम को उसी सूर्य को ढ़लते देख ऐसे लगा जैसे दिन भर की तपश को मिटाने समुन्दर के शीतल पानी में डुबकी लगाने जा रहा हो।

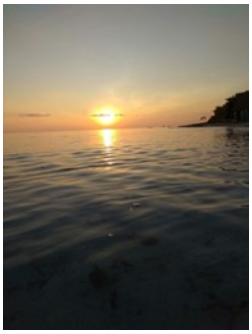

इस यात्रा के दौरान हम सेल्यूलर जेल देखने गए थे। इसे काला पानी के नाम से भी जाना जाता है। यह जेल अंडमान निकोबार द्वीप की राजधानी पोर्ट ब्लेयर में बनी हुई है। यह अंग्रेजों द्वारा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को कैद रखने के लिए बनाया गया था।

मेरी ८३ वर्ष की माँ, जो आसानी से चल फिर नहीं सकती, हमारे साथ चली थी। उन्होने हमारे साथ जल-क्रीड़ा जैसी गतिविधियों में भी भाग लिया। गिलास-बॉटम बोट की यात्रा का भी खूब आनंद लिया। मेरे लिए यह क्षण बहुत ही अविस्मरणीय था। इंसान उम्र से नहीं, दिल से जवान होता है।

हमारे प्रेरणास्रोत

मेरा नाम रश्मि चौधरी है। मैं झारखंड से हूँ। मैं हिन्दी यू.एस.ए. मुनरो शाखा में पिछले सात साल से मुख्य शिक्षिका के रूप में पढ़ा रही हूँ। मुझे पेंटिंग और संगीत से लगाव है। मैं एलीमेंट्री एवं मिडिल स्कूल के छात्रों को पेंटिंग एवं स्केचिंग सिखाती हूँ। हिन्दी यू.एस.ए. मुनरो शाखा में मैं मध्यमा-२ स्तर के बच्चों को पढ़ाती हूँ। हमारे कुछ विद्यार्थियों ने अपने आदर्श के बारे में कुछ विशेष बातें बताई हैं।

मेरा नाम **प्रियंका वीरा** है। मेरे प्रेरणास्रोत मेरे चाचा जी हैं। वे एक चिकित्सक और सफल वैज्ञानिक भी हैं। उनका अनुसन्धान उत्परिवर्तन के क्षेत्र में है जो एक प्रसिद्ध पत्रिका में छपा है। वे बहुत बुद्धिमान और विचारशील हैं। उनको प्रकृति से बहुत लगाव है और वे ट्रैकिंग के बहुत शौकीन हैं। मैं उनसे बहुत प्रभावित हूँ ओर उनके जैसा बनना चाहती हूँ।

मेरा नाम **अन्विता दयापा** है। मेरे प्रेरणास्रोत मेरे माता-पिता हैं और मैं उनकी आभारी हूँ। भले ही मेरी माँ रोज ऑफिस जाती है, परंतु वे प्रतिदिन मेरे लिए खाना बनाती हैं और मुझे लाक्रोस और अन्य गतिविधियों में ले जाती हैं। मेरे पिता न्यूयोर्क जाते हैं और बहुत व्यस्त रहते हैं। फिर भी वे मेरे होमवर्क में मेरी मदद करते हैं और मुझे हिंदी स्कूल लेकर जाते हैं। मैं उनसे बहुत प्रभवित हूँ और मैं उनके जैसा बनना चाहती हूँ।

मेरा नाम **अनन्या चौधरी** है और मैं नौ साल की हूँ। आज मैं आप लोगो को मेरी नानीजी के बारे में बताती हूँ जो मेरी प्रेरणास्रोत भी हैं। वे बहुत प्यार से बहुत स्वादिस्ट खाना बनाती हैं। वे कभी भी गुस्सा नहीं होती हैं और सबसे बहुत प्यार से मिलती हैं। यही स्वभाव सबको उनकी ओर आकर्षित करता है। वे साठ साल की हैं परन्तु अभी भी बहुत मेहनती हैं। मेरी नानी जी मुझे मेरी माँ जैसी लगती हैं। मैं उनसे बहुत प्रभावित हूँ और मैं उनकी जैसा बनना चाहती हूँ।

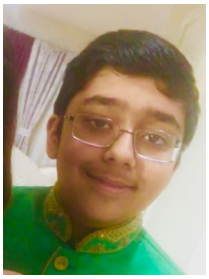

मेरा नाम **आयुष मंडल** है। प्रतिदिन हम ऐसे लोगों से मिलते हैं जो अच्छा काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, लेकिन केवल कुछ ही चुनिंदा लोग हैं जो आपके चेहरे पर मुस्कुराहट देखकर या आपकी प्रगति को देखकर अत्यधिक आनंदित होते है। वे आपके माता-पिता हैं। वे निश्चित रूप से मेरे आदर्श हैं। मेरे माता-पिता हमेशा मेरी मदद करना चाहते हैं। मैं उनकी तरह ही बनना चाहता हूँ। मैं उनकी उम्मीद पर खरा उतरना चाहता हूँ।

मेरा नाम **श्रेया केंकल** है। मेरे जीवन में कई प्रेरक लोग हैं। उनमें से मेरे दादाजी विशेष हैं। वे अस्सी साल के हैं परन्तु अभी भी स्वस्थ और प्रेरणादायक हैं। वे हर रोज योगा करते हैं। वे इंजीनियर थे और अच्छे गायक भी थे। उनको टेनिस खेलना अच्छा लगता था। मुझे याद है तीन साल पहले मुझे पानी से बहुत डर लगता था, उन्होंने ही मुझे तैरना सिखाया। आज मैं स्विमिंग टीम में हूँ। मैं उनकी तरह बनना चाहती हूँ।

ऐशना जैन

परिवार

उच्चतर-१, चैरी हिल

मैं ऐशना जैन उच्चस्तर-१ की छात्रा हूँ और चैरी हिल हिन्दी पाठशाला में पिछले सात सालों से पढ़ रही हूँ। मैं सातवीं कक्षा की छात्रा भी हूँ और मुझे किताबें पढ़ने में अत्यंत रुचि है। मुझे अपने परिवार और सहेलियों के साथ समय बिताना बहुत पसंद है।

परिवार व्यक्ति के जीवन का एक अभिन्न अंग होता है। मेरा भी एक छोटा चार सदस्यों का परिवार है, जिसमें मेरे पापा, मेरी मम्मी, मैं और मेरी बड़ी बहन हैं। हम अमेरिका में रहते हैं। मेरे परिवार के बाकी सदस्य, मेरी दादी जी, नानी जी, नाना जी, ताऊजी, ताईजी और अन्य भाई बहन भारत में रहते हैं। हम लोग समय-समय पर उनसे मिलने भारत जाते रहते हैं। वे लोग हमारे साथ समय बिताने अमेरिका भी आते हैं। हमें भारत में सभी रिश्तेदारों से मिलकर बहुत अच्छा लगता है।

मैं बारह साल की सातवीं कक्षा की छात्रा हूँ और मेरी बड़ी बहन सोलह साल की है। हम बहनें एक दूसरे के बहुत क़रीब हैं और एक दूसरे की अच्छी सहेलियाँ भी हैं। मुझे नृत्य करना, किताबें पढ़ना और दौड़ना पसंद है। मेरे परिवार में हम सब एक दूसरे का आदर करते हैं। मैं और मेरी बहन अपने परिवार में बहुत ख़ुश और सुरक्षित महसूम करते है क्योंकि यहाँ हमें प्रेम मिलता है, हमारा ध्यान रखा जाता है और हमारी सभी ज़रूरतों को पूरा किया जाता है। वैसे तो हम सभी त्योहारों और विशेष अवसरों को अपने मित्रों के साथ मिलकर बड़ी धूम धाम से मनाते हैं, परंतु हमारा सबसे प्रिय त्योहार दिवाली है। दिवाली पर हम पूजा करते हैं और अपने पूजाघर की बहुत सुंदर सजावट भी करते हैं। उस दिन घर में स्वादिष्ट भोजन और प्रसाद बनता है। हम छुट्टियाँ में अलग अलग जगह घूमने भी जाते हैं और बहुत मस्ती करते हैं। एक अच्छा और स्वस्थ परिवार एक अच्छे समाज को बनाने में मदद करता है और अच्छे समाज से ही अच्छे देश का निर्माण होता है।

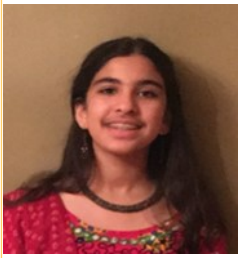

मेरा नाम पावनी भारद्वाज है। मैं सातवीं कक्षा में हूँ। एडिसन हिन्दी पाठशाला में मैं उच्चस्तर-२ में पढ़ती हूँ। मैं स्वयंसेवक के रूप में हिंदी पाठशाला से जुड़े रहना चाहती हूँ। मेरे परिवार में हम सब एक दूसरे की मदद करते हैं। मेरा भाई मुझे परियोजना बनाने और लिखने में सहायता करता है। मम्मी मुझे हिंदी और गणित पढ़ाती हैं। मम्मी सारे घर को साफ रखती हैं और घर को संभालती हैं। पिताजी मुझे रोचक वीडियो गेम खेलने में मदद करते हैं। मैं कभी कभार भाई के लिए दोपहर में नाश्ता बनाती हूँ। अम्मा सबके लिए स्वादिष्ट पकवान बनाती हैं। बाबा हिंदी गृहकार्य में मेरी मदद करते हैं। हम सब घर के छोटे-मोटे काम करते हैं। मेरे परिवार में सब अपने तरीके से हाथ बटाते हैं और मुझे दूसरों की मदद करने के लिए प्रेरित करते हैं।

हिन्दी यू.एस.ए. परिवार में मेरा अनुभव

श्रेया भरद्वाज

नमस्ते, मेरा नाम श्रेया भरद्वाज है। मैं ईस्ट ब्रनस्विक हिंदी पाठशाला में मध्यमा-३ कक्षा की युवा कार्यकर्ता हूँ। वहाँ पर मैं सारिका आंटी की कक्षा में पढ़ाने में सहायता करती हूँ। मैं बच्चो का गृहकार्य भी जाँचती हूँ और जो भी गलतियाँ होती हैं, उन्हें समझती हूँ। कई बार मैं दूसरी कक्षाओं में भी जाती हूँ, जहाँ मैं हिंदी शब्द सम्बन्धी खेल खिलाती हूँ। मैंने इस अनुभव से बहुत कुछ सीखा है, जैसे हमें बहुत धैर्य रखना चाहिए। बच्चे तरह-तरह के होते हैं और हमें सब के साथ घुल मिलकर काम करना पड़ता है। हम सब कक्षा में एक परिवार समान हैं, और मुझे वहाँ बहुत अच्छा लगता है। मैं हिंदी स्कूल में पढ़ने के साथ-साथ, वहाँ के कार्यक्रमों में भी बढ़-चढ़ कर भाग लेती हूँ। पिछले साल जब हमारे यहाँ दिवाली उत्सव हुआ था, तब मैंने क्राफ्ट और दिया रंगने का एक स्टाल लगाया था। मैंने एक गुलाबी रंग की साड़ी पहनी और मुझे बहुत अच्छा लगा था, क्योंकि मैंने पहली बार साड़ी पहनी थी। बच्चों को दिया सजाना और रंगना बहुत अच्छा लगा और वे सब अपने दिये घर लेकर गए थे। मैं कई वर्षो से भरतनाट्यम और पियानो भी सीखती हूँ। आशा है कि मुझे आगे भी युवा कार्यकर्ता के रूप में बहुत अच्छे अनुभव होंगे और मैं इसी तरह अपना हिंदी का ज्ञान बढ़ाती रहूँगी और अपनी संस्कृति से जुड़ी रहूँगी। धन्यवाद!

मेरी रूचि: टायक्वोंडो (Taekwondo)

मेरा नाम सक्षम भरद्वाज है। मैं मध्यमा-३ में पढ़ता हूँ। मैं पिछले सात साल से टायक्वोंडो सीख रहा हूँ। आज मैं ब्लैक बेल्ट होल्डर हूँ। कई स्तर की बेल्ट परीक्षा पार करने पर ब्लैक बेल्ट मिलती है। मैं अब भी टायक्वोंडो जाता हूँ, क्योंकि मुझे वहाँ बहुत कुछ सीखने को मिलता है। हमारे मास्टर हमें हमेशा सब का सम्मान करना सिखाते हैं और इसीलिए कक्षा के आखिर में हम झुक कर सब को धन्यवाद देते हैं। मुझे वहाँ सारे दोस्त मिलते हैं और हम सब व्यायाम भी करते हैं। कभी-कभी मैं मास्टर के साथ छोटे बच्चो को फॉर्म भी सिखाता हूँ। फॉर्म माने अलग-अलग तरह से लड़ने की कलायें। हमें वहाँ पर आत्मसुरक्षा का भी प्रशिक्षण मिलता है। टायक्वोंडो केवल एक शौक ही नहीं है, परन्तु एक साधना है। मैंने टायक्वोंडो सीखते हुए उसका इतिहास भी सीखा है और कोरियाई गिनती भी सीखी है। कई साल लगातार परिश्रम करके मैं टायक्वोंड़ो में डिग्री लेना चाहता हूँ। टायक्वोंड़ो के माध्यम से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।

संयुक्त परिवार के लाभ

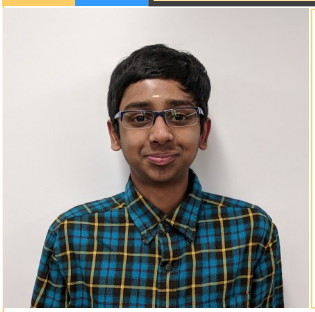

मेरा नाम कृष्णा नागराजन है। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला की उच्चस्तर-१ कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं जॉन पी. स्टीवंस हाई स्कूल में नवीं कक्षा का छात्र हूँ। मैं अपने माता-पिता के साथ, एडिसन में रहता हूँ। मुझे अन्य भाषाएँ सीखना बहुत पसंद है। मेरा मन पसंद विषय विज्ञान और गणित हैं।

मैंने अपने जीवन का अधिकाँश समय एक संयुक्त परिवार में रहते हुए बिताया है। भारत में मेरे घर में मेरे माता-पिता के अलावा मेरे नाना-नानी और मेरी दादी भी रहते थे। अमेरिका इससे बहुत भिन्न है। यहाँ पर अधिकतर एकल परिवार रहते है। संयुक्त परिवार के बहुत लाभ हैं, इसलिए मैं अपने परिवार को याद करता हूँ।

आज हम सब एक दूसरे से बात नहीं करते हैं। क्यों? क्योंकि हम सब अपने मोबाइल फ़ोन को ही देखते रहते हैं। यह बहुत गलत हैं क्योंकि घर और दुनिया में सारी लड़ाई का कारण हम सबका एक दूसरे से बात नहीं करना ही है। संयुक्त परिवार इस मुसीबत को हल करते हैं। संयुक्त परिवार में हम सब एक साथ मिलकर रात का खाना खाते हैं। इस समय हम एक दूसरे से बात करते हैं और यह हमारे मोबाइल को भी दूर से रखता है।

आज, पति-पत्नी दोनों ही दफ़्तर में काम करते हैं और उन्हें अपने बच्चों की देखभाल के लिए किसी की आवश्यकता पड़ती है। संयुक्त परिवार इस समस्या को भी हल करता है। घर में नाना-नानी या दादा-दादी रहते हैं और दिन में वे दूरदर्शन में धारावाहिक देखने के साथ-साथ बच्चों की देखभाल करते हैं। मेरे घर में मेरे नाना-नानी मेरी देखभाल करते थे। कभी-कभी मेरे ताऊजी भी मेरे घर आकर रहते और हमारे साथ गेंद खेलते थे।

तीसरा कारण, संयुक्त परिवार एक टीम की तरह कार्य करता है। परिवार के सभी सदस्य एक दूसरे की सहायता करते हैं। चूँकि संयुक्त परिवार में छोटे बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़े एक साथ रहते हैं, तो जब भी कहीं बाहर यात्रा पर निकलते हैं तब पहले से ही योजना बनाना आवश्यक हो जाता है। परिवार के सभी सदस्य अपने-अपने विचार और सुझाव बताते हैं और सभी एक टीम की तरह चर्चा में उठे हुए प्रश्नों का हल करते हैं, जैसे "बूढ़े और छोटों को कहाँ और किस समय विराम करना चाहिए?", "हम रात में कहाँ रहेंगे?" आदि। मेरे परिवार में भी हम सब हमारे परिवार के मंदिर जाने के लिए एक सप्ताह तक योजना बनाते हैं क्योंकि मेरे घर में मेरी दादीजी बहुत बूढ़ी हैं और उनके घुटने में दर्द है।

अंत में, संयुक्त परिवार में बढ़े लोग बच्चों के गृह-कार्य में भी मदद करते हैं। कभी-कभी कुछ गृह-कार्य कठिन होता है और माता-पिता अपने कार्यालय में काम कर रहे होते हैं। इस समय बच्चे के दादा-दादी या नाना-नानी उसकी मदद करते हैं या उनके भाई या बहन मदद करते हैं। मेरी मौसी के बेटे की दादी, उसके गृह-कार्य में मदद करती हैं।

यही सब कारण संयुक्त परिवार के लाभों को साबित करते हैं। तिरुक्कुरल में तिरुवल्लुवर कहते हैं कि "यदि कोई परिवार सदाचारी जीवन व्यतीत करता है और दूसरों को ऐसा करने में सहायता करता है, तो ऐसा परिवार, ऋषि के तपस्य से श्रेष्ठ है" संयुक्त परिवार ऐसा ही करता है।

चिड़ियाघर की तस्वीरें

ऐषिका घण्टे

मेरा नाम ऐषिका घण्टे है। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला की उच्चस्तर-१ कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं वुड्रो विलसन पाठशाला में सातवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मेरे अलावा मेरे परिवार में, मेरे माता पिता, और छोटा भाई हैं।

एक दिन मेरे मम्मी-पापा ने कहा, "आज हम न्यू यॉर्क के ब्रॉन्क्स ज़ू चलेंगे", और हम चलने की तैयारी करने लगे। वह मेरे भाई की, जो पांच वर्ष का था, पहली ब्रॉन्क्स चिड़ियाघर की सैर थी। हम न्यू जर्सी से अपनी कार में ब्रॉन्क्स के लिए निकले और जॉर्ज वॉशिंगटन पुल के रास्ते चिड़ियाघर पहुँचे।

हमने टिकटें खरीदीं और गाड़ी खड़ी कर अंदर गए। सबसे पहले हम पक्षियों को देखने गए। वहाँ हमने उल्लू, पेन्गुइन, अमरीकी बॉल्ड ईगल (चील), तोते और कई छोटे-बड़े अनोखे पक्षी देखे। उन सब में मेरा मनपसंद पक्षी पेन्गुइन था क्योंकि वह पानी में तैरने मे बहुत होशियार था और चलते समय डगमगाता बहुत प्यारा लग रहा था। वहाँ से आगे चलकर हम एशियाई अनुभाग में गए और वहाँ के बड़े क्षेत्र की सैर के लिए मोनोरेल में बैठे। मोनोरेल से हमने हाथी, गैण्डा, भालू और बारहसिंगा देखे। सैर समाप्त कर हम बाघ देखने गए। हमे शीशे की दूसरी ओर, बहुत पास, दो बाघ पानी में बैठे दिखाई दिए। यह दृश्य हमे बहुत रोचक लगा और हमने तस्वीरें खींची। इसके बाद हम कीट विभाग गए। हमने तरह-तरह की चींटियां, तिलचट्टे और झींगुर देखे। मेरी मम्मी को सिसकारते मेडागास्कर तिलचट्टे बिलकुल अच्छे नहीं लगे।

अंत में हम चिड़ियाघर के उपवन में तितलियाँ देखने गए। वहाँ कई जातियों की रंग-बिरंगी तितलियाँ उड़ रही थीं। एक तितली मेरे सिर पर भी आ बैठी और मेरे पापा ने उसकी एक तस्वीर खींची। उपवन देखने के बाद मम्मी-पापा ने घर वापस जाने का निर्णय लिया। फिर हम वापस गाड़ी में बैठ, न्यू जर्सी में अपने घर पहुँचे। मेरा भाई तस्वीरें देखना चाहता था और उसने पापा से कैमरा माँगा। वह अकेला बैठा तस्वीरें देख रहा था और थोड़ी देर बाद वह सहमा सा कैमरा वापस देने लगा और कुछ सकपकाया सा लग रहा था। जब पापा ने देखा, कैमरे की सारी तस्वीरें डिलीट हो गई थीं। मम्मी-पापा चकित और निराश हो गए पर भाई छोटा था इसलिए उसपर ज़्यादा गुस्सा नहीं हो पाए। तस्वीरें खोने के बावजूद भी हमारा समय मज़ेदार और यादगार रहा।

"शिक्षक और सड़क दोनों एक जैसे होते हैं, स्वयं जहाँ है वहीं पर रहते हैं, पर दूसरों को उनकी मंजिल तक पहुँचा ही देते हैं"

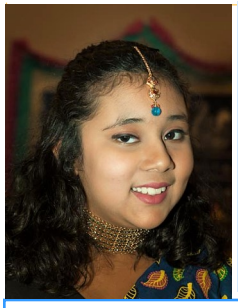

मेरा परिवार और दुर्गा पूजा

मेरा नाम सुहानी सेनगुप्ता है। मैं दस साल की हूँ। मैं एडिसन हिन्दी पाठशाला की उच्चस्तर-१ कक्षा में हूँ। मुझे चित्रकारी करना और कहानियाँ पढ़ना बहुत पसंद है।

हर साल हम कई भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय त्योहारों को मनाते हैं। अमेरिका में बंगाली समुदाय के लोग भी दुर्गा पूजा का जश्न मनाते हैं। मेरे माता-पिता ने मुझे सिखाया है कि दुर्गा पूजा को बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में मनाया जाता है। मैंने दुर्गा पूजा नाम की एक फिल्म भी देखी थी। माँ दुर्गा के दस हाथ हैं और वे एक विशाल शेर पर बैठती हैं। माँ दुर्गा महिषासुर नामक राक्षस से लड़ती है। माता दुर्गा की दो बेटियाँ, लक्ष्मी और सरस्वती और दो पुत्र, गणेश और कार्तिक हैं।

दुर्गा पूजा उत्सव बहुत ही सामाजिक उत्सव है। इसमें नृत्य, नाटक और सांस्कृतिक प्रदर्शन व्यापक रूप से आयोजित किए जाते हैं। मुझे दुर्गा पूजा पसंद है क्योंकि मैं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेती हूं और मेरे विस्तारित परिवार और दोस्तों के साथ जुड़ने का मौका मिलता है। मैं आशा करती हूँ कि यह दुर्गा माँ का चित्र आपको पसंद आएगा।

मेरा नाम अविकल्प श्रीवास्तव हैं। मैं उच्च स्तर -१ में पढ़ता हूँ। मेरे प्रिय शौक क्रिकेट खेलना तथा पुस्तक पढ़ना हैं।

मेरा परिवार

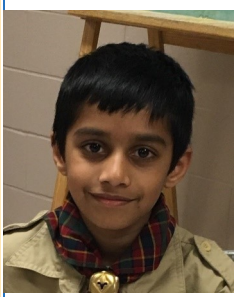

मेरा नाम अद्वय चवाथे है। पिछले साल ठंड की छुट्टियों में हम भारत यात्रा पर गए थे। भारत में मेरे नाना-नानी और दादा-दादी रहते हैं। मेरी बुआजी और उनका परिवार भी वहाँ रहता है। हम कुछ दिन उनके मुंबई के घर में रहे। मुंबई में हमने इंडिया गेट भी देखा। भारत में मेरा बहुत बड़ा परिवार है। मुझे भारत में अपने परिवार से मिलकर बहुत अच्छा लगा। मैं इस वर्ष भी भारत जाना चाहता हूँ।

परिवार एक आशीर्वाद

मेरा नाम भुमी पाटणी है। मै ग्यारह साल की हूँ और मै छठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं हिन्दी पाठशाला में पाँच साल से हिन्दी सीख रही हूँ। मुझे नृत्य करना बहुत अच्छा लगता है। मैं बड़ी होकर एक न्यूरोसर्जन बनना चाहती हूँ।

परिवार एक भगवान का आशीर्वाद है। मेरे परिवार में मेरे माता-पिता और एक बड़ा भाई है। मैं अपने परिवार से बहुत प्यार करती हूँ। मेरा परिवार हमेशा मुझे प्रोत्साहित करता है और सही सलाह देता है। मेरा परिवार हमेशा सुख और दुख में मेरा साथ देता है। मैं जब अपने परिवार के साथ होती हूँ मुझे किसी बात का चिंता नहीं होती।

मेरे दादा-दादी और नाना-नानी भारत में रहते हैं। पिछले वर्ष जब मैं भारत गयी थी, मुझे मेरे पूरे परिवार से मिलने का अवसर मिला। मैंने सब चचरे और ममेरे भाई-बहन के साथ बहुत मजे किये। मेरे दादा-दादी की शादी की ५०वीं सालगिरह थी। इस अवसर पर हमने एक कार्यक्रम का आयोजन किया। बहुत सारे महेमान आये थे। हमने नाच, गाना और बहुत मस्ती की। मैंने दादा-दादी के सम्मान में एक नृत्य प्रस्तुत किया। सब को बहुत अच्छा लगा। परिवार के साथ हम "शिखरजी" यात्रा पर गए थे। यह जैनों का सबसे बड़ा तीर्थ है। वहाँ का सफर हमने रेलगाड़ी में किया था। वह ३० घंटो की यात्रा मेरे लिए बहुत अच्छा अनुभव था। यात्रा में हमने बहुत मस्ती की। शिखरजी का मंदिर एक पहाड़ पर है। हम सबने ३५ किलोमीटर पैदल चल कर पहाड़ पर दर्शन किये। इतनी लंबी चढाई के बाद थकावट के बावजूद बहुत आनद आया। यह एक रोमांचकारी अनुभव था। यात्रा से आने के बाद हमारा अमेरिका वापस आने का समय हुआ। सब ने हमको बिदाई दी। लौटते हुए मेरा पूरा परिवार बहुत दुःखी था क्योंकि हमें उनकी बहुत याद आ रही थी। फिर उन सब मीठी यादों के साथ हम सब से विदा लेकर वापस आ गए। आज भी मुझे पूरे परिवार के साथ बिताए हुए पल बहुत याद आते हैं। इसीलिए कहते है परिवार का साथ होना ईश्वर का आशीर्वाद होता है। मुझे इतने अच्छे परिवार में जन्म देने के लिए मै भगवान का रोज धन्यवाद करती हूँ।

श्रेया अडुपा - परिवार का अर्थ

नमस्ते, मेरा नाम श्रेया अडुपा है और मेरी कहानी परिवार के बारे में है। सबके पास एक परिवार होता है जिसमें माता-पिता के अलावा शायद एक भाई-बहन होता है। आपका परिवार आपको प्रोत्साहित और प्रेरित करता है और समय-समय पर आपकी सहायता भी करता है। मैं यह लेख २६ जनवरी को लिख रही हूँ, जो हमें याद दिलाता है कि हमारे पूर्वजों ने इस देश को एकजुट किया ताकि हम सब एक परिवार की तरह एक साथ रह सकें।

मेरा परिवार - एक महत्वपूर्ण हिस्सा

मेरा नाम अन्या बंसल है। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला की उच्चत्तर-१ की छात्रा हूँ। मैं १२ वर्षीय हूँ और सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे किताबें पढ़ने का बहुत शौक है। मैं हिंदी स्कूल पिछले ७ वर्षों से आ रही हूँ।

मेरा परिवार मेरे जीवन का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है और मैं अपने परिवार को बहुत प्यार करती हूँ। मुझे मेरे परिवार से बहुत कुछ सीखने को मिलता है। मेरा परिवार छोटा सा है और हम सब मिलजुल कर रहते हैं। मेरे परिवार में कुल ४ लोग हैं। मेरे अलावा मेरे पिताजी, मेरी माँ और मेरी एक छोटी बहन है। मेरी बहन ७ साल की है और वह भी हिंदी स्कूल में पढ़ती है। मेरे पिताजी और मेरी माँ दोनों नौकरी करते हैं। हर साल मेरे दादाजी और दादी माँ गर्मी के मौसम में अमेरिका आते हैं और जब यहाँ बहुत ठण्ड पड़ती है तो वे भारत लौट जाते हैं। मुझे उनके आने से बहुत अच्छा लगता है। मेरे पिताजी की दो बहनें है और मेरी माँ के दो भाई हैं। उनका परिवार भारत में रहता है। हम हर दूसरे साल गर्मियों की छुट्टियों में भारत जाते हैं। वहाँ मेरे बहुत सारे रिश्तेदार हैं। मुझे उनके साथ बहुत मज़ा आता है। हम जब वहाँ से लौटते हैं तो बहुत दिनों तक वहाँ की बातें करते हैं। कभी-कभी तो ऐसा लगता है की अगर हम सब इकट्ठे रहते तो कितना अच्छा रहता।

मेरी भारत यात्रा

लक्ष्य गौर

नमस्ते मेरा नाम लक्ष्य गौर है। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला की उच्चत्तर-१ का छात्र हूँ। मेरे परिवार में चार लोग है। मैं, मेरी छोटी बहन, एवं मेरे माता-पिता। पिछले अगस्त महीने में हम सभी भारत गए थे। सबसे पहले मैं मेरी माता और बहन के साथ मेरी नानी के घर गया था। वहाँ मैं दुर्ग और रायपुर में घूमा था। वहाँ मैंने मेरे मामा के रेस्टोरेंट में कई प्रकार के व्यंजन खाए। वहाँ से हम भोपाल गए। भोपाल में मेरे दादा-दादी के साथ रहा। वहाँ मेरी बुआ, फूफाजी और दीदी को मिला। भोपाल में मैं अपने दोस्त के साथ बहुत घूमा। हमने फिल्मसिटी देखी एवं कई व्यंजन खाए। वहाँ से हम दिल्ली में मौसी के घर गए। दिल्ली से मौसी-मौसाजी, मेरे मौसेरे भाई-बहन एवं हम सभी आगरा गए। आगरे में हमने ताजमहल और आगरा का किला देखा। वहाँ हमने आगरा का पेठा खाया। मुझे ताजमहल बहुत सुन्दर लगा एवं आगरा का किला बहुत दिलचस्प लगा। आगरा से हम वृन्दावन और मथुरा गए। मथुरा में कृष्णा जन्मभूमी के दर्शन किये एवं दूसरे मंदिरो में भी गए। भारत यात्रा पर जाना मुझे बहुत अच्छा लगता है। मेरे परिवार एवं रिश्तेदार को मिलना मुझे अच्छा लगता है। मैं अगले वर्ष फिर भारत जाना चाहता हूँ।

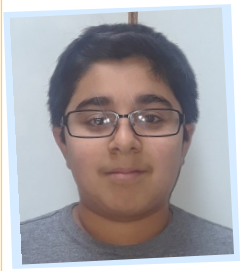

परिवार के साथ यात्रा

आदित्य शाहानी

नमस्ते, मेरा नाम आदित्य शाहानी है। मैं १३ साल का हूँ, और मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ।हिन्दी पाठशाला में मैं उच्चस्तर-१ कक्षा में पढ़ता हूँ। आज मैं आपको अपनी गर्मी की छुट्टियों के बारे में बताता हूँ, जब मैं अपने परिवार के साथ यूरोप गया था और हम एक क्रूज जहाज पर गए थे।

तारीख जून २४, २०१६। सुरक्षा के माध्यम से जाने के बाद हम अपने विमान में गए। हमारा विमान जिनींवा जा रहा था जो स्विट्ज़रलैंड में है। हमने वहाँ के शहर की जानकारी निकाली। घूमने के लिए, हमने वहाँ पर एक बस किराये पर ली, क्योंकि मेरे परिवार के सभी सदस्य इस यात्रा पर आए थे। हम एक होटल में रहे, और सुबह हम नाश्ते के बाद दूसरे शहर के लिए निकल पड़े।

कुछ दिनों के बाद, हम इंटेरलाकॅं पहुंच गये। इंटेरलाकॅं के पास यूरोप का सबसे ऊँचा पहाड है, और उसका नाम जंगफ्रॉ है। जंगफ्रॉ ४१५८ मीटर ऊँचा है, और ३५०० मीटर के आस-पास एक अजीब तरह के आकार की इमारत है। हम वहाँ गये, और एक बहुत सुंदर दृश्य देखा। हम एक गाँव में ३ दिन के लिए रुके। वहाँ से हम इटली गये।

पहले, हम पीसा में एक रात के लिए रुके। हमने लीनिंग टावर ऑफ़ पीसा देखा, और फिर हम रोम के लिए निकले। रोम में हम एक क्रूज जहाज पर गये। क्रूज जहाज पर बहुत सारे लोग थे और लोगों की खातिरदारी के लिए अनेक गतिविधियों की व्यवस्था की गयी थी। मैं और मेरे चचेरे भाई बहनों ने बहुत गतिविधियों में भाग लिए। हमने गोल्फ, पूल, शतरंज, आदि खेला। हम बहुत जगहों पर रुके। इन जगहों के नाम संतोरिणी, मिकोनोस और एथेंस थे। ये सब जगहें यूनान में है। हमने वहाँ पर स्मारकों, समुद्र तटों, आदि जगहों का आनंद लिया। अंततः हमे घर जाना था। मैंने अपने चचेरे भाई बहनों से विदाई ली और माता-पिता के साथ हवाई जहाज में गया। वह छुट्टी मुझे बहुत भाई।

मेरा नाम रुजूला वराडे है। मैं चैस्टरफ़ील्ड हिंदी पाठशाला की उच्चस्तर-१ कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं अपने माता-पिता और एक छोटी बहन के साथ रहती हूँ। मेरे पिता एक इंजीनियर हैं। मेरी माता गृहिणी हैं। मेरी छोटी बहन रुतवा बहुत प्यारी है और नटखट भी है। मुझे उसके साथ खेलना और अपने माता-पिता के साथ समय बिताना अच्छा लगता है। हम इतवार को हमेशा कहीं घूमने जाते हैं या कोई खेल खेलते हैं। मेरे परिवार के बाकि सदस्य जैसे मेरे दादा-दादी, नाना-नानी, मामा-मामी, चाचा-चाची, ममेरे भाई बहन और चचेरे भाई बहन भारत में रहते हैं। मुझे इन सबकी बहुत याद आती है। मैं गर्मियों की छुट्टी में हमेशा भारत जाती हूँ। सबको मिलकर मुझे आनंद आता है। मुझे अच्छा लगता है कि मेरा परिवार बहुत बड़ा और आनंदी हैं। मैं मेरे पूरे परिवार से बहुत प्यार करती हूँ। अमेरिका में रहकर भी हम सारे त्योहार बड़ी धूम धाम से मनाते हैं। दिवाली, दशहरा, रंग पंचमी और कई त्योहारों में हम बहुत मजे करते हैं।

हमारी कक्षा - एक परिवार

स्वागता माने, ईस्ट ब्रंसविक पाठशाला, उच्च स्तर-१

मैं स्वागता माने हूँ और ईस्ट ब्रंसविक की उच्चस्तर-१ की कक्षा को पढ़ाने का मेरा यह तीसरा साल है। प्रतिवर्ष विद्यार्थियों को पढ़ाने में अलग-अलग अनुभव होते हैं। छोटी-बड़ी, खट्टी-मीठी बातों से वर्ष के अंत में यादों की पोटली भर जाती है। हमारी संचालिका माइनो जी का हर कदम साथ रहता है। मेरे साथ इस साल युवा स्वयंसेवक कपिला ने कार्यभार संभाला है, जो पिछले साल हिंदी स्नातक की पदवी ले चुकी हैं। उसकी सहायता से कक्षा में उत्साहवर्धक वातावरण रहता है। हिंदी भाषा सिखाते-सिखाते अपने आप ही हिंदी संस्कृति का आदान प्रदान होता रहता है। दिवाली के अवसर पर कक्षा के विधार्थी अद्विक लाल ने "नरकासुर वध" की कहानी सम्पूर्ण विस्तार से कही। उसने यह अपने दादाजी के साथ मिलकर लिखी भी और कार्यक्रम में मंच पर सुनाई भी। वैसे ही रुचिर माथुर ने राम, लक्ष्मण और सीता वनवास से वापस अयोध्या लौटने की कहानी बड़े भावपूर्ण और रोचक शब्दों में कही। रवी सेठ और सार्थक रूंगटा अपनी चंचल अदाकारियों से कक्षा को सचेत रखते हैं। सारे विद्यार्थी और हम अध्यापकों को पता ही नहीं चलता कि हर शुक्रवार को कक्षा का वक्त कब खत्म हो जाता है। "फिर मिलेंगे अगले शुक्रवार को" कहके एक-दूसरे से विदाई लेते हैं।

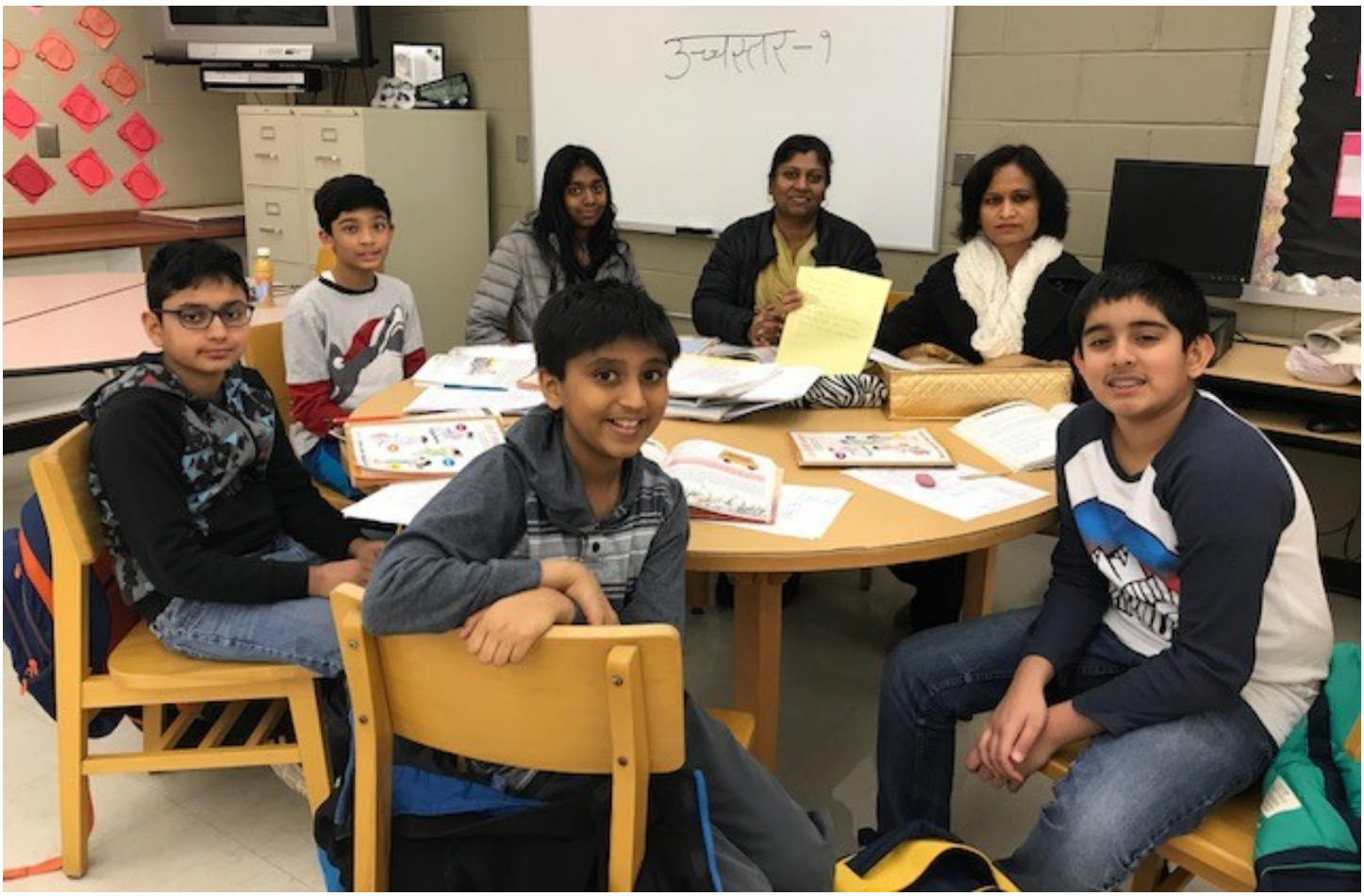

जन जन है मेरा परिवार

मध्यमा-१, साऊथ ब्रंस्विक पाठशाला

बाएँ से दाएँ: निकिता जैन, रोशन मेनन, आरुष नार्रा, निखिला ओब्बिनेनी, माधवन गोपीकृष्णन, इन्दु श्रीवास्तव,
बाएँ से दाएँ: तनुश्री सुरेश, दीक्षा गुप्ता, साईषा पाई, नीवा कामकोलकर, नेहा गुप्ता,
बाएँ से दाएँ: अनुष्का ठाकरे, नील लास्रादो, सस्मित मंडलोई, भव्य शर्मा

नमस्कार,

मैं, इंदु श्रीवास्तव, साउथ ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला में मध्यमा-१ के बच्चों को हिंदी भाषा की शिक्षा दे रही हूँ। इस वर्ष निकिता जैन जी कक्षा की सह-शिक्षिका हैं और युवा छात्र स्वयंसेवक निखिला ओब्बिनेनी हैं।

परिवार क्या है? एक व्यक्ति? या माता-पिता, दीदी-भैया, दादा-दादी, मामा-मौसी, चाचा-बुआ? खून के संबंध या सहेली, सखा, गुरु? शहर, राज्य, या पूरा देश ही हमारा परिवार है? परिवार का महत्त्व क्या है और परिवार के प्रति परिजनों का योगदान कितना जरूरी है?

विगत अक्टूबर माह में हमारी कक्षा के बच्चों ने "२ अक्टूबर का भारतीय इतिहास में महत्व" पर अपने विचार लिखे थे। कक्षा वार्तालाप के दौरान बात देश, समाज और संसार को अपना परिवार मानने वाले कुछ नेता और उनके योगदान की ओर मुड़ गई। बच्चों ने जो लिखा और समझा उसका संपादित संस्करण आप सभी के लिए यहाँ प्रस्तुत है। साथ ही आप सब को मध्यमा-१ पाठ्यक्रम के ढेर सारे मात्रा शब्दों का उपयोग देखने का आनंद भी मिलेगा।

१. महात्मा गाँधी: अक्टूबर २, १८६९ में जन्मे महात्मा गाँधी जी का पूरा नाम मोहन दास करमचंद गांधी है। राष्ट्रपिता गांधीजी से हमने अहिंसा के मार्ग पर चलना और कभी भी बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो और बुरा

मत कहो सीखा। शांतिपूर्ण विरोध, असहयोग और नमक आन्दोलन आदि में भी कितना बल होता है यह गाँधी जी ने साबित करके दिखाया। वर्ष १९४७ में भारत को मिली स्वतंत्रता में इस महान सैनिक का बहुत बड़ा हाथ था।

२. लाल बहादुर शास्त्री: लाल बहदुर शास्त्री जी का जन्म २ अक्टूबर १९०४ में हुआ था। उनके पिता शारदा प्रसाद श्रीवास्तव जी, पाठशाला में शिक्षक थे और माताजी रामदुलारी देवी थीं। वे गांधीजी एवं भारत के प्रथम प्रधानमंत्री - जवाहरल लाल नेहरु जी, से बहुत प्रभावित थे। भारतीय स्वतंत्रता सेनानी शास्त्री जी भारत के दूसरे प्रधानमंत्री चुने गए। मेहनती किसान और फ़ौज की सहायक सरकारी नीतियों से 'जय जवान जय किसान' का सन्देश फ़ैलाने वाले, और हरित खेत क्रांति के वीर पुरुष शास्त्री जी को कभी कोई भूल नहीं सकता।

३. नरेन्द्र मोदी: नरेन्द्र मोदी जी भारत के चौदहवें प्रधानमंत्री चुने गए हैं। गरीब परिवार से किन्तु गुणी, चतुर और मेहनती पुरुष, मोदी जी, महात्मा गांधीजी की जन्मभूमि गुजरात से ही हैं। २ अक्टूबर २०१४ को उन्होंने राजघाट-गाँधी जी की समाधी पर भारत को स्वच्छ-साफ़ बनाने के अभियान का श्री गणेश किया। मोदी जी ने झाड़ू लगाकर सफाई और योग द्वारा स्वास्थ्य के महत्त्व का सन्देश सभी को दिया। हम यदि गांधीजी की एक सौ पचासवीं जयंती पर, वर्ष २०१९ तक, देश को धूल, मैला और कूड़ा रहित, स्वस्थ और आत्मनिर्भर बना पाएंगें तो यह उनको एक सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

इस आलेख के माध्यम से हमारा यही सन्देश है कि हम सभी एक बड़े परिवार के परिजन हैं। यदि जन जन अपने देश और इस धरती को अपना परिवार मानकर उसके विकास के लिए, दिल लगा कर, रात दिन काम करे तो कितना बढ़िया हो जाये।

चित्रकार: **नेहा गुप्ता**

चित्रकार: **अनुष्का ठाकरे**

स्वर्णिम भविष्य के उज्जवल सपने

चेरीहिल हिन्दी पाठशाला, मध्यमा-२

मेरा नाम डॉ. दीप्ति रायबागकर-मलिक है। मैं मध्यमा-२ की शिक्षिका हूँ। मध्यमा-२ के छात्र-छात्राओं में इस वर्ष भविष्य को लेकर बहुत उत्साह और महत्वकांशाएँ हैं। वे बड़े होकर दुनिया में अपने योगदान के द्वारा बदलाव लाना चाहते हैं। यह परियोजना कार्य इस नव पीढ़ी को दर्शाता है।

मेरा नाम आदि सेल्वकुमार है और मैं चिकित्सा वैज्ञानिक बनना चाहता हूँ।

आबादी और विकास के साथ मनुष्यों में बीमारियों भी बढीं, इस वजह से मैं एक चिकित्सा वैज्ञानिक बनाना चाहता हूँ। चिकित्सा वैज्ञानिक न केवल एक आकर्षक काम है, बल्कि यह एक ऐसी नौकरी भी है जो २१वीं शताब्दी की दुनिया के लिए बहुत प्रभावशाली है। एक चिकित्सा वैज्ञानिक कैंसर जैसी खतरनाक बीमारियों से लड़ता है। मैं उस समाज में योगदान देना चाहूंगा जिसमें मैं रहता हूं।

मुझे हमेशा से विज्ञान में रुचि रही है, इसलिए एक चिकित्सा वैज्ञानिक का काम मेरे लिए अच्छा होगा। मुझे वैज्ञानिक प्रयोग करना पसंद है और मेरा यह दृढ़ संकल्प है कि मैं अपना लक्ष्य प्राप्त करने तक निरंतर प्रयास करूँगा। एक मेडिकल वैज्ञानिक बनने के लिए मुझे विज्ञान में स्नातक की डिग्री मिलनी और डॉक्टरेट की डिग्री मिलनी चाहिए।

अगर मैं बड़ा होकर मेडिकल वैज्ञानिक बन गया, तो अवसरों की एक पूरी दुनिया मेरे लिए खुली होगी। मैं कैंसर और एड्स के इलाज की खोज कर सकता हूं, और लाखों लोगों को बचा सकता हूं। यह काम समुदाय के लिए सार्थक है, और मुझे बड़ी संख्या में लोगों की सहायता करने का मौका मिलेगा।

अद्वैत वातल - जब मैं बड़ा हो जाऊँगा, तो मैं एक वकील बनना चाहूँगा।

मुझे लगता है कि मैं एक अच्छा वकील बन सकता हूँ, क्योंकि मेरे पास सभी गुण हैं जो एक अच्छे वकील की जरूरत है। मैं जनता के सामने दबाव महसूस किए बिना बात कर सकता हूँ। मेरे पास बहुत अच्छे विश्लेषणात्मक और शोध कौशल हैं। जरूरत पड़ने पर मैं अपने मुवक्किल के लिए २४/७ उपलब्ध हो सकता हूँ। एक वकील के पेशे में विविधता है। यदि आपको एक प्रकार की वकालत पसंद नहीं, तो कई तरह के विकल्प उपलब्ध हैं। यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं: व्यावसायिक वकील, रोजगार वकील, आपराधिक बचाव वकील आदि। एक वकील बनने के लिए, पहले आपको स्नातक की डिग्री अर्जित करनी पड़ती है। कानून विद्यालय में जाने के लिए स्नातक की डिग्री न्यूनतम शैक्षिक आवश्यकता है। उसके बाद, आपको कानून स्कूल की प्रवेश परीक्षा पास करनी पड़ती है। उसके बाद, आपको जुरीस डॉक्टर की डिग्री प्राप्त करने और बार परीक्षा पास करनी पड़ती है। इसके बाद आप अपने क़ानूनी कैरियर में अग्रिम हो सकते हैं। जाहिर है वकील समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। वकीलों के बिना, लोगों के अधिकार सुरक्षित नहीं होते और उन्हें न्याय नहीं मिलता। इस महत्वपूर्ण भूमिका को निभाने के लिए मैं वक़ील बनना चाहता हूँ।

मेरा नाम सारा सोनी है। मैं बड़े होकर व्यंगचित्रकार बनना चाहती हूँ।

व्यंगचित्रकार वह होता है जो व्यंगचित्र बनाता है। व्यंगचित्रकार के चित्र विज्ञापन और समाचार पत्र में मनोरंजन के काम आते हैं। व्यंगचित्रकार के चित्र अच्छे होने चाहिए। मुझे चित्र बनाना अच्छा लगता है और मुझे लगता है कि मैं अच्छे चित्र बनाती हूँ। व्यंगचित्रकार बनने के लिए कोई विशेष शिक्षा नहीं होती लेकिन शिक्षा के बिना सफल चित्रकार बनना कठिन है। व्यंगचित्रकार बनने के लिए स्नातक डिग्री ज़रूरी है। व्यंगचित्रकार बनने के लिए विशिष्ठ पाठशाला होती है। कैलिफ़ोर्निया इन्स्टिटूट आफ आर्ट्स एक अच्छी पाठशाला है। मैं बहुत सारे छोटे छोटे व्यंगचित्र बनाती हूँ। मुझे लगता है कि अगर मेरे व्यंगचित्र प्रसिद्ध हो जायें तो मैं बहुत अमीर हो जाऊँगी।

मेरा नाम ईशा कलिकिरी है। मैं अभिनेत्री बनना चाहती हूँ।

अभिनेताओं और अभिनेत्रियों की अनेक जिम्मेदारियाँ और कर्तव्य होते हैं। उन्हें नृत्य, नृत्यकला, प्रदर्शन, गीत, और नाटक जैसी चीजों में निपुण होना पड़ता है। अच्छे प्रदर्शन के लिए उन्हें इन सब चीज़ों को दक्षता से करना पड़ता है। नाटकशाला में नृत्य, नृत्यकला, प्रदर्शन, गीत, और नाटक सिखाए जाते हैं। प्रत्याशित अभिनेता और अभिनेत्रियाँ नाटकशाला में ये सब कलाएँ सीखते हैं। कलाकार को सफल होने के लए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। स्नातक होने के बाद कलाकार फ़िल्मों और नाटक में काम ढूँढ़ते हैं। फ़िल्मों और नाटकों में काम मिलना इतना आसान नहीं होता। उसके लिए प्रतिभा के अलावा कठोर परिश्रम की आवश्यकता होती है। मेरा सपना एक अच्छी और सफल अभिनेत्री बनना है। मुझे अभिनय के अलावा नृत्य पसंद है। नाटक के द्वारा समाज को अच्छा संदेश पहुँचाना चाहती हूँ।

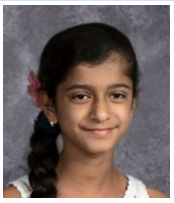

मैं अवनी मलिक हूँ और मैं बड़े होकर एक नूरॉलॉजिस्ट बनना चाहती हूँ।

नूरॉलॉजिस्ट मस्तिष्क के चिकित्सक होते हैं।वे मस्तिष्क और तंत्रिकाओं के विशेषज्ञ होते हैं। वे दिमाग़ की बीमारियों का इलाज करते हैं। नूरॉलॉजिस्ट बनने के लिए हमें जीवविज्ञान, रसायन शास्त्र, विज्ञान, भौतिकशास्त्र और प्री-मेड विषय पढ़ना आवश्यक है। इन विषयों को सीखकर चिकित्सा महाविद्यालय जाते हैं। चार साल की शिक्षा के बाद और चार साल की विशेष नूरॉलॉजी प्रशिक्षण लेना पड़ता है। मैं नूरॉलॉजिस्ट बनना चाहती हूँ क्योंकि मैं लोगों को ठीक करना चाहती हूँ। मैं इस विषय को सीखने में रुचि रखती हूँ। मैं स्वभाव से बहुत मेहनती हूँ और हर विषय की बारीकियों पर ध्यान देती हूँ। दिमाग़ से जुड़े अनुसंधान मुझे बहुत उत्साहित करते हैं। इन विशेषताओं की वजह से मैं नूरॉलॉजिस्ट बनना चाहती हूँ।

मेरा नाम ईशान प्रभाकर है और मैं बड़ा होकर एक वित्तीय विश्लेषज्ञ बनना चाहता हूँ।

स्टॉक देखना और अर्थव्यवस्था की गतिविधियों का अध्ययन करना एवं अगली बड़ी प्रगति का शोध करना मुझे आकर्षित करता है। यही कारण है कि मैं बड़ा होकर वित्तीय विश्लेषण विशेषज्ञ बनना चाहता हूँ। इसके लिए इन्हीं कुशलता की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए बिटकॉइन को देख सकते है, जो $५० के क़ीमत पर शुरू हुआ और अब $१३,००० के क़ीमत पर मूल्यवान है। एक वित्तीय विश्लेषण विशेषज्ञ अपने निजी ग्राहकों एवं कंपनियों के लिए काम करता है। ऐसी नौकरी पाने के लिए वित्त सम्बंधित स्नातक डिग्री जैसे अकाउंटिंग, सांख्यिकी अथवा अर्थशास्त्र की आवश्यकता होती है। इस क्षेत्र में नौकरी का बाज़ार अगले १० वर्षों में १०% से बढ़ने का अनुमान है। दूसरे शब्दों में, मुझे कॉलेज से स्नातक होने के बाद पर्याप्त रोज़गार के अवसर मिलेंगे।

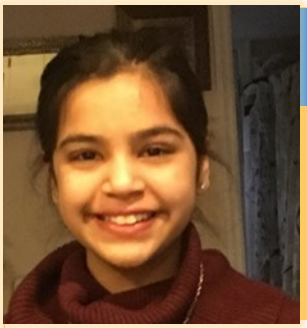

यक्षा सेठ, उच्चस्तर-१, वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला

मेरी स्विट्ज़रलैंड की यात्रा

एक शाम मैं अपना गृहकार्य कर रही थी कि मेरे पापा ने आकर कहा कि एक सरप्राइज है। सरप्राइज सुनते ही मेरी आँखे खुली की खुली रह गईं और एक दो पल कुछ समझ नहीं आया कि उन्होंने क्या बोला। उन्होंने बताया की हम सब दो दिन मैं स्विट्ज़रलैंड घूमने जा रहे हैं। मैं सरप्राइज और स्विट्ज़रलैंड घूमने जाने की बात से उस रात ख़ुशी से सो नहीं पाई। अगली सुबह हमने अपना सामन समेटना और बांधना शुरू कर दिया। मेरी मम्मी ने नाश्ता और बहुत सारा खाना ले जाने के लिए बनाया। हमे डर था कि यदि हमें जैन खाना न मिला तो कुछ साथ में होगा तो काम चल जायेगा।

सबसे पहले हमने न्यु जर्सी से जुरिच की उड़ान भरी, वहाँ पर एक कार किराए पर लेकर हम फ्रांस की ओर ड्राइव करके पेरिस पहुँचे। वहाँ पर २ दिन घूमे और दुनिया का अजूबा एफेल टावर भी देखा और वहाँ की राइन नदी पर नौका विहार मुझे बहुत ही ज्यादा अच्छा लगा।

अगले दिन हम लम्बी ड्राइव करते हुए स्विट्ज़रलैंड पहुँचे। वहाँ की वादियों की तो बात ही बहुत निराली है। हर जगह हरियाली ही हरियाली और एकदम सुन्दर, शायद मैं लिख ही नहीं पाऊँ कि स्विटज़रलैंड कितना अच्छा है। हमने माउंट पिलाटस, एंगलबर्ग, टिटलिस, बर्न, इंटरलाकन, बासेल और जुरिच घूमा। माउंट टिटलिस की चोटी पर जाने के लिए दो अलग तरह की केबल कार लेनी पड़ती हैं। दूसरी केबल कार चारो दिशाओं में घूमती है और उससे पहाड़ो और वादियों का ऊँचाई से बहुत ही निराला दृश्य दिखता है। पहाड़ की चोटी पर हिन्दी चलचित्र "दिलवाले दुल्हनिया ले जायेंगे" का शारुख खान और काजोल का एक बहुत ही बड़ा चित्र है जिसके साथ सभी चित्र खिंचवाते हैं।

स्विट्ज़रलैंड के हर शहर में ट्राम और सिटी बस चलती हैं, जिसमे यात्रा का मैंने अनुभव भी किया। स्विट्ज़रलैंड की एक खासियत है कि वहाँ की ट्रेन, ट्राम और बस अपने निर्धारित्र समय पर चलती हैं। वहाँ की चॉक्लेट्स, चीज़ और घड़ियाँ विश्व भर में प्रसिद्ध हैं। जिस दिन हमे न्यु जर्सी लौटना था उस दिन मैं बहुत ही दुखी हुई कि इतनी सुन्दर जगह से मुझे जाना पड़ेगा। मुझे पेरिस और स्विट्ज़रलैंड की यात्रा हमेशा याद रहेगी और मैं आप सभी से यह कहना चाहती हूँ कि आप भी जरूर कम से कम एक बार तो स्विट्ज़रलैंड घूमने जाएँ। मैंने अपने मम्मी पापा से यह सुना है कि भारत में कश्मीर, शिमला, कुल्लू और मनाली भी स्वोटजरलैंड से कम नहीं हैं। अगली बार जब हम भारत जायेंगे तो मैं जरूर उनसे आग्रह करूंगी कि मुझे यह जगह भी घुमाने ले चलें।

सत्रहवें हिन्दी महोत्सव पर

हिन्दी यू.एस.ए. को हार्दिक शुभकामनाएँ

SAI CPA Services

SAI CPA SERVICES

We Specialize In

- Accounting & Bookkeeping
- Sales Tax & Payroll tax
- Business startup services
- Income Tax Preparation for Individual & Business
- IRS problems & Representations
- Payroll Services
- Developing & Implementing Business models
- Non-profit Taxes & 501C(3) approvals
- Financial Statement preparation & Attestation

Ajay Kumar, CPA

5 Villa Farms Cir, Monroe Township, NJ 08831

Phone: 908-380-6876

Fax: 908-368-8638

akumar@saicpaservices.com

www.saicpaservices.com

जब हम परिवार के बारे में सोचते हैं...

प्लेंसबोरो हिन्दी पाठशाला - मध्यमा-२ [अध्यापिकाएं ममता त्रिवेदी, सीमा वशिष्ट]

जब मैं परिवार के बारे में सोचती हूँ तो मैं अपनी माँ के बारे में सोचती हूँ, जो बहुत दयालु और बुद्धिमान हैं और हमेशा मुझे अध्ययन में मदद करती हैं। मैं अपने पिता के बारे में सोचती हूँ जो बहादुर और सकारात्मक हैं और मेरी कठिन से कठिन समस्याओं को सुलझाते हैं।

अपनी बहन के बारे में सोचती हूँ जो बहुत शरारती और चंचल है, परन्तु जब मैं उदास होती हूँ तो मेरे साथ खेलती है।

अपने भाई के बारे में सोचती हूँ जो नटखट किन्तु मेरा सबसे अच्छा दोस्त हैं और मुझे नयी नयी चीजें सिखाता है।

जब मैं परिवार के बारे में सोचती हूँ तो मैं फिल्म, बोर्ड गेम्स और पिज़्ज़ा के बारे में सोचती हूँ। मैं खुशी और समृद्धि के बारे में सोचती हूँ। मैं उस छोटी सी दुनिया के बारे में सोचती हूँ जो किसी भी परेशानी में हमारे साथ खड़ी रहती है। जब परिवार साथ होता है तो मुश्किल के क्षणों में भी हमारा दिल खुश रहता है और हम बड़ी से बड़ी कठिनाई को सफलतापूर्वक पार कर लेते हैं। परिवार के बिना जीवन की कल्पना करना भी कठिन है।

परिवार का दूसरा नाम प्यार है। हम अपनी बातें परिवार में सबको बताते हैं और एक दूसरे की मदद करते हैं। जीवन की हर समस्या का समाधान है मेरा परिवार। परिवार हर पल मेरा साथ देता है और मेरा ख्याल रखता है। जब मैं ऊब जाती हूँ तो मेरा परिवार मेरा मनोरंजन करता है। मेरा परिवार मेरे लिए सब कुछ है। परिवार में हम सब साथ मिलकर बहुत से त्योहार मनाते हैं। हम जैसे हैं, हमारा परिवार हमें वैसे ही स्वीकार करता है। परिवार एक ऐसा बंधन है जो सुख-दुःख में सबको साथ बाँधकर रखता है। कुछ लोगों को परिवार का साथ नहीं मिलता है इसलिए इसके महत्व को समझना चाहिए और एक दूसरे के साथ प्यार और सहयोग से रहना चाहिए। दादा-दादी, नाना-नानी की कहानियाँ, माँ की ममता, पिता का पालन-पोषण और मेरी नादानियाँ, मेरा हँसता खिलखिलाता परिवार स्वर्ग से भी सुंदर है।

मेरा परिवार

मेरा नाम धृति खगाति है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं चैरी हिल हिंदी पाठशाला की मध्यमा-१ की छात्रा हूँ। मुझे अंग्रेज़ी में कविता लिखना बहुत पसंद है और हिंदी में कविता लिखने का यह मेरा पहला प्रयास है। मेरी रुचि है किताबें पढ़ना और नृत्य करना।

चाहे आंधी आए या तूफ़ान,
हम हैं एक मजबूत परिवार।
रोशनी हैं हम एक दूसरे के लिए,
हर अँधेरे को जो चीर दे,
हम सदा रहेंगे साथ।
कभी शांति से रहते हैं हम,
कभी लड़ते झगड़ते एक दूसरे से हम।
फिर हम हमारे कमरे में बंद,
हमारी भावनाओं में डूबे।
पर फिर भी हर हाल में,
एक दूसरे से प्यार करते हैं हम।
यह परमेश्वर का आशीर्वाद है,
और उसने कोई गलती नहीं की,
क्योंकि एक सुन्दर परिवार हैं हम।

उत्तम हैं, पर हमारे में भी दोष हैं,
जैसे हर परिवार में होते हैं।
फिर भी,
माँ, पिता, बेटा, बेटी,
सभी एक दूसरे से प्यार करते हैं।
जब एक व्यक्ति दुखी है,
बाकी सब उसे खुश कर देते हैं।
जब कोई रोता है,
हम एक दूसरे को समझाकर संभालते हैं।
मझे अपने परिवार से प्यार है।
क्योंकि हम एक हैं,
हम मजबूत हैं,
पूर्ण रूप में.....
हम एक परिवार हैं।

रक्षा बंधन

मेरा नाम यश्वी परीख है । मैं ईस्ट ब्रुन्सविक पाठशाला में I-1 की छात्रा हूँ। मुझे संगीत और चित्रकारी पसंद है ।

रक्षा बंधन भाई बहन के स्नेह का प्रतीक है । इस दिन बहनें अपने भाई के हाथ में राखी बांधती है । भाई बहन की रक्षा का वचन देता है । भाई बहन को उपहार भी देता है । मुझे रक्षाबंधन का त्यौहार पसंद है।

महात्मा गांधी

उच्चस्तर-१

चैरी हिल

ओजस्विता रेड्डी

मेरा नाम ओजस्विता रेड्डी है। मैं दो साल से हिंदी पाठशाला में आ रही हूँ। अब मैं उच्चस्तर-१ में पढ़ रही हूँ। मुझे चित्र बनाना ओर गाना सुनना पसंद है। न्यू जर्सी आने से पहले, मैं कैलीफ़ोर्निया में रहती थी। पाठशाला के बाद मैं कई क्लबों में भाग लेती हूं। मैं रोबोटिक्स, ट्रैक और फ़ील्ड, टयुटरिंग और ICS के क्लब मे हिस्सा लेती हूँ।

महात्मा गांधी अपने अतुल्य योगदान के लिये ज्यादातर "राष्ट्रपिता और बापू" के नाम से जाने जाते हैं। वे एक ऐसे महापुरुष थे जो अहिंसा और सामाजिक एकता पर विश्वास करते थे। उन्होंने भारत के ग्रामीण भागों के सामाजिक विकास के लिये आवाज़ उठाई थी। उन्होंने भारतीयों को स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग के लिये प्रेरित किया और बहुत से सामाजिक मुद्दों पर भी उन्होंने ब्रिटिशो के खिलाफ आवाज़ उठाई। वे भारतीय संस्कृति से अछूत और भेदभाव की परंपरा को नष्ट करना चाहते थे। बाद में वे भारतीय स्वतंत्रता अभियान में शामिल होकर संघर्ष करने लगे।

भारतीय इतिहास में वे एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने भारतीयों की आज़ादी के सपने को सच्चाई में बदला था। आज भी लोग उन्हें उनके महान और अतुल्य कार्यो के लिये याद करते हैं। आज भी लोगों को उनके जीवन की मिसाल दी जाती है। वे जन्म से ही सत्य और अहिंसावादी नहीं थे बल्कि उन्होंने अपने आप को अहिंसावादी बनाया था।

राजा हरिशचंद्र के जीवन का उनपर काफी प्रभाव पड़ा। स्कूल के बाद उन्होंने अपनी क़ानून की शिक्षा इंग्लैंड से पूरी की और वकीली के पेशे की शुरुआत की। अपने जीवन में उन्होंने काफी मुसीबतों का सामना किया, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी, वे हमेशा आगे बढ़ते रहे।

उन्होंने काफी अभियानों की शुरुआत की, जैसे १९२० में असहयोग आन्दोलन, १९३० में नागरिक अवज्ञा अभियान और अंत में १९४२ में भारत छोड़ो आंदोलन उनके द्वारा किये गये ये सभी आन्दोलन भारत को आज़ादी दिलाने में कारगर साबित हुए। अंततः उनके द्वारा किये गये संघर्षो की बदौलत भारत को ब्रिटिश राज से आज़ादी मिल ही गयी।

महात्मा गांधी का जीवन काफी साधारण था। वे रंगभेद और जातिभेद को नहीं मानते थे। उन्होंने भारतीय समाज से अछूत की परंपरा को नष्ट करने के लिये भी काफी प्रयास किये और इसके चलते उन्होंने अछूतों को "हरिजन" का नाम भी दिया था जिसका अर्थ "भगवान के लोग" था।

महात्मा गाँधी एक महान समाज सुधारक और स्वतंत्रता सेनानी थे और भारत को आज़ादी दिलाना ही उनके जीवन का उद्देश्य था। उन्होंने काफी भारतीयों को प्रेरित भी किया और उनका विश्वास था की इंसान को साधारण जीवन ही जीना चाहिये और स्वावलंबी होना चाहिये।

गांधीजी विदेशी वस्तुओं के खिलाफ थे, इसीलिये वे भारत में स्वदेशी वस्तुओं को प्राधान्य देते

शेष अगले पृष्ठ पर...

मेरा प्यारा भारतीय परिवार

ओजस श्रीवास्तव

मेरा नाम ओजस श्रीवास्तव है और मैं दूसरी कक्षा में पढ़ता हूँ। मेरे सभी परिजन बड़े प्रतिभाशाली हैं। यह लेख मैंने अंग्रजी में लिखा था। फिर अपने माता-पिता और मेरी साऊथ ब्रंसविक प्रथमा-२ की कक्षा शिक्षिका श्रीमती सरिता नेमानी जी, की सहायता से हिंदी में अनुवाद करके लिखा है।

पिछले साल दिसंबर में मेरी दीदी और कुछ अन्य बड़ी उम्र के बच्चे, हिंदी यू.एस.ए. के प्रतिनीधि के रूप में भारत की यात्रा पर गये थे। उसी समय मैं भी भारत गया था, लेकिन उनके साथ नहीं, अपने माता-पिता के साथ।

मुझे मेरे दादा-दादी जी के घर, भोपाल में, अपने दूसरे भाइयों और रिश्तेदारों से मिलकर, उनके साथ खेलकर बहुत अच्छा लगा। मुझे अपनी बहन की याद भी तब आई जब उनसे मिलने के लिए आगरा जाने का दिन आया। भोपाल से आगरा की रेल यात्रा इतने आराम से कटी कि आगरा कब पहुँच गए, पता ही नहीं चला। आगरा की होटल बहुत ही बड़ी और सुंदर थी। शाम का खाना भी बहुत अच्छा था। दूसरे दिन सुबह इतना कोहरा था कि मेरे कमरे की खिड़की से बाहर का कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। होटल में ही स्वादिष्ट नाश्ता करके हम जग प्रसिद्ध ताज महल देखने गए। यह सफ़ेद, सुंदर और विशाल भवन दुनिया के सात अजूबों में से एक है। वहाँ का पूरा वातावरण बहुत ही मन मोहक था।

रात को होटल लौट कर मैं अपनी दीदी से मिला। वह भी मुझे देखकर बहुत खुश लगी (क्योंकि मेरी किसी भी शैतानी पर वह मुझे बिलकुल भी नहीं डांट रही थी अपितु पूरे समय मुस्कुरा रही थी।) टोली के सभी भैया-दीदी और बड़ों ने भी मुझसे बहुत प्यार से भेंट करी। अपने कमरे में जाने से पहले मैंने उन सभी को शुभ यात्रा कहा और सोने चला गया। अगले दिन सुबह, घने कोहरे में टैक्सी वाले ने हमें कैसे रेल स्टेशन तक पहुंचाया यह मुझे अभी भी समझ नहीं आ रहा है। मगर आगरा में मेरा समय बहुत अच्छा बीता और अपनी दीदी से कई दिनों बाद मिलकर मुझे बहुत अच्छा लगा। इस यात्रा से मैंने समझा कि परिवार का हर एक सदस्य का अपना महत्त्व होता है और हम सब एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं।

पिछले पृष्ठ से आगे...

थे। इतना ही नहीं बल्कि वे खुद चरखा चलाते थे। वे भारत में खेती का और स्वदेशी वस्तुओं का विस्तार करना चाहते थे। वे एक आध्यात्मिक पुरुष थे और भारतीय राजनीती में वे आध्यात्मिकता को बढ़ावा देते थे। महात्मा गांधी का देश के लिए किया गया अहिंसात्मक संघर्ष कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने पूरा जीवन देश को स्वतंत्रता दिलाने में व्यतीत किया और देशसेवा करते करते ही ३० जनवरी १९४८ को इस महात्मा की मृत्यु हो गयी। आज भारत में ३० जनवरी को उनकी याद में शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है।

परिवार के साथ दिवाली

नमस्ते, मेरा नाम गरिमा अग्रवाल हैं। मैं मध्यमा-२ की सह स्तर संचालिका के साथ-साथ विल्टन हिंदी पाठशाला की मध्यमा-२ की अध्यापिका भी हूँ। इस वर्ष मेरी कक्षा के छात्र व छात्राओं ने "अपने परिवार के साथ दिवाली कैसे मनाई" पर संयुक्त शब्दों का समावेश करके लेख लिखने का सराहनीय प्रयास किया हैं उदाहरण के तौर पर "त्योहार", "शक्कर", "प्रसन्न", "अगरबत्ती", "प्यार", "पुष्प", "व्यंजन", "विघ्नहर्ता"।

नमस्ते, मेरा नाम शायला बाठला है। मैं विल्टन हिंदी पाठशाला की मध्यमा-२ कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे नृत्य और जिम्नास्टिक्स करना बहुत अच्छा लगता है।

मुझे भारत के सभी त्योहारों में दीपावली सबसे ज़्यादा पसंद है। यह अच्छाई की बुराई पर विजय का प्रतीक है। मैं अपने परिवार के साथ इसे बहुत ज़ोर शोर से मनाती हूँ। मेरी माता जी मेरी पसंदीदा मठरी और नारियल लड्डू बनाती हैं। हम रात में घर को दीपक और रोशनी से सजाते हैं। उसके बाद हम साथ मिल कर लक्ष्मी जी और गणेश जी की पूजा करते हैं। सबसे ज़्यादा मज़ा मुझे अपने परिवार और दोस्तों के साथ पटाखे छुड़ाने में आता है। हम फिर ईश्वर को हाथ जोड़ कर धन्यवाद देते हैं।

नमस्ते, मेरा नाम जिया मल्होत्रा है। मैं विल्टन हिंदी पाठशाला की मध्यमा-२ कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे भरतनाटयम और किताबें पढ़ना बहुत अच्छा लगता है।

इस साल हमने दिवाली त्योहार हमारे नये घर में मनाया। दिवाली के उत्सव पर हमने घर को पुष्प और आम के पत्तों से सजाया। मेरी माँ ने प्यार से शक्कर और बेसन के लड्ड बनाये, तिल के लड्डू, मुरूकु और कई तरह के व्यंजन बनाये। शाम को हम सब ने विघ्नहर्ता गणेश और लक्ष्मी जी की अगरबत्ती जला कर पूजा की और ईश्वर को धन्यवाद दिया। हमने हमारे पड़ोसी और मित्रों को बुलाया। सब अतिथि मुख्य दरवाज़े से आए। हमने उनको नमस्ते बोलकर स्वागत किया और साथ मिलकर पटाखे जलाये और हम सब बहुत ज़्यादा प्रसन्न हुये।

नमस्ते, मेरा नाम प्रियंका भंडारी है। मैं विल्टन हिंदी पाठशाला की मध्यमा-२ कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे जिम्नास्टिक्स और टेनिस खेलने में रूचि हैं।

दिवाली हमारा मुख्य उत्सव है। इस दिन माँ बहुत सारे व्यंजन और शक्कर डाल कर लड्डू बनाती हैं। हम लक्ष्मी जी की अगरबत्ती और पुष्प चढ़ा कर पूजा करते हैं। हम ईश्वर जो विघ्नहर्ता हैं उनका धन्यवाद करते हैं। हम बहुत प्रसन्न होकर सबका प्यार से नमस्ते करके स्वागत करते हैं।

नमस्ते, मेरा नाम मल्लिका सुब्रमण्यम है। मैं विल्टन हिंदी पाठशाला की मध्यमा-२ कक्षा में पढ़ती हूँ।

हमारा मुख्य त्योहार दिवाली हैं। दिवाली के लिए लोग हमारे घर आते हैं। लोग आते हैं तो हम नमस्ते बोलते हैं और हम लोगो का स्वागत करते हैं। मेरी माता अगरबत्ती जलाती हैं। हम सब प्रसन्न रहते हैं और याद करते हैं कि हमको कितना प्यार मिलता हैं। मेरे माता-पिता बहुत व्यंजन बनाते हैं। वे पेड़े और लड्डू बनाते हैं। लड्डू में बहुत शक्कर है। हम मेज पर पुष्प लगाते हैं। हम विघ्नहर्ता के बारे में सोचते हैं और हम उनको धन्यवाद बोलते हैं। हम दीये जलाते हैं और रंगोली बनाते हैं। हम रात में ज्यादा पटाखे जलाते हैं।हम ईश्वर की प्रार्थना बोलते हैं।

नमस्ते, मेरा नाम निला तिरुमल कुमरन है। मैं विल्टन हिंदी पाठशाला की मध्यमा-२ कक्षा में पढ़ती हूँ और मुझे हिंदी सीखना बहुत अच्छा लगता हैं।

दिवाली हिन्दुओं का मुख्य उत्सव है। उत्सव मनाने से पहले हम विघ्नहर्ता गणेश जी की प्रार्थना करते हैं। दिवाली दीपों का त्यौहार है। मेरी माँ लड्डू और व्यंजन, ज्यादा शक्कर और घी डाल कर, प्यार से बनाती हैं। मैं और मेरे भाई व्यंजन खा कर बहुत प्रसन्न होते हैं। हम नमस्ते बोल कर हमारे अतिथि का स्वागत करते हैं। हम घर को पुष्प और अगरबत्ती से सजाते हैं। हम बुराई को मारने के लिए ईश्वर को धन्यवाद कहते हैं।

नमस्ते, मेरा नाम रोहक गुलिआ है। मैं विल्टन हिंदी पाठशाला की मध्यमआ-२ कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे विज्ञान और गणित में बहुत रूचि हैं।

दिवाली रोशनी का त्योहार हैं। दिवाली के दिन हम गणेश जी और लक्ष्मी जी की पूजा करते हैं। गणेश जी को हम विघ्नहर्ता भी कहते हैं। पूजा के लिए हम लड्डू और अगरबत्ती लेकर आए। हमने पुष्पों और दीयों से घर को सजाया। मेरी माँ ने प्यार से अनेक व्यंजन बनाए। दिवाली पर मैं बहुत ज्यादा प्रसन्न था। हमने ईश्वर को धन्यवाद कर भोजन किया। मुख्य दरवाजे पर हमने अतिथि को नमस्ते कर स्वागत किया।

परिवार की आवश्यकता

हमशिका राजकुमार

परिवार बहुत महत्वपूर्ण है। परिवार में हम एक-दूसरे की मदद और देखभाल करते हैं, इसलिए सभी लोगों के लिए एक मजबूत परिवार आवश्यक है। मेरे परिवार में चार लोग हैं। मेरे परिवार में मेरे माता-पिता और मेरा छोटा भाई है। मेरे माता-पिता मेरी बहुत मदद करते हैं और वे मेरा मार्गदर्शन भी करते हैं। हम सभी लोग अपना हर काम मिलकर करते हैं। जब भी मैं अपने छोटे भाई के साथ होती हूँ तो हमेशा खुश रहती हूँ। मैं अपने माता-पिता और छोटे भाई से बहुत प्यार करती हूँ। – पिस्कैटवे हिन्दी पाठशाला, उच्चस्तर-२

खूबसूरत पल

उच्चस्तर-१ **विल्टन हिंदी पाठशाला**

मेरा नाम नीता सिंघल है। मैं विल्टन हिंदी पाठशाला की उच्चस्तर-१ की शिक्षिका हूँ। भारत में मैं मुंबई की रहने वाली हूँ। मुझे पढ़ाने का शौक है, इसलिए पिछले पाँच वर्षो से हिन्दी यू.एस.ए. के साथ जुड़ी हुई हूँ। व्यावसायिक रूप से मैं एक वित्तीय योजनाकार हूँ। मैं लोगों को उनके निवेश, बीमा, कॉलेज योजना और करों का अनुकूलन करने में सहायता करती हूँ। यहाँ प्रस्तुत हैं बच्चों के द्वारा लिखे लेख जिनमे उन्होंने अपने परिवार के साथ बिताए हुए कुछ ख़ूबसूरत पलों के बारे में लिखा है।

मेरा नाम **आरुषी अग्रवाल** है। मैं विल्टन हिंदी पाठशाला की उच्चस्तर-१ की छात्रा हूँ। मुझे किताबें पढ़ना, विओला वाद्य यन्त्र बजाना और नृत्य करना पसंद है। मैं, अपने परिवार के साथ मेरी पहली गरम हवा के गुब्बारे की यात्रा का वर्णन करना चाहूंगी। अगस्त २०१७ को मेरे पिता जी की वर्षगांठ वाले दिन सुबह ३ बजे उठ कर हम सभी घर से २ घंटा दूर प्लैंस्विल्ल नामक शहर पहुँचे। अभी सूर्योदय नहीं हुआ था और सुबह की ठंडक थी। हम जैसे ही गाड़ी से बाहर निकले तो लोगो का जमघट लगा हुआ था। एक बहुत बड़े से मैदान में बड़ी गाड़ियों में से बहुत बड़ी टोकरी और रंग बिरंगा कपड़ा निकला। फिर बड़े पंखो की मदद से उसमे हवा भरी गई। और देखते ही देखते उसने बहुत बड़े गुब्बारे का रूप ले लिया और ज़मीन पर सीधा खड़ा हो गया। मुझे और मेरे परिवार को उस टोकरी में चढ़ा दिया गया। हमारे साथ पायलट भी आया। पौ फटते ही सूर्योदय के साथ हम हवा में पेड़ो के ऊपर उड़ रहे थे। वह सूर्य की सुनहरी किरणें, शीतल हवा के झोंके और बिना परों के उड़ने का अनुभव इतना रोमांचकारी था कि मैं उसे हमेशा याद रखूंगी।

मेरा नाम **अवनी** है। मेरे परिवार में मेरी माताजी, मेरे पिताजी, और छोटा भाई हैं। मेरे मम्मी-पापा बहुत अच्छे हैं। मेरे छोटे भाई का नाम आरव है, और वह बहुत नटखट है। मैं अपने परिवार को बहुत प्यार करती हूँ। एक बार, ठंड की छुट्टियों मे हम डिसनी वर्लड गए थे। मेरे मम्मी और पापा ने मुझे पाठशाला से जल्दी छुट्टी दिलवाई और हम हवाई अड्डा गए। जब हम ओरलैंडो पहुँचे तब हम होटल गए। फिर हम डिसनी वर्ल्ड पार्क गए। हम सात दिन डिसनी में रहे। डिसनी वर्ल्ड में मुझे बहुत मजा आया। जब घर जाने का समय आया, मैं और मेरा भाई थोड़े से दुखी थे। लेकिन हम घर आने के बाद बहुत खुश थे, क्योंकि घर सबसे अच्छा स्थान है।

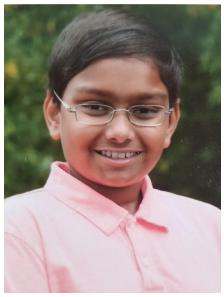

मेरा नाम **आलोक भट्टाचार्य** है। मुझे कहानी की पुस्तकें पढ़ना पसंद है। पिछली गर्मियों में, अपने परिवार के साथ मैं बेल्जियम गया था। वहाँ का भोजन बहुत प्रसिद्ध है। हमने बहुत मज़े के साथ अनेक प्रकार के खाने खाए। मेरा सबसे पसंदीदा खाना बेल्जियम प्राइज़ है। उसका स्वाद अभी भी मुझे याद है। मेरे पिताजी सीफ़ूड पसंद करते हैं। उन्होंने बहुत सारे शंभुक अति उत्साह से खाए। मेरी माताजी को अनेक प्रकार की मिठाइयाँ अति प्रिय हैं। इसलिए हमने बहुत सारे बेल्जियम चॉकलेट खरीदे। हम सभी को बेल्जियम क्रेप खाने की इच्छा थी इसलिए, आने वाले दिन सुबह हमने नाश्ते में क्रेप खाया। स्ट्रॉबेरी, व्हिप्पड क्रीम, और चॉकलेट के साथ वह विशाल क्रेप वास्तव में स्वादिष्ट था। मेरा भोजन प्रेमी परिवार बेल्जियम को उसके भोजन के लिए सदा याद रखेंगे।

मेरा नाम **टीना पमनानी** है। मैं और मेरा परिवार नए साल को मनाने न्यूयोर्क गए थे। नए वर्ष के पूर्व की रात मैं आधी रात को बॉलड्राप देखने गई। इस साल बॉलड्रॉप बहुत की दिलचस्प लग रहा था। यह अंत में नया साल था क्योंकि रात के बारह बजे थे। जब हम उठे, साढ़े सात बजे थे और मेरा पूरा परिवार नाश्ता खाने के लिए नीचे चला गया। नए साल का जन्मदिन मनाने के लिए हर कोई अपने नाश्ते के साथ केक खा रहा था। यह दिन शायद मेरे जीवन का सबसे अच्छा दिन था।

मेरा नाम **सिद्धार्थ सुनेजा** है। मेरे परिवार में पांच सदस्य हैं - मेरी माता, मेरे पिता, मेरी बहन, मैं और मेरा कुत्ता। पिछले साल हम हवाई गए थे। वहाँ बहुत गर्मी थी। हमारे होटल में एक पूल, कैफे, और एक म्यूज़ियम था। एक दिन हम खरीददारी करने गए थे। फिर दूसरे दिन हम "Road to Hana" पर गए थे। हवाई में बहुत मजा आया।

परिवार संग छुट्टी

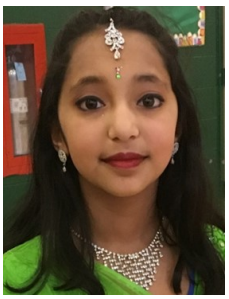

मेरा नाम **सारा सिंघल** है। मैं ११ साल की हूँ और चेस्टरफील्ठ पाठशाला में उच्च स्तर-१ की छात्रा हूँ। मेरे परिवार में मेरे पापा, माँ, मैं और मेरी प्यारी सी छोटी बहन हैं। मेरा परिवार मुझे बहुत प्रिय है। मुझे अपने परिवार के साथ घूमना बहुत पसंद है। कुछ समय पहले हम सब कैमलबैक रिसॉर्ट्स गए थे जो मेरी अब तक की मनपसंद छुट्टी रही है। हम वहाँ दो दिन के लिए गए थे। हम सब ने पहली बार स्नो टूबिंग की। मुझे बहुत मज़ा आया। हम कम से बार पहाड़ से नीचे आए। अगले दिन हम वॉटरपार्क गए। हम सब ने मिलकर बहुत मस्ती की। परिवार के साथ रहने से कोई चिंता नहीं रहती, इसलिए और भी अच्छा लगा। मुझे अपने परिवार के साथ अगली छुट्टी का इन्तज़ार रहेगा।

केन्या की सैर

निकिता खापरे, एडिसन पाठशाला उच्च स्तर-२

मैं जे. पी. स्टीवन हाईस्कूल में ९वीं कक्षा में पढ़ती हूँ। तैरना, नृत्य, यात्रा करना और फोटोग्राफी मेरे शौक हैं।

पिछले वर्ष मैंने अपने परिवार के साथ गर्मी की छुट्टियों के दौरान अफ्रीकी सफारी (मसाई मारा) का दौरा किया। जानवरों की अपनी असाधारण आबादी के लिए यह जगह विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है। मसाई मारा नेशनल रिजर्व नेनॉक काउंटी, केन्या में एक बड़ा गेम रिजर्व है। हर साल हजारों पर्यटक केन्या और मसाई मारा के बड़े पांच (Big Five) जानवरों की झलक देखने की आशा करते हैं। यहाँ विभिन्न तरह के जानवर पाये जाते हैं।

मेरे परिवार ने जंगल में एक तंबू किराए पर लिया जिसका नाम "बुश एनकावा" था। यह तंबू मसाई ग्रामवासियों द्वारा संरक्षित था। रात में पशु हमारे तम्बू के पास नदी में पानी पीने के लिए आ रहे थे। हमने रात में जंगली जानवरों कई आवाज़ें सुनाई दीं।

खुली जीप में गेम ड्राइव (सफारी विज़िट) एक रोमांचक अनुभव था। बड़े पांच में हाथी, गेंडा, शेर, तेंदुआ और जंगली भैंस आते हैं। यह बड़े पांच सबसे कठिन और खतरनाक जानवर होते हैं। इस यात्रा के दौरान मैंने २५ हाथी, ३० जिराफ, हजारों ज़ेबरा और जंगली भैंस देखे। २३ शेरों को देखने के बाद मैं बहुत खुश थी। मैंने मसाई मारा में बड़े पांच, चीते, जगुआर, तथा मगरमच्छ भी देखे। मैंने मगरमच्छ से जंगली बिस्ट का शिकार देखा। मैं इस दृश्य से डर गयी थी।

मैंने पशुओं का दुर्लभ पलायन देखा। पलायन के दौरान पशु केन्या से तंजानिया नदी पार करते हैं। अफ्रीका यात्रा एक बहुत ही घटनात्मक यात्रा थी। मैंने कई अलग जानवरों के बारे में सीखा। पशु न केवल शिकार करते हैं बल्कि वे अपने परिवार की परवाह भी करते हैं। मैं निश्चित रूप से भविष्य में अफ्रीका की यात्रा करना चाहती हूं। यह मेरे जीवन की अब तक की सबसे यादगार सैर है।

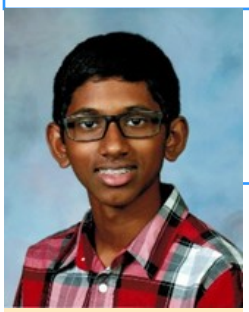

आदेश
अर्जुन सेंतिलकुमार

मेरा परिवार

मेरा परिवार मुझे बहुत प्यारा है। जब मैं चिन्ता या मुसीबत में होता हूँ, मेरा परिवार मुझे प्रोत्साहित करता है। जब मुझे किसी चीज की आवश्यकता होती है, तब वे सभी प्रकार से मेरी सहायता करते हैं। मेरा छोटा भाई मुझे बहुत अच्छा लगता है। वह मेरे साथ खेलता है। मैं अपनी माँ से बहुत सारी चीज़ें सीखता हूँ। जब मेरे माँ भोजन पकाती हैं, तो वे मुझे नए व्यंजन बनाने के लिए प्ररित करती हैं। मेरे पिताजी मुझे एक अच्छा खिलाड़ी बनना सीखाते हैं और मुझे अपने ऊँचे लक्ष्य तक पहुँचने में मदद करते हैं। वह मेरी लीग के फुटबाल कोच भी हैं। वे मेरे साथ बहुत सारे विषयों के बारे में बात करते हैं। वे मुझे कला में भी मदद करते हैं। मेरा परिवार मेरी पहचान को आकार देता है।

परिवार का महत्त्व

शैलजा सैनी, एडिसन पाठशाला उच्च स्तर-२

मैं जे.पी. स्टीवन हाईस्कूल में ९वीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं हिंदी यू.एस.ए. पाठशाला में ७ साल से पढ़ रही हूँ। मैं बैडमिंटन खेलती हूँ और Red Cross Organization में लोगो की मदद करती हूँ।

दो वर्ष पूर्व जब में अपनी गर्मी की छुट्टी बिताने भारत गयी थी तब मुझे परिवार का महत्व क्या होता है उसका आभास और अहसास हुआ। हम जब दिल्ली हवाई अड्डे उतरे तो भारत की गर्मी ने हमारा स्वागत किया।

जल्दी से अपना सामान बेल्ट से उतारकर जब हम बाहर जाने वाले गेट की तरफ बढ़े तो पाया कि मेरी चचेरी बहन डिम्पी, जो हमारे साथ सफर कर रही थी, कहीं भी नज़र नहीं आ रही थी। यह देख कर मेरे चाचा और चाचीजी का बुरा हाल हो गया। तब मेरे पापा ने कहा कि घबराने की जरुरत नहीं है। अब हम अपने देश में हैं। मैं जा कर एयर पोर्ट सिक्योरिटी में घोषणा करवाता हूँ। पापा के घोषणा करवाते ही एयरपोर्ट के सारे द्वार चारो तरफ से बंद करवा दिए गए। वहाँ चाची ने रो-रो कर अपना बुरा हाल कर लिया था। मेरी मम्मी और मेरा भाई चाची को सांत्वना दे रहे थे।

जैसे ही पुलिस ने डिम्पी को खोजना शुरू किया तो देखा कि डिम्पी एक आइस क्रीम की दुकान के सामने खड़ी हो कर कुछ विचार में मग्न है। जैसे ही पुलिस ने डिम्पी कह कर उसको पुकारा वह डर गई और मम्मी-मम्मी कह कर रोने लगी। उसके रोने की आवाज सुन कर चाचा, चाची, मम्मी और पापा उस ओर भागे। हम सबको आता देख कर डिम्पी भाग कर अपनी मम्मी की गोदी में चढ़ गयी। सबको एक साथ देख कर पुलिस एयर पोर्ट सिक्योरिटी और मेरे पूरे परिवार वालों के जान में जान आई।

उस दिन मुझे एहसास हुआ कि परिवार का क्या महत्व है और एक साथ होने से सारी मुश्किलें आसान लगती हैं।

मेरे परिवार की फ्लोरिडा यात्रा

मैं पिछले साल अपने परिवार के साथ फ्लोरिडा गया था। हमें वहाँ बहुत मज़ा आया। हम वहाँ कार से गए थे। वहाँ पहुँचने में सत्रह घंटे लग गए थे। पहले दिन मेरा परिवार एक वाटिका में गया था। इस वाटिका में एक जल क्रीड़ावन था। हम बहुत गीले हो गए थे। इसके बाद हम दो दिनों के लिए यूनिवर्सल स्टूडियो गए। यूनिवर्सल स्टूडियो में कई सवारियों पर बैठे थे। फिर हम तीन दिनों के लिए डिज़नी गए। डिज़नी और यूनिवर्सल में हमें बहुत मज़ा आया। आखिरी दिन हम समुद्र के किनारे गए। हमने समुद्र में खूब गोते लगाए। हमारे परिवार की यह फ्लोरिडा यात्रा मुझे बहुत दिनों तक याद रहेगी।

भुवन युतुरु - एडिसन पाठशाला - उच्चस्तर २

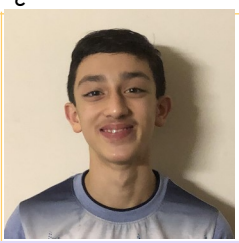

परिवार के साथ दिवाली

मेरा नाम मनन राजपूत है। मैं १२ वर्ष का हूँ और एडिसन हिंदी पाठशाला में उच्च स्तर-२ का छात्र हूँ। मुझे फुटबॉल खेलना बहुत पसंद है। मैं थॉमस जेफ़र्सन स्कूल में छठी कक्षा का विद्यार्थी हूँ।

अगर आपको दिवाली का त्योहार पसंद है तो आपको मेरा यह लेख अवश्य पढ़ना चाहिए। दिवाली मेरा सबसे प्रिय त्योहार है। मेरा पूरा परिवार दिवाली बहुत उत्साह से मनाता है। हम सब साथ मिलकर शाम को लक्ष्मी पूजन करते हैं और उसके बाद ढेर सारे पटाखे जलाते हैं। मुझे पटाखे जलाना सबसे अधिक पसंद है। इस वर्ष मेरे पड़ोस में बहुत सारे लोगों ने मिल कर पटाखे जलाये। पहले न्यू जर्सी में पटाखे जलाने पर पाबन्दी थी, लेकिन इस वर्ष पटाखों पर कोई पाबन्दी न होने के कारण हमने अलग-अलग तरह के पटाखे जलाये। मैंने और मेरे छोटे भाई ने सुनहरे और लाल रंग का रेशम कुर्ता पहना था और हम बाहर खुले मैदान में गए थे। वहाँ मेरे और भी दोस्त आये हुए थे। हम सब ने मिलकर वहाँ फुलझड़ी, अनार, चरखी और रॉकेट जलाया। हमने लगभग एक घंटे तक पटाखे जलाये और हमें बहुत मज़ा आया। बाद में सबने मिल के वहां पर फैला हुआ सब कूड़ा-करकट साफ़ किया और अपने-अपने घर चले गए। मेरे माता पिता ने मुझे और मेरे भाई को उपहार दिए। मेरी माँ ने खीर और बेसन के लड्डू बनाये थे। हमने ढेर सारी मिठाइयाँ और खीर खाई। इस तरह मैंने इस वर्ष अपने परिवार के साथ दिवाली बड़ी धूम-धाम से मनाई।

मेरे परिवार के साथ छुट्टी

मेरा नाम दिया नांगिया है। मैं तेरह साल की हूँ और आठवी कक्षा में हूँ। मैं अपने माता-पिता, बड़ी बहन और दादा-दादी के साथ रहती हूँ। मैं बचपन से हिन्दी पाठशाला जा रही हूँ और मैं स्नातक होने के लिए उत्साहित हूँ क्योंकि मैं भाषा के बारे में अपना ज्ञान पूरा कर सकती हूँ।

इस साल छुट्टियों में मेरा परिवार काबो, मेक्सिको गया था। मैं अपनी माँ, पिताजी, बहन, दादा और दादी के साथ गयी थी। मेरी बुआ का परिवार भी हमारे साथ गया था। हम सभी ने वहाँ कई गतिविधियों में भी भाग लिया। हम सभी वहाँ वापस जाना पसंद करेंगे। हमने डॉल्फ़िन के साथ तैराकी की। एक दिन हम नाव यात्रा पर गए। पानी के नीचे जाकर हमने सुंदर मछलियाँ देखी। काबो अपने आर्क के लिए बहुत प्रसिद्ध है जो समुद्र के बीच में चट्टानों से बना था। हमने आर्क के आगे सूर्यास्त होता देखा था और वह बहुत सुंदर था। हम कई अदभुत रेस्तरां में खाना खाने गए। हर दिन हमने कुछ नया भोजन खाया। भोजन बहुत अच्छा था। हमने टैको, बरीटोस, क्सेडिया, गुआकमोले, साल्सा और मैक्सिकन पिज्जा खाया। मिठाई भी बहुत अद्भुत थी। हम सब चाहते हैं कि हम परिवार सहित वापस जा सकें।

दुनिया में सबसे प्यारा, मेरा परिवार

मेरा नाम देव द्विवेदी है। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला की उच्चस्तर-२ कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं जॉन एडम्स मिडिल स्कूल की आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं इस वर्ष की भारत यात्रा पर भी गया था।

मेरा परिवार मेरे लिए सदा ही विशेष रहा है। मेरे परिवार में बहुत सारे सदस्य हैं। परन्तु जो मेरे साथ अमेरिका में रहते हैं, वे मेरे माता, पिता, और छोटा भाई हैं। मैं अपने परिवार के साथ बहुत सारे त्यौहार मनाता हूँ। जब दिवाली होती है, तब हम घर के पीछे जाकर फुलझड़ी जला कर दिवाली का आनंद लेते हैं। एक बार दिवाली के समय हमने भगवान की पूजा की। पूजा के बाद हम बाहर गए और फुलझड़ी को जलाकर मैंने और मेरे भाई ने भारत जैसे दिवाली का अनुभव किया। दिवाली की ही तरह हम होली, दशहरा, गणेश चतुर्थी, आदि त्यौहार बड़ी श्रद्धा और उत्साह से मनाते हैं। मेरे परिवार में हम रोज सुबह घर के बाहर निकलने से पहले नहा कर भगवान की पूजा करते हैं। मेरी माता और पिता रोज शाम को पाठशाला के गृहकार्य में सहायता करते हैं। वे मुझे और मेरे छोटे भाई को न केवल पढ़ाई से सम्बंधित शिक्षा देते हैं परन्तु इसके साथ वे गीता, रामायण, और महाभारत की कथा सुना कर जीवन की अमूल्य शिक्षा देते हैं। इस तरह वे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

अंत में मैं अपने छोटे भाई का आभारी हूँ, क्योंकि वह मेरे एक अच्छे मित्र की तरह रहता है। यह मेरा सुन्दर और विशेष परिवार है।

मेरी कैलिफ़ोर्निया यात्राएँ

निलय मालू - एडिसन पाठशाला, उच्चस्तर-२

दो साल पहले मैं अपने परिवार के साथ कैलिफ़ोर्निया घूमने गया था। वहाँ हम दस दिन में तीन प्रमुख जगह गए थे - लॉस एंजिलस, सैन डिएगो, और सैन फ्रांसिसको। इन तीन जगह हम लेगोलैंड, यूनिवर्सल स्टूडियो, गोल्डन गेट ब्रिज, रेडवुड जंगल और समुद्र तटों पर गए। मुझे लेगोलैंड तथा यूनिवर्सल स्टूडियो सबसे अच्छे लगे। काल्पनिक जीवों के झूले, कारों की रेस और विभिन्न प्रकार के देशों के मोडलों की प्रदर्शनी में हमें बहुत मजा आया। यूनिवर्सल स्टूडियों में भी बहुत मज़ेदार सवारी थी - जैसे कि कुछ डरावनी, कुछ तेज, कुछ जिनमें गीले होते हैं और कुछ फिल्मों के ऊपर। हम बहुत प्रसन्न हुए। आप भी हो सके तो जरूर जाएँ। फिर हम गोल्डन गेट ब्रिज गए। वह बहुत ही सुदंर है और उसकी अभियांत्रिकी भी कमाल की है। मुझे वह छुट्टी कभी नहीं भूलती।

परिवार के साथ स्विट्ज़रलैंड यात्रा

मेरा नाम शेफाली अवस्थी है। मैं आठवी कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं वुड्रो विल्सन मिडल स्कूल की छात्रा हूँ। मुझे क्रॉस कंट्री और ट्रैक में दौड़ना पसंद है। मुझे किताब पढ़ना और गीत गाने का शौक है।

मुझे अपने परिवार के साथ स्विट्ज़रलैंड जाना बहुत पसंद है। पिछली यात्रा में हमने बहुत कुछ देखा था। विशाल पहाड़, सुन्दर झीलें और साफ वातावरण से स्विट्ज़रलैंड मन को बहुत प्रसन्न करता है। हम स्विट्ज़रलैंड के लूसर्न शहर मे रुके थे। यह पुराना शहर है जिसमें अनेक दर्शनीय स्थल हैं। हमारे होटल के पास प्रसिद्ध कपिलब्रुक पुल था। बहुत सारे लोग इस पुल के ऊपर चलने आते हैं। यह पुल लूसर्न झील के ऊपर बना था। हमने इस पुल पर तस्वीरें खींची। झील के पानी में मछली साफ़ दिखाई पड़ती थीं। स्विट्ज़रलैंड में रेल यात्रा का अनुभव अविस्मरणीय था। वहाँ पर रेलगाड़ी से यात्री देश के एक कोने से दूसरे कोने तक सरलता से जा सकते है। हमने रेलगाड़ी से लूसर्न शहर से लुगानो शहर तक यात्रा की। यह यात्रा हमने तीन घंटो में पूरी की। लुगानो शहर इटली और स्विट्ज़रलैंड के बॉर्डर पर है इसलिए वहाँ पर इटालियन संस्कृति का प्रभाव देखने को मिला। हमने वहाँ पास्ता और इतालियन जेलाटो का आनंद लिया।

स्विट्ज़रलैंड का एक महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल टॉप ऑफ़ यूरोप है। यह यूरोप के ऐल्प्स पर्वत श्रंखला का सबसे ऊंचा स्थल है। टॉप ऑफ़ यूरोप पर पहुँचने के लिये हमने तीन रेल गाड़ियों में यात्रा की थी। वहाँ पर बहुत ठंड थी और चारों तरफ़ बर्फ पड़ी थी। यहाँ पर मैंने और मेरे परिवार ने पहली बार हिमनद देखा। स्विट्ज़रलैंड की प्राकृतिक सुंदरता मन को खुश कर देती है। नाव एवं रेल-यात्रा से पर्यटक सरलता से घूम सकता है।

अलोहा! हवाई में आपका स्वागत है!

मेरा नाम गौरवी अवस्थी है। मैं वूद्रो विल्सन मिडिल स्कूल में आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे क्रॉस कंट्री और ट्रैक में दौड़ना पसंद हैं। मैं बाँसुरी भी बजाती हूँ।

तीन साल पहले, गर्मी की छुट्टियाँ में मैं और मेरा परिवार हवाई द्वीपों को देखने गए थे। हवाई अमेरिका का पचासवाँ राज्य है। यह अमेरिका का एकमात्र ऐसा राज्य है जो द्वीपों का संग्रह है। हवाई की राजधानी होनोलूलू है। हम लोग हवाई के ओआहू द्वीप पर गए थे। होनोलूलू इसी द्वीप पर स्थित है। अमेरिका के इतिहास में होनोलूलू का विशेष महत्व है। द्वितीय विश्व युद्ध में जब जापान ने पर्ल हार्बर पर आक्रमण किया, तब अमेरिका ने युद्ध में प्रवेश किया था। हम लोगों ने पर्ल हार्बर के उस स्थान को तथा वहाँ पर स्थित संग्रहालय को भी देखा। हवाई की प्राकृतिक सुंदरता अद्वितीय है। वहाँ पर मुझे बहुत मज़ा आया था। हम लोगो ने बहुत सारी जल क्रियाएँ की थीं। हवाई में हम समुद्र तट पर खेले और पानी में तैरे। हवाई का पानी एकदम साफ था और बहुत सुन्दर लग रहा था। पानी के अंदर हजारों मछलियाँ घूम रही थीं। वे सब अलग-अलग रंगों की थीं, और बहुत मन-मोहक लग रही थीं। हमने कैनोइंग, सेलिंग, और स्नॉर्केलिंग भी की। वहाँ जाकर मैंने हवाई के इतिहास के बारे में बहुत सीखा। हवाई के द्वीप पानी के नीचे फटे ज्वालामुखी के लावा से बने थे। आज भी वहाँ पर कई ज्वालामुखी हैं। इसमे से एक ज्वालामुखी डायमंड हेड कहलाता है। वह ज्वालामुखी निष्क्रिय है, पर आज भी वहाँ पर ज्वालामुखी का क्रेटर साफ दिखाई देता है। सरकार ने उस स्थान को अब एक राष्ट्रीय उद्यान में बदल दिया है। मैंने उस उद्यान में हाईकिंग की और डायमंड हेड के ऊपर चढ़ कर ओहाऊ द्वीप की सुन्दर स्काइलाइन देखी। मैंने हवाई द्वीप की यात्रा में बहुत मज़ा किया और बहुत कुछ सीखा।

एडिसन पाठशाला, उच्चस्तर-२

मेरा परिवार मेरे विचार

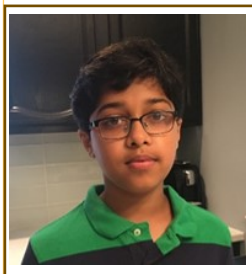

मेरा नाम सोहम चवाथे है। मैं जॉन ऐडम्स पाठशाला में आठवीं कक्षा में पढता हूँ। मैं एडिसन, न्यू जर्सी में रहता हूँ। यह मेरा हिंदी पाठशाला का आखरी वर्ष है। मेरा परिवार मुझे बहुत प्यारा है। अपने परिवार के साथ मेरी बहुत अच्छी और बहुत सारी यादें हैं। मैं अपने परिवार के साथ खुशी महसूस करता हूँ। हम सब साथ में त्योहार मनाते हैं। इस वर्ष शीत ऋतु की छुट्टियों में मेरे दो मामाजी अपने परिवार के साथ हमारे घर आये थे। घर में चार छोटे बच्चे थे - मेरा दस साल का भाई, मेरी ममेरी बहन, और मेरे दो एक वर्ष के ममेरे भाई। हमने बहुत मजा किया। यह उनकी न्यू जर्सी की दूसरी यात्रा थी। हमने उन्हें न्यू-जर्सी में बहुत जगह घुमाया। उन्हें ओक ट्री रोड पर भारतीय खाना बहुत पसंद आया। एक दिन हम उन्हें न्यूयॉर्क भी ले गए। सबके साथ छुट्टियाँ बिताना मुझे बहुत अच्छा लगा, बहुत सारी यादें जुड़ गईं। मैंने और मेरे भाई ने सारे छोटे भाई-बहनों का खयाल रखा। इससे हमने जिम्मेदारी भी सीखी। मेरा परिवार मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

मेरा नाम यश दीक्षित है। मैं जॉन एडम्स मिडिल स्कूल में पढ़ता हूँ। मैं आठवीं कक्षा का छात्र हूँ। मेरे प्रिय विषय गणित और विज्ञान हैं। मुझे कई खेल खेलने अच्छे लगते हैं, जैसे कि क्रिकेट और बास्केटबॉल। मैं ७ वर्ष से हिंदी यू.एस.ए. में पढ रहा हूँ। मैं उच्चस्तर-२ के बाद हिंदी यू.एस.ए में स्वयं सेवक बनना चाहता हूँ।

मैं अपने नाना-नानी और दादा-दादी से बहुत प्यार करता हूँ। हर वर्ष वे हमारे साथ रहने आते हैं। पिछले वर्ष मेरे नाना-नानी अमेरिका आए थे। मुझे उनके साथ रहना बहुत अच्छा लगा। मेरे नाना जी बहुत होशियार हैं और वे क्रिकेट बहुत अच्छे से खेलते हैं। वे मेरे साथ हर रोज़ क्रिकेट खेलते थे, और उन्होंने मुझे और मेरे दोस्तों को कई चीज़ें सिखाई। उन्होंने मुझे हिंदी भाषा के बारे में भी बहुत जानकारी दी। मेरी नानी मुझसे बहुत प्यार करती हैं, और वे बहुत अच्छा खाना बनाती हैं। हर रोज़ वे मुझे बहुत स्वादिष्ट खाना खिलाती थीं और मुझे कई प्रकार के भोजन बनाना सिखाती थीं।

हम छुट्टियों में कई जगह घूमने गए जैसे निआग्रा फाल्स, वाशिंगटन डी.सी., और माउंट वाशिंगटन। अपने खाली समय में हमने कई खेल खेले, मजे किए, और पुरानी यादें ताज़ा कीं। मेरे लिए यह एक बहुत विशेष और अनोखा अनुभव था। मुझे बहुत ख़ुशी हो रही है कि मेरे दादा-दादी इस वर्ष अमेरिका आ रहे हैं।

मेरा नाम सुमेधा जेना है, और मैं वुडरो विल्सन मिडिल स्कूल में आठवीं कक्षा में हूँ। मुझे अपने खाली समय में पढ़ना, संगीत सुनना और टीवी देखना पसंद है। मुझे अलग-अलग जगह की यात्रा करना भी पसंद है।

मेरे परिवार में चार सदस्य हैं, मेरी माँ, मेरे पिता, मेरा भाई और मैं। मेरे परिवार को एक साथ यात्रा करना पसंद है। इन सर्दियों की छुट्टियों में मेरा परिवार नियाग्रा फॉल्स गया था। हम कार में छह से सात घंटे तक चलते गए। समय गुजारने के लिए मेरे पिताजी ने कुछ हिंदी गाने गाए और मेरी माँ ने भी उनके साथ गाया। यह यात्रा वास्तव में मजेदार थी, क्योंकि हम एक परिवार के रूप में एक साथ यात्रा कर रहे थे। हमारे वहाँ पहुंचने के बाद मेरा पूरा परिवार कार से बाहर निकल कर झरने की एक अच्छी तस्वीर पाने के लिए बहुत ठंड में चला। नियाग्रा फॉल्स से वापस लौट कर हम होटल में चले गए। हमने बैठकर एक दूसरे के साथ बातचीत की और टी.वी देखी। कुल मिलाकर मुझे वास्तव में यह छुट्टी बहुत पसंद आई क्योंकि मुझे अपने परिवार के साथ बहुत समय बिताने का मौका मिला।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

मेरा नाम शिवॉक तिवारी है। मैं छठवीं कक्षा का विद्यार्थी हूँ। मैं ११ साल का हूँ और हिन्दी पाठशाला में उच्चतर-२ में पढ़ रहा हूँ। यह मेरा आख़िरी साल है, इसके बाद मैं हिन्दी पाठशाला में स्वयंसेवी के रुप में अपना समय देना चाहता हूँ।

मेरे परिवार में चार सदस्य हैं। मेरी माताजी, मेरे पिताजी, मेरे बड़े भैया और मैं। हम सभी को साथ में बैठकर समय बिताना बहुत अच्छा लगता है। मेरे पापा, भैया और मैं गर्मी की छुट्टियों में क्रिकेट खेलते हैं। हम हर दो साल में भारत जाते हैं और वहाँ की प्रसिद्ध जगहों में जाकर भारत के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। हमारे घर का नियम हैं की सिर्फ़ हिन्दी में ही बातचीत करना है। मुझे हिन्दी पुस्तक पढ़ना और सिनेमा देखना अच्छा लगता है। हमारे घर में ज़्यादातर भारतीय खाना ही बनता है। मुझे मेरी मम्मी के हाथ की बनी पानी पूरी और वड़ा पाव बहुत पसंद है। मेरे भैया को हिन्दी गाने बहुत पसंद हैं, उसके मोबाइल फ़ोन का संगीत भी हिन्दी गाना है, जो रोज़ सुबह-सुबह हमें नींद से उठाने के लिए बजता है। हम सब का प्रिय छुट्टी स्थल फ़्लोरिडा का डिज़्नीवर्ल्ड है जहाँ जाकर हम सब का मन प्रसन्न हो जाता है। पिछले वर्ष दिसम्बर में मेरे भैया, हिन्दी यू॰एस॰ए॰ की तरफ़ से भारतयात्रा में गए थे। वहाँ पर वे भारत के राष्ट्रपति से मिले थे। उनका अनुभव सुनकर हम सब बहुत ही प्रसन्न हुए। भारत है ही ऐसा सुन्दर देश।

"हमारी अच्छी आदतें और अच्छे संस्कार ही परिवार को जोड़े रखते हैं और यही घर को स्वर्ग के समान बना देते हैं"

परिवार का महत्व

नमस्ते, मेरा नाम सानिका गोडबोले है। मैं सातवी कक्षा में पढ़ती हूँ। इस साल मैं एडिसन की हिंदी पाठशाला से आठ साल की पढ़ाई के बाद स्नातक हो जाऊँगी। मुझे बहुत ख़ुशी है कि अमेरिका में रहकर भी मुझे हिंदी सीखने का मौका मिला और मैं स्वयंसेवक के रूप में हिंदी पाठशाला से जुड़े रहना चाहती हूँ। मुझे मेरे खाली समय में चित्र बनाना, पुस्तक पढ़ना, मित्रों और सहेलियों के साथ वक्त बिताना पसंद है।

कुछ महीने पहले मेरी माँ और बहन को मेरे मामा के विवाह के लिए दो हफ्ते भारत जाना पड़ा। मैं और मेरे पिताजी ने वे दो हफ्ते बहुत आनंद में बिताए। हम दिन भर अपना-अपना काम करते थे, लेकिन शाम को हम दोनों अलग-अलग चलचित्र देखते, बातें करते और नए-नए व्यंजन चखते थे। हर रात मेरी माँ का फ़ोन भी आ जाता था। वह भी विवाह में बहुत व्यस्त और बहुत आनंद ले रही थीं। उनको ऐसा लगता कि हमें भी शादी में शामिल होना चाहिए था। कुछ दिन तो होटल के खाने में बहुत मजा आया, लेकिन बाद में माँ के हाथ के खाने की बहुत याद आने लगी। उस हफ्ते में हमें पता चला कि ज्यादा पनीर, मेरा पसंदीदा, खाने से उसकी भी रुचि कम हो सकती है। हमें माँ का खाना ही पसंद था और मेरी बहन के बिना सारा घर सूना-सूना लग रहा था। दो हफ़्तों के बाद फिर वह दिन आ गया जब हम हवाई अड्डे जा कर सबको वापस घर ले आए। माँ और बहन के घर आते ही ऐसा लगा की घर का प्राण लौट आया है। हम चारों को पता चला कि एक भी सदस्य घर में न हो तो घर कितना अकेला और अजीब लगता है। उस दिन हमें हमारे परिवार का असली महत्व पता चला।

परिवार की भूमिका

मेरा नाम सिरीशा बंसल है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे हिंदी पढ़ना और लिखना अच्छा लगता है। मेरी रूचि किताबें पढ़ने में है।

बिना परिवार के हर व्यक्ति अधूरा होता है, क्योंकि परिवार हम सभी के जीवन का एक अभिन्न अंग है। पूरे जीवन भर में परिवार बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक परिवार में बहुत सारे रिश्ते, जैसे दादा-दादी, नाना-नानी, माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-चाची आदि होते हैं। मेरे परिवार में नाना-नानी, दादी, माता-पिता, व एक छोटा भाई है। मेरा परिवार एक खुशहाल परिवार है, जो मुझे और मेरे भाई को ढेर सारा प्यार देता है। मेरे पिता एक इंजीनियर है तथा मेरी माँ जमीन जायदाद का काम करती हैं। मेरे परिवार के सभी लोग एक दूसरे का बहुत ख़याल रखते हैं। मेरा परिवार एक सुखी परिवार है।

विल्टन पाठशाला, उच्चस्तर-२

परिवार – परिभाषा और महत्त्व

सानवी बाठला

मेरे हिंदी यू॰एस॰ए॰ परिवार ने मेरे जीवन में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हम पिछले ७ वर्षों से न सिर्फ़ एक साथ छात्रों की तरह विकसित हुए हैं, बल्कि इंसान की भाँति भी। जब भी हमारे पास कोई मुद्दा होता है, हम हमेशा एक दूसरे का साथ देते हैं, खासकर जब हमें इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है। ऐसा कई बार हुआ है जब मुझे कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा और मेरी तत्काल प्रतिक्रिया अपनी हिंदी कक्षा के दोस्तों से आश्वासन लेने की हुई। एक दूसरे की हमेशा मदद करने के लिए तत्पर रहना, यही एक परिवार की परिभाषा है।

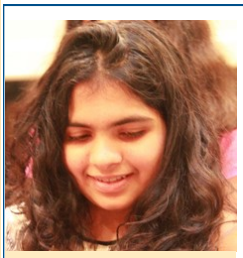

सुहानी सुनेजा

मेरा नाम सुहानी सुनेजा है। मैं विल्टन, कनेक्टिकट में रहती हूँ। मेरे परिवार में एक नानी जी, पिताजी, माता-जी, भाई, और कुत्ता है। मेरा परिवार मेरे लिए मेरी दुनिया है। मेरा परिवार मेरे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारा परिवार हमेशा हमारे साथ रहता है। परिवार के लोग हमेशा सहायता करते हैं, और अगर कभी हमें कोई दुख होता है तो वे हमें सहारा देते हैं और खुश कर देते हैं। परिवार में कोई भी कभी भी पीछे नहीं छोड़ा जाता है या भुला दिया जाता है। परिवार के लोग हमेशा हमारा साथ देते हैं और अगर कभी कोई गल्ती हो जाए तो हमेशा माफ़ कर देते हैं। हम अपने परिवार के साथ सुख दुःख बाँटते हैं और बहुत मस्ती भी करते हैं।

मीरा शर्मा

मेरा नाम मीरा शर्मा है। मैं उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ। मैं कनेक्टिकट निवासी हूँ और आठवीं कक्षा की विद्यार्थी हूँ। मुझे गणित और विज्ञान बहुत पसदं है। साथ ही मुझे अलग-अलग वाद्ययंत्र बजाना अच्छा लगता है। मैं और मेरी बहन कई वर्षों से हिंदी पाठशाला जा रहे हैं।

हर एक के जीवन में परिवार बहुत महत्त्वपूर्ण है। परिवार न हो तो जीवन बहुत दुखी और रंगहीन है। चाहे जो भी हो परिवार हमेशा आपकी देखभाल और सहायता करेगा। हमारे परिवार के सदस्य रंग और ख़ुशी की भावना जोड़ते हैं। परिवार न हो तो हम से आधिकांश कार्य नहीं होगा। इसलिए, इस लेख को पढ़ने के बाद अपने प्यारे परिवार के पास जाओ और उन्हें प्यार दो। मुझे हिंदी यू.एस.ए के परिवार से भी बहुत प्यार मिला है। मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि मुझे हिन्दी पढ़ने का इतना अच्छा अवसर मिला।

लॉरेंसविल पाठशाला, उच्चस्तर-२

पोनकमपल्लि परिवार में दुर्गा नवरात्री

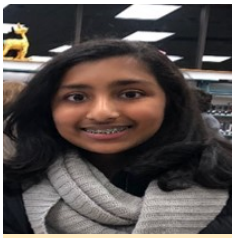
अदिति पोनकमपल्लि

मेरा नाम अदिति पोनकमपल्लि है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं लॉरेंस मिडिल स्कूल में पढ़ती हूँ। मुझे वायोलिन बजाना पसंद है। मुझे चित्रकला भी पसंद है। मैं सात वर्ष से हिन्दी सीख रही हूँ।

दुर्गा नवरात्री हर साल शरद ऋतु में मनाई जाती है। यह नौ दिन का त्योहार है। नौ दिन दुर्गा के नौ अवतारों के प्रतिनिधि हैं। इस त्योहार में हम बुराई पर अच्छाई की जीत का जश्न मनाते हैं। हर साल मेरा परिवार यह पूजा करता है। हम कई स्वादिष्ट भोजन बनाते हैं जैसे दध्यान्नं, पुलिहोरा, खीर इत्यादि। हम नवमी के दिन यन्त्र की पूजा भी करते हैं, इसे हम वाद्य पूजा कहते हैं। इस दिन हम पुस्तकों के अलावा सारे वाद्य यंत्रों की पूजा भी करते हैं। दशहरा नवरात्री के बाद दशमी के दिन मनाते हैं। इस दिन हम फूल की माला बनाकर भगवान को सजाते हैं। घर के सामने रंगोली भी बनाते हैं। यह एक बहुत महत्वपूर्ण त्योहार है। इसीलिए यहाँ भारत से इतनी दूर अमेरिका में भी हमारे परिवार ने इस परंपरा को ज़ारी रखने की छोटी सी कोशिश ज़ारी रखी है।

हमारा परिवार और दुर्गा नवरात्री

नेहा शिरवाकर

मेरा नाम नेहा शिरवाकर है और मैं दसवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं सात साल से लॉरेन्सविल हिंदी पाठशाला जा रही हूँ। मुझे नाचने एवं गाने का बहुत शौक है। मैं गिटार बजाना भी पसंद करती हूँ।

दुर्गा नवरात्रि शरद ऋतु में मनाई जाती है। यह भारत के मुख्य त्योहारों में से एक है। यह नौ दिन और नौ रात मनायी जाती है। दुर्गा दिव्य शक्तियों का एकीकृत प्रतीक हैं। वे माँ हैं, जो स्वार्थ, ईर्ष्या, नफ़रत, क्रोध और अहंकार की बुरी ताक़तों से लोगों की रक्षा करती हैं। हमारे घर में हम सिर्फ़ दो दिन के लिए मनाते हैं। हम नवमी और दशमी ही मनाते हैं। नवमी के दिन हमने आयुध पूजा की। इस दिन हम दुर्गा माँ की पूजा सरस्वती के अवतार में करते हैं। हम इस दिन पुस्तकें, कंप्यूटर, गाड़ियों इत्यादि की पूजा करते हैं। दशमी के दिन हम विजय दशमी की पूजा करते हैं। इस दिन हम भगवान शिव को शमी पतीया देते हैं। फिर हम प्रसाद बनाते हैं और मंदिर में देते हैं। हम हर वर्ष अपने दोस्तों के साथ मंदिर जाते हैं। नवरात्रि पर मुझे बहुत मज़ा आता है।

"परिवार साथ रहने से नहीं, बल्कि हमेशा साथ जीने से बनता है"

मैं और दशहरा

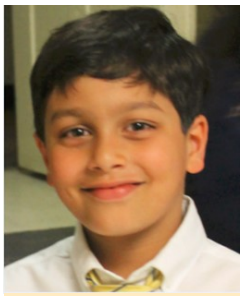

आकाश नायक

मैं २००४ में दशहरे के दिन पैदा हुआ था। इसीलिए दशहरे के बारे में बताना चाहता हूँ। दशहरे को दुर्गा पूजा भी कहा जाता है। इस दिन भगवान राम ने राक्षस रावण वध किया था। श्री राम ने राक्षस रावण से सीता को बचाया था। रावण को मारने से पहले श्री राम ने दुर्गा माता की पूजा की थी, इसीलिए दशहरा में दुर्गा माता की पूजा की जाती है। दशहरा के दिन हमारे घर में हम सब सुबह उठकर सबसे पहले घर की सफाई करते हैं। इसके बाद में नहाते हैं। फिर पूजा घर में दिया जलाते हैं। उसी दिन मेरा जन्मदिन भी है, इसीलिए मेरी माँ मेरी भी आरती उतारती हैं। नाश्ते के बाद हम दुर्गा मंदिर जाते हैं। घर आने के बाद माँ खाना बनाती हैं और सब मिलकर खाते हैं। रात को हम भजन कीर्तन भी करते हैं।

परिवार

साउथ ब्रंस्विक पाठशाला, मध्यमा-३

प्रिशा अग्रवाल

मेरा एक छोटा सा परिवार है, जिसमें मेरे माता और पिता हैं। कोलकाता में मेरा एक बहुत बड़ा परिवार है। मेरी दादी के सात भाई हैं और मेरे दादाजी के ६ भाई बहन हैं। मेरी बड़ी दादी के घर में हमारा पूरा परिवार एक साथ रहता है। इस साल की गर्मी की छुट्टी में मैं अपने माता पिता के साथ कोलकाता गयी थी। एक सप्ताह तक हम अपने पुरखों के घर में रहे। मैं इतना आनंदित हुई की मुझे वापस नहीं आना था। मैं सोचती हूँ कि एक खुश परिवार होना ज़िंदगी में बहुत आवश्यक है। एक परिवार में बहुत ज़रूरी है कि सभी लोग एक दूसरे से प्यार करते रहें और खुशी से रहें। मैं सोच नहीं सकती कि परिवार के बिना मेरा जीवन कैसा होता। परिवार बहुत मूल्यवान है। जरूरत के वक्त आपका परिवार हमेशा आपकी सहायता करेगा। हर परिस्थिति में परिवार के सदस्य आपका साथ देते हैं। जब मैं छोटी थी तो मेरे माता पिता ने मेरा ख्याल रखा, और मुझे अच्छे संस्कार दिए। उन्होंने मुझे सही गलत की पहचान करना सिखाया, जिससे मैं एक अच्छी इंसान बनूँ। जब मैं कोई भी प्रतियोगिता में भाग लेती हूँ, जैसे कि हिंदी कविता प्रतियोगिता, मेरे परिवार के सदस्य मेरा आत्मबल बढ़ाते हैं। जब मैं जीतती हूँ, तो सब गर्व महसूस करते हैं और बहुत खुश होते हैं। मेरा परिवार मेरे जीवन में सबसे मूल्यवान है और मैं उनसे बहुत प्यार करती हूँ।

"एक परिवार में बहुत ज़रूरी है कि सभी लोग एक दूसरे से प्यार करते रहें और खुशी से रहें"

"अच्छे संस्कार किसी मॉल से नहीं, परिवार के माहौल से मिलते है"

हमारे परिवार के सदस्य

साऊथ ब्रंस्विक पाठशाला, उच्चस्तर -२

मेरी प्यारी नानी

सानिका नायर

मेरी नानी मुझे बहुत प्यार करती हैं। वे मेहनती और दयालु हैं। हर कठिनाइयों में मेरी मदद करती हैं। वे भारत से हर साल अमेरिका आती हैं। हम बहुत खुशी से उनका स्वागत करते हैं। मुझे मेरी नानी के साथ समय बिताना पसंद है। वे मुझे हर बार नई कहानी सुनाती हैं। मेरी नानी बहुत धार्मिक हैं, उन्होंने हमें भगवान के भजन सिखाए हैं। वे त्योहारों पर तरह-तरह के स्वादिष्ट भोजन और मिठाई बनाती हैं। वे रोज़ सुबह सैर पर निकलती हैं। उन्हें मेरे साथ पुस्तकालय जाना पसंद है। मेरी नानी अपनी अंग्रेजी सुधारने के लिए किताबें मंगवाती हैं। जब वे भारत लौटने की तैयारी करती हैं तो मेरा मन बहुत उदास होता है। हमारी उदासी देखकर नानी हमें गले लगाकर बहुत जल्द लौटने का आश्वासन देती हैं।

मेरी प्यारी मौसी

दिया शाह

मेरा परिवार बहुत बड़ा है। मेरे परिवार में कई चचेरे भाई बहन, मौसी और मामा हैं। मैं वास्तव में अपनी मौसी के करीब हूँ, और मैं उनसे बहुत प्यार करती हूँ। जब मैं संकट में पड़ती हूँ, तब वे हमेशा मेरी मदद करती हैं, और मुझे प्रोत्साहित करती हैं। जब भी मैं भारत का दौरा करती हूँ, मुझे वहाँ बहुत मज़ा आता है। वे मुझे फिल्म दिखाने ले जाती हैं और हम मॉल भी जाते हैं। हम कई अलग-अलग प्रकार के भोजन भी साथ खाते हैं। रात में वे हमें हमारे धर्म की कहानियाँ सुनाती हैं। हर हफ्ते मैं उनसे फोन पर बात करती हूँ, क्योंकि वे भारत में रहती हैं। मेरी मौसी मेरी मदद करती हैं और मुझसे बहुत प्यार करती हैं।

मेरे नाना जी

महक दास

मेरे नानाजी एक बहुत अच्छे इंसान हैं। वे सबकी मदद करते हैं और कभी भी गुस्सा नहीं होते हैं। जब वे अमेरिका आते हैं और हम भारत जाते हैं, तब मैं उनके साथ बहुत वक्त बिताती हूँ। हम दोनों बैठ कर टीवी देखते हैं और साथ में खेल खेलते हैं। मेरे नानाजी का एक पैर लकड़ी का है और वह देख नहीं सकते हैं। भले ही उनका एक पैर नहीं है और वे देख नहीं सकते हैं, वे कभी दुखी नहीं होते हैं। वे हमेशा खुश रहते हैं और सबके साथ मज़ा करते हैं। वे एक अच्छे गायक भी हैं। मुझे उनके गाने सुनना बहुत पसंद है। वे गणित में भी बहुत अच्छे हैं। वे मेरे गृहकार्य में भी मदद करते हैं। मेरे नानाजी को सभी लोगों की अच्छाई दिखाई देती है और सब लोग उनका आदर करते हैं। मेरे नानाजी मुझे बहुत प्यार करते हैं।

मेरे मामा जी

स्वेता कार्तिकेयन

मेरे सबसे प्रिय मामा जी का नाम राजगोपाल सिवसुबर्मनियन है। वे विमान के अभियंता हैं। उनके दफतर का नाम डी. आर. डी. ओ. है। डी. आर. डी. ओ. में मेरे मामा जी को 'सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक' का पुरस्कार भी मिला था। जब मैं छोटी थी, मेरे मामा पी. एच. डी. कर रहे थे। मेरे मामा जी बहुत दयालु है। जब कभी हम भारत जाते है तो मेरे मामा जी हमें हवाई अड्डे पर लेने आते हैं। हम उन्हे स्काइप (Skype) पर देखते हैं। जब हम भारत जाते हैं, मेरे मामा जी हमें बहुत स्थानों पर घुमाने ले जाते हैं। वे हमें उपहार देते हैं। मेरे मामाजी बहुत खुशमिजाज़ हैं। मैं अपने मामाजी से बहुत प्यार करती हूँ।

मेरी दादी

प्रणय हिरपरा

मेरी दादी का नाम शारदाबेन है। मेरी दादी बड़ी प्यारी हैं। बचपन में वे मुझे छोटे-छोटे गाने सिखाती थीं। मेरे लिए अच्छा-अच्छा खाना बनाती थीं। मुझे चिड़िया की कहानी भी सुनाती थीं। मेरी दादी मुझे बहुत प्यार करती हैं। मैं रूठ जाऊं तो मनाती हैं और मुझे टाफी देती हैं। जब हम लोग भारत जाते हैं, तब हमारे लिए अच्छी-अच्छी मिठाई बनाती हैं। मेरी दादी सबसे प्यार से बात करती हैं। भारत से जब हम वापस अमेरिका आते हैं तब बहुत दुखी हो जाती हैं।

मेरी नानीजी

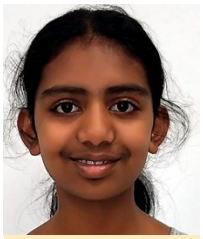
त्रिषा रेड्डी

मैं अपनी नानीजी को बहुत प्यार करती हूँ। वे भी मुझे बहुत प्यार करती हैं। बचपन में नानीजी ने मुझे बहुत दिलचस्प कहानियाँ सुनाई थीं। मेरी मनपसंद कहानी रामायण थी। हर साल गर्मी की छुट्टियों में हम नानीजी से मिलने के लिए जाते हैं। वे मेरे और मेरे भाई के लिए बहुत सारे उपहार लाती हैं। जब मैं छोटी थी, वे मेरे साथ मैदान चल कर, मेरे साथ खेलती थीं। नानीजी मेरा मनपसंद खाना भी बनाती हैं। उन्होंने ही मुझे हिंदी सीखाना आरंभ किया था। मैं उनकी जीवन की कहानी से प्रेरित होती हूँ। नानीजी बहुत परिश्रम करके हिंदी की अध्यापिका बनी थीं। वे मुझे प्रेरणादायक बातें बताती हैं। मैं हर रविवार फ़ोन पर उनसे बात करती हूँ। यह समय मेरे सप्ताहांत का मनपसंद समय है। मैं उनसे जल्दी से मिलने के लिए इंतज़ार कर रही हूँ।

मेरे नाना जी

अनिका मुंगी

मेरे नानाजी परमाणु वैज्ञानिक थे। उन्होंने अभियांत्रिकी की शिक्षा लेकर पी.एच.डी. की है। उन्होंने बहुत सारी धातुओ पर काम किया है। वे बहुत मेहनती हैं। मेरे नानाजी भारत में रहते हैं पर कभी-कभी यू.एस.ए. भी आते हैं। जब वह यू.एस.ए आते हैं तो मुझे बहुत सारे विषय पर जानकारी देते हैं। मुझे उनसे बात करने में और उनके साथ बैडमिंटन खेलने में बड़ा मज़ा आता है। वे मुझसे बहुत प्यार करते हैं। मेरे नानाजी का नाम सुभाष है। मैं अपने नानाजी को बहुत प्यार करती हूँ। मैं जब भारत जाती हूँ, तब मैं हमेशा मेरे नानाजी-नानीजी के घर जाती हूँ। मुझे मेरे नानाजी बहुत पसंद हैं।

मेरी दादी

शैली सिंधवी

मेरी दादी भारत में रहती हैं। मैं कोशिश करती हूँ कि मैं हर साल एक बार भारत जाऊँ। पिछले साल मैं भारत नहीं जा पाई थी। मेरी दादी मुझसे बहुत प्यार करती हैं। हम कोशिश करते हैं कि हर रोज उनसे बात हो जाए। जब हम बातें करते हैं, मैं दादी को कुछ भी बता सकती हूँ। मेरी दादी बहुत अच्छा भोजन बनाती हैं। जब मैं छोटी थी, मेरी दादी खाना बनाकर अपने हाथों से मुझे खिलाया करती थी। मेरी बहन और मैं रसोई सेट के साथ खेलते थे, क्योंकि हमारी दादी ने हमारे लिये ख़रीदा था। मेरी दादी बहुत प्यारी है, और मैं अपनी दादी से बहुत प्यार करती हूँ। मैं बहुत खुश हूँ कि मैं इस गर्मी की छुट्टियों में अपने दादा और दादी के साथ समय बिताने वाली हूँ।

मेरी चाची

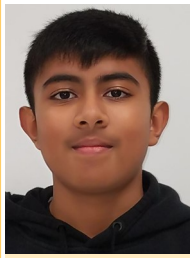
लोहित बोडीपति

मेरी चाची बहुत अच्छी हैं। वे मेरे लिए प्रेरणादायक हैं। वे एक डॉक्टर हैं। वे एटलांटा में रहती हैं। मैं हर साल क्रिसमस पर उनसे मिलने जाता हूँ। वे अन्य लोगों की मदद करती हैं। मैं बड़ा होकर उनके जैसा ही सफल डॉक्टर बनाना चाहता हूँ, क्योंकि मैं भी लोगों की मदद करना चाहता हूँ और लोगों के चेहरे पर मुस्कराहट देखना चाहता हूँ। मेरे अपने जीवन को लक्ष्य देने के लिए मैं अपनी चाची को धन्यवाद देना चाहता हूँ।

मेरी नानी जी

अंश राना

मेरी नानीजी बहुत अच्छी हैं। वे भारत में रहतीं हैं। मेरी नानीजी हमेशा खुश रहती हैं। वे मुझ पर कभी भी गुस्सा नहीं होती हैं। जब मैं भारत जाता हूँ तो वे हमेशा मेरे मनपसंद पकवान बनवाती हैं। मेरी नानीजी हमेशा मुझे बहुत सारे तोहफे देती हैं। वह मेरे लिए हमेशा काजू कतली भेजती हैं। मेरी नानीजी को मुझ से बात करना बहुत अच्छा लगता है। वे मुझे बहुत सारे किस्से सुनाती हैं। उनको बहुत से विषयों की जानकारी हैं। उनको अंग्रेजी, हिंदी, मराठी, और गुजराती आती है। मैं अपनी नानीजी से बहुत प्यार करता हूँ।

मेरी प्रिय बहन

देव गाँधी

सुहानी गांधी मेरी ममेरी बहन है। वह एक अभिनेत्री, फैशन मॉडल, और एक वकील भी है। वह एक मेहनती लड़की है। जब मैं उनसे मिलता हूँ, तब मैं बहुत खुश होता हूँ। वह ब्रिटेन में रहती है और मैं कभी-कभी उनसे मिलता हूँ। लेकिन मैं उनसे बहुत बात करता हूँ। मैं उनसे कुछ साल पहले पहली बार मिला था। जब मैं बड़ा होऊंगा तब मैं उनके जैसा सफल बनना चाहता हूँ।

मेरे परिवार के सदस्य

दीक्षा चव्हान

मेरे परिवार के अधिकांश सदस्य भारत में रहते हैं। सिर्फ मैं और मेरी माँ, पापा, तथा मेरा भाई अमेरिका में रहते हैं। लेकिन जब भी मैं भारत जाती हूँ, मैं अपने परिवार के साथ ही रहती हूँ। हम पुणे में रहते हैं। मेरे चचेरे भाई और बहन बहुत मजेदार हैं। हम हर दिन बाहर जाते हैं और आइसक्रीम खाते हैं। हम सब बहुत नटखट हैं। हम खूब सारी शैतानियां करते हैं। मेरे नाना, नानी और दादा, दादी भी हैं। वे बहुत प्यारे और अच्छे हैं। वे बहुत अच्छा खाना बनाते हैं। मेरे चाचा चाची बहुत मजेदार हैं। मेरे चाचा चाची मुझे समुद्र तट और पुल लेकर जाते हैं। हमारा परिवार बहुत प्यारा है।

परिवार संग सैर का आनंद

मेरा नाम निखिला औब्बिनेनी है। मैं ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं हिंदी-यू.एस.ए. की स्नातक हूँ। पिछले ३ साल से साउथ ब्रंसविक मध्यमा-१ में युवा स्वयंसेवक के रूप में हिंदी से जुड़ी हुई हूँ। मुझे नृत्य करना और दौड़ना पसंद है। मैं अपनी पाठशाला में ट्रेक और फ़ील्ड्स में भाग ले रही हूँ।

एक साल पहले मैं अपने परिवार और दोस्तों के साथ दक्षिणी बिंदु देखा। हमने कार्निवाल में सवारी की और की-वेस्ट देखने मियामी गयी थी। मैं और मेरे दोस्त दिन भर बहुत मस्ती की। इसके बाद हम मियामी विमान में एक साथ बैठे थे। हमने बहुत सुंदर प्रकृति वापिस आए और अपने होटल में आराम किया। मैंने के द्रश्य देखे और बहुत सी तस्वीरें लीं। न्यू-जर्सी से अपने परिवार और दोस्तों के साथ बहुत ही ख़ुशी और की-वेस्ट पहुँचने में हमें पाँच घंटे लगे। की-वेस्ट में आनंद भरा एक दिन बिताया!!
हमको बहुत मज़ा आया। हमने अमेरिका का सबसे

आश्रित आत्माराम

मेरा परिवार

मेरे परिवार में बहुत लोग हैं। मेरे परिवार में मेरी माताजी, मेरे पिताजी, और मेरा छोटा भाई हैं। भारत में मेरी नानी, मेरे मामा और मामी के साथ रहती हैं। मेरे परनाना और परनानी भी भारत में रहते हैं। मेरे परनाना १०० साल के और परनानी ९६ की हैं। मेरे परनानाजी वेद विज्ञाता हैं। वे अभी भी वेद का पाठ पढ़ाते हैं। भारत में मेरे बहुत सारे चचेरे भाई-बहन भी हैं। हम साथ में घूमने जाते हैं, खेलते हैं, बाहर खाना खाने जातें हैं, और बहुत मस्ती करते हैं। मैं अपने परिवार से बहुत प्यार करता हूँ।

मेरा परिवार है सबसे प्यारा।
यह है मेरा जहान सारा।
हूँ मै सबका दुलारा।
देख लिया मैंने जग सारा।

ईस्ट ब्रंस्विक पाठशाला, उच्चस्तर-२

ईस्ट ब्रंस्विक पाठशाला, उच्चस्तर-२

मेरा परिवार मेरा अभिन्न अंग

मेरा नाम श्रेया सिनकर है। मैं दसवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। हिंदी पाठशाला में मैं उच्चस्तर-२ में पढ़ती हूँ। मुझे विज्ञान और चित्रकला बहुत पसंद हैं।

परिवार बहुत महत्वपूर्ण है। कुछ लोग कहते हैं कि परिवार खून से जाना जाता है। जब कि कुछ लोग मानते हैं कि परिवार घर में रहने वाले लोगों से बनता है। परंतु मेरे हिसाब से परिवार उससे बहुत कुछ ज्यादा है। परिवार के सदस्यों का आप सही मायने में ख्याल रखते हैं। ये सदस्य आप जैसे हो, वैसे ही स्वीकार करते हैं और आपको बदलने के लिए नहीं कहते। आपकी चिंता उनकी चिंता, आपके दुख उनके दुख और आपके सुख उनका आनंद बन जाता है। आपके चेहरे पर मुस्कान लाने के लिये वे कुछ भी कर सकते हैं। एक परिवार प्रेम और आँसुओं से बनता है और बीतते हुए समय के साथ वह ज़्यादा मज़बूत होता जाता है। जैसे-जैसे यादें बनती हैं, वे कीमती होती जाती हैं। परिवार आपको प्रेरित करता है और आप पर विश्वास जताता है। वह आपको ध्येय प्राप्त करने में, सपने पूरे करने में और जो भी आप करना चाहें उसमें मदद करता है। परिवार में आप निश्चिंत रहते हैं, हमेशा आपका स्वागत होता है, और सदा आपकी आवश्यकता रहती है। परंतु सबसे ज़्यादा आप अपने परिवार को चाहते हैं और आपका परिवार आपको। परिवार के बिना हम अधूरे हैं।

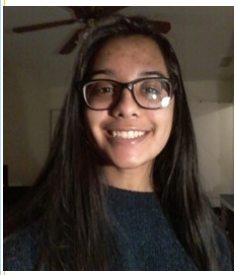

मेरा नाम निधि जोशी है। मैं दसवी कक्षा में पढ़ती हूँ और ईस्ट ब्रंस्विक की हिन्दी पाठशाला में यह मेरा आखरी वर्ष है। मैं अपने हिन्दी पाठशाला से स्नातक होने पर बहुत उत्साहित हूँ। मेरा परिवार राजस्थान से है। मैं अपने परिवार से बहुत प्यार करती हूँ। मैं अपने मम्मी-पापा, बड़ी बहन और छोटे भाई के साथ रहती हूँ। हम सभी के बीच में एक बहुत ही प्यारा रिश्ता है। मेरी मम्मी और पापा हमारे परिवार के लिए बहुत काम करते हैं। मेरा परिवार मुझे प्यार करता है और इसलिए मैं भी उसको प्यार करती हूँ। जब हम सभी एक साथ घर पर होते हैं तो मुझे बहुत ख़ुशी होती है। मेरा परिवार हर समय में मेरा साथ देता है।

अपनेपन की बगिया है, खुशहाली का द्वार,
जीवन भर की पूंजी है, एक सुखी परिवार

मेरा हिंदी यू.एस.ए. परिवार

रुशिल मल्लारपु, विल्टन पाठशाला, उच्चस्तर-२

मेरा नाम रुशिल मल्लारपु है। मैं उच्चस्तर-२ का छात्र हूँ। मैं कनेक्टिकट निवासी हूँ और नवीं कक्षा का विद्यार्थी हूँ। मुझे गणित और विज्ञान बहुत पसंद हैं। साथ ही मुझे अलग अलग वाद्ययंत्र बजाना अच्छा लगता है। मैं और मेरी बहन कई वर्षों से हिंदी पाठशाला जा रहे हैं। जब मुझे पता चला कि इस बार परिवार विशेषांक छपेगा तो मैंने सोचा क्यों न मैं अपने हिंदी यू.एस.ए. परिवार के बारे में लिखूँ। मेरा हिंदी पाठशाला की यात्रा करीब नौ साल पहले एडिसन से शुरू हुई। मैं कनिष्ठ-१ की कक्षा में गया। तब मुझे पता भी नहीं था कि मैं वहाँ क्यों हूँ। मैं छः साल का था और खेल-खेल में हिंदी के कई शब्द सीख गया। मेरे माता-पिता दोनों ही हिंदी में बात करते हैं। मुझे तब हिंदी पाठशाला में कुछ अलग नहीं लगा। धीरे-धीरे यह यात्रा यूँ ही बढ़ती गई और मैं भी। आज खुद पर यह विश्वास नहीं होता कि नौ वर्ष बीत गए। इन नौ सालों में मुझे तीन पाठशालाओं में पढ़ने का अवसर मिला - एडिसन, साउथ ब्रुंस्विक और अब विल्टन। अब मैं कुछ ही समय में इस पाठशाला का छात्र नहीं रहूँगा। जब पलट कर देखता हूँ कि मैंने क्या पाया, क्या सीखा, तो बहुत सी बातें याद आती हैं। स्पष्ट रूप से इस पाठशाला का आधार इसकी निष्ठावान शिक्षिकाएं हैं। स्वार्थरहित भाव से हर शुक्रवार अपना घर और काम छोड़, ये हम बच्चों के लिए पाठशाला आती हैं। इनका हिंदी भाषा का प्यार हमें सशक्त बनता है। मेरे अनुभव से बेहतर अध्यापिकाएँ वे हैं जो अनुशाशन और आनंद में संतुलन बनाये रखें। मैंने अपनी अनेक शिक्षिकाओं में दृढ़ता और धैर्य पाया। मेरी हर शिक्षिका को मेरा हार्दिक आभार। मेरी यादों के पन्नों से एक किस्सा उस नाटक का है जिसमें मैंने प्रथमा-२ में भाग लिया था। मेरी अध्यापिका सरिता नेमानी जी थीं। विषय था एकता और उसमें मुझे मुख्य भूमिका निभानी थी। हिंदी महोत्सव के लिए अभ्यास करने और प्रदर्शन करने में मुझे इतना मज़ा आया जो मैं शब्दों में नहीं कह सकूंगा। जब मेरा परिवार विल्टन पाठशाला का हिस्सा बना, तब मुझे अपनी माँ की मध्यमा-३ कक्षा में पढ़ने का मौका मिला। माँ तो घर में माँ है पर कक्षा में आते ही वह अध्यापिका बन जाती हैं। मुझे माँ का यह नया रूप बहुत पसंद आया। इतने वर्षों से सीखे शब्दों को हम व्याकरण द्वारा वाक्यों में उपयोग करने लगे। हम सब छात्र-छात्राएँ बहुत गलतियां करते थे। पर धीरे-धीरे हिंदी बोलना, समझना और लिखना आसान होता गया। इस साल मेरी अध्यापिका मंजू आंटी हैं। यह कक्षा सबसे अधिक दिलचस्प है। आंटी नियम बनाये रखने के साथ-साथ पढ़ाई को बहुत रोचक बनाती हैं। इन सब के साथ मैं परिवार के एक और सदस्य को नहीं भूल सकता और वे हैं उमेश महाजन अंकल। उनका विनोदशील व्यवहार मुझे सदा याद आता है। मुझे नहीं लगता मैं अपने इस परिवार से दूर रह पाऊंगा। इसलिए अगले साल मैं युवा स्वयंसेवक के रूप से फिर अपने हिंदी परिवार से जुड़ना चाहता हूँ। जो प्रशंसा एवं प्रोत्साहन मुझे यहाँ से मिला है वह अब मैं अपने छोटों से बाँटना चाहता हूँ।

चैस्टरफील्ड पाठशाला, उच्चस्तर-२ और मध्यमा-३

मेरा परिवार

मेरा नाम एंजेला आनंद है। मैं ग्यारह साल की हूँ और छठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं माउंट लौरेल में रहती हूँ। मुझे किताबें पढ़ना और टेनिस खेलना अच्छा लगता है। मुझे और मेरे परिवार को भारतीय मूल का होने पर गर्व है। मेरे परिवार में पाँच सदस्य हैं। मेरी माँ, मेरे पिताजी, मेरी छोटी बहन, मेरा छोटा भाई और मैं। मेरी माताजी और पिताजी नौकरी करते हैं। शाम को सब साथ में डिनर करते हैं। हम सब एक दूसरे के साथ रात का खाना खूब आनंद से खाते हैं। हम अपने परिवार में एक दूसरे से सब बात शेयर करते हैं। यह हमारे परिवार का नियम है। घर आकर मेरी माताजी और पिताजी हमसे हमारे पूरे दिन का हाल पूछते हैं और हमें ज़रुरत के अनुसार सलाह देते हैं। मेरी माँ हमारे गृहकार्य में मदद करती हैं, फिर हम तीनो भाई-बहन, माँ और पिताजी के साथ खेलते हैं। शनिवार और रविवार को हम कहीं बाहर जाते हैं, जैसे मॉल या किसी दोस्त के घर। कभी-कभी, माँ-पिताजी हमें पार्क में सैर कराने ले जाते हैं। मेरे दादा-दादी और नाना-नानी भारत में रहते हैं। मैं उनको बहुत याद करती हूँ, कभी-कभी उनसे फेस टाइम पर बातें भी करती हूँ। त्योहार के दिन जैसे होली, लोहरी, हम सब मिल कर पूजा करते हैं और सबकी अच्छी सेहत और खुशहाली की कामना करते हैं। मेरी हमेशा भगवान से यही प्रार्थना होती है की हम सब ऐसे ही हँसी-ख़ुशी से रहें।

मेरा नाम भाविन बोहरे है। मैं उच्च्स्तर -२ का छात्र हूँ। हिन्दी यू.एस.ए. में यह मेरा छठवां वर्ष है। इन छह वर्षों में मैंने हिन्दी के अध्ययन के अतिरिक्त संस्कृति भी सीखी है जो मुझे मेरी भारतीय संस्कृति से जोड़ती है। मुझे हिंदी यू.एस.ए. के छह साल हमेशा स्मरण रहेंगे। मैं हिन्दी यू.एस.ए. में स्वयंसेवक का योगदान करना चाहता हूँ। हमारा परिवार एक बहुत प्यारा और खुशहाल परिवार है। मैं अपने माता-पिता, दादा-दादी और बहन के साथ रहता हूँ। मैं अपने परिवार के साथ विभिन्न बाहरी गतिविधियां करता हूँ, जैसे शिविर, लंबी पैदल यात्रा, खेल खेलना। मैं अपने पिता के साथ खेलता हूँ। मुझे अपने पिताजी के साथ खेलना बहुत अच्छा लगता है। मेरे पिताजी मुझे योग और ध्यान सिखाते हैं और वास्तविक जीवन के अनुभवों को साझा करते हैं। मेरी माँ और दादी विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ बनाती हैं, जो हम बहुत पसंद करते हैं। मेरी छोटी बहन मेरा मनोरंजन करती है। वह मेरे तबला बिट्स पर नृत्य करना पसंद करती है। मेरे माता-पिता मुझे स्कूल और अतिरिक्त गतिविधियों में मदद करते हैं। वे मुझे कड़ी मेहनत और ईमानदारी से काम करने को प्रोत्साहित करते हैं। मैं अपने परिवार के साथ भिन्न-भिन्न स्थल घूमने जाता हूँ। हम सब परिवार के लोग हर त्योहार उत्साह और हर्षोउल्लास के साथ मनाते हैं और बहुत आनंद लेते हैं। मेरा परिवार बहुत आनंदित परिवार है जो दूसरों की और अपने परिवार के लोगों की मदद करता है।

मेरा नाम मानवी गुप्ता है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मेरा मनपसंद खेल हॉकी है। मैं अपने स्कूल के लिए हॉकी खेलती हूँ। मुझे रोबोट बनाना भी अच्छा लगता है। परिवार सभी के लिये बहुत महत्वपूर्ण होता है। मेरा परिवार अमेरिका में रहने वाला भारतीय परिवार है और यह दुनिया का सबसे प्यारा परिवार है। मेरे परिवार में मेरे माता-पिता और एक बहन हैं। हम सब एक दूसरे की मदद करते हैं। परिवार के लोग मेरा बहुत ध्यान रखते हैं और समय रहते सही दिशा दिखाते हैं। मेरे नाना-नानी और बड़े नाना भारत में रहते हैं, जहाँ हम अपनी गर्मियों की छुट्टियों में जाते हैं और खूब मस्ती करते हैं। वे रात में हमें कहानी सुनाते हैं। भारत में मेरे चाचा-चाची, ताऊजी-ताई जी, मौसी-मौसा और भाई-बहन भी रहते हैं। मुझे उन सभी के साथ रहना और खेलना बहुत पसंद है। हम उनके साथ सभी पलों का मजा लेते हैं और उन सभी यादों को अपने मोबाइल में कैद कर लेते हैं। हम अमेरिका आने पर उन सभी से फेसटाईम पर बात करते हैं, तब लगता है कि हम उनके साथ ही रहते हैं और हम सब एक बडा परिवार हैं। परिवार हमें बहुत कुछ सिखाता है। अपने परिवार में रहने से मैंने बचपन से ही बड़ों की इज़्जत और छोटों को प्यार करना तथा सभी ज़रुरतमंद लोगों की मदद करना सीखा है। मेरा प्यारा छोटा परिवार प्यार, देखभाल, शांति, समृद्धि और अनुशासन से भरा हुआ है।

मेरा नाम तनीषा खाबे है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं पियानो और बाँसुरी बजाती हूँ। मैं गाना भी गाती हूँ। मुझे किताबें पढ़ना पसंद है। मुझे बास्केटबॉल खेलना पसंद है। मुझे हिंदी पढ़ना और लिखना भी पसंद है। मेरा परिवार मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मेरे परिवार में मेरे सहित चार लोग हैं। मैं और मेरा परिवार न्यू जर्सी में रहते हैं, लेकिन हमारा विस्तृत परिवार भारत में रहता है। मेरे पिताजी एक इंजीनियर हैं। वे बहुत होशियार और महत्वाकांक्षी हैं। मैं और मेरी बहन संगीत सीख रहे हैं, और हमारे पिताजी हमेशा अपनी पूरी कोशिश करने के लिए हमें प्रोत्साहित करते हैं। मेरी माँ घर पर रहती हैं। जब भी हमें मदद की जरूरत होती है, वे हमारे साथ होती हैं। मेरी माँ मेरा, मेरी बहन, और घर का बहुत ख्याल रखती हैं। मेरी बहन छह साल की है। वह पहली कक्षा में है। वह बहुत प्यारी है। वह बहुत चतुर भी है। मैं अपने परिवार से बहुत प्यार करती हूँ।

मेरा नाम रीया मनचंदा है। मैं उच्चस्तर -२ कक्षा की छात्रा हूँ। मेरा परिवार बहुत छोटा है। हमारे घर में चार लोग रहते हैं। मेरा एक भाई है। उसका नाम रिशब है। मेरी माता जी का नाम ज्योति है। मेरे पिता जी का नाम राज है। मैं अपने परिवार को बहुत प्यार करती हूँ। मेरी माता जी और पिता जी काम करते हैं। मैं और मेरा भाई मिलकर खेलते हैं। हम रविवार को मंदिर जाते हैं। हम सब काम मिलजुल कर करते हैं। मैं अपने परिवार में बहुत खुश हूँ।

अनिशा सूद - मध्यमा-३

मेरा परिवार दुनिया का सबसे प्यारा परिवार है। मेरे परिवार में चार सदस्य हैं। एक पिता, एक माँ, मैं और मेरी छोटी बहन। मेरी माँ बहुत प्यारी हैं और हम सभी को प्यार करती हैं और ध्यान रखती हैं। वे हर दिन हमें स्वादिष्ट नाश्ता और भोजन देती हैं। मेरे माता-पिता एक दूसरे का बहुत ख्याल रखते हैं। मेरी माँ भारतीय संस्कृति और परंपरा के बारे में हमें बताती हैं। हम लोग खुशी से सभी त्योहारों और उत्सवों को मनाते हैं और एक-दूसरे को उपहार देते हैं। मेरे माता-पिता दोनों मुझे गृहकार्य में मदद करते हैं। हम लोग रात के खाने के समय और मैदान में एक-दूसरे के साथ कुछ समय बिताते हैं। हमारे परिवार में हमारे पिताजी और माताजी हमारा जन्मदिन बड़ी धूम-धाम से मनाते हैं। वे अनेक मित्रों को बुलाते हैं। मेरे परिवार में अनुशासन और शिष्टाचार को महत्त्व दिया जाता है। छोटे बड़ों का आदर करते हैं और बड़े छोटों को अपना प्यार और स्नेह देते हैं। परिवार के सभी काम समय पर होते हैं। खाने, पढ़ने, खेलने और सोने का समय निश्चित है। यदि कोई मुसीबत आ जाए तो परिवार एकजुट होकर उस मुसीबत का सामना करता है। मेरा परिवार एक बहुत ही बढ़िया और सुखी परिवार है।

अदिति बोहरे - मध्यमा-३

हमारा छोटा सा सुंदर और खुश परिवार है। मैं अपने माता-पिता, भाई और नाना-नानी के साथ रहती हूँ। मेरे माता-पिता मुझे बहुत प्यार करते हैं। वे मुझे हमेशा मदद करते और सराहते हैं। मुझे मेरे माता-पिता और नानी के हाथ का खाना बहुत पसंद है। हम सब परिवार के लोग हर रोज़ साथ में खाना खाते हैं। खाना खाने के बाद मैं अपने परिवार के साथ हिंदी धारावाहिक "पोरस" और "गणेश" देखती हूँ। मैं अपने परिवार के साथ भिन्न-भिन्न स्थल घूमने जाती हूँ। हम सब परिवार के लोग हर त्यौहार उत्साह और हर्षोउल्हास के साथ मनाते हैं और बहुत आनंद लेते हैं। मेरा परिवार बहुत आनंदित परिवार है जो दूसरों की और अपने परिवार के लोगों की मदत करता है।

अनुमिता वराडे - मध्यमा-३

मेरे परिवार में चार लोग हैं। हमारा परिवार सुखी परिवार है। मेरे पिता जी इंजीनियर हैं। मेरी माता जी एक गृहिणी हैं। मेरी एक छोटी बहन है। हम दोनों प्राथमिक स्कूल में जाते हैं। मेरी माँ वास्तव में अच्छा खाना बनाती हैं और मेरे पिताजी मुझे मेरे होमवर्क में मदद करते हैं। मेरे दादा-दादी दक्षिण भारत में रहते हैं। हम उन्हें गर्मी की छुट्टियों में मिलने जाएँगे। हम सभी सिनेमा थिएटर, रेस्तरां, सड़क यात्राएं आदि में जाएंगे। मुझे और मेरी बहन को बोर्ड गेम एक साथ खेलना पसंद है। मेरा परिवार पड़ोसियों के साथ मिल-जुल कर रहता है। हम लोग पड़ोसियों के दु:ख-दर्द में हमेशा सहयोगी बनते हैं। पड़ोसी अपने यहाँ हमारी एकजुटता की मिसाल दिया करते हैं जो हमारे लिए गौरव की बात है। हमारे परिवार में अतिथियों का यथोचित सम्मान किया जाता है। उनकी सुख-सुविधा का भी पूरा ध्यान रखा जाता है। हम लोग 'अतिथि देवो भव' की प्राचीन भारतीय अवधारणा को पर्याप्त महत्त्व देते हैं। इस तरह मेरा परिवार एक खुशहाल परिवार है। इस खुशहाली का रहस्य अनुशासन, पारिवारिक स्नेह और मर्यादा का पालन है। एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति की भावना परिवार को एक ठोस नींव पर खड़ा किए हुए है। ऐसे परिवार में ही सुख-शांति का निवास संभव है जहाँ एकता की भावना हो।

मेरा परिवार

पीयूष गोपाल

यादों के बक्से में बसता
बातों के समुन्दर में रहता
होता है जीवन का आधार
अपना परिवार
हमारे व्यक्तित्व को सँवारता
हमारे विचारों को निखारता
करता है प्रेरणा का प्रसार
अपना परिवार
हमारी ख़ुशियों को बाँटता
हमारी परेशानियों को झेलता
जुट जाता अनगिनत बार
अपना परिवार
पर कभी-कभी आपसी रंजिश में फँस जाता
तो कभी सामाजिक त्रुटियों को दर्शाता
कभी-कभी दूरियाँ नहीं सहन कर पाता
तो कभी नए सदस्यों की नहीं सुन पाता
कभी-कभी ममता के बोझ तले दब जाता
तो कभी विकृत प्रवृत्ति को नहीं रोक पाता
इन सब चीज़ों के समक्ष जूझता रहता की कहीं हो ना जाए निर्विकार
अपना परिवार
तो है जिसकी महिमा अपार
जो है हमें देता हमारे नाम का आधार
और लड़ता है हमारी विपदाओं से बार-बार
क्यों ना कर लें हम उसकी जयजयकार
क्योंकि वो ही तो है
अपना परिवार

मेरा परिवार

नमस्ते मेरा नाम नील गरग है। मैं एवोन हिंदी पाठशाला की मध्यमा-२ कक्षा का विद्यार्थी हूँ। मुझे हमेशा बड़ा परिवार अच्छा लगता है। अभी मेरे परिवार में, मैं, मेरी बड़ी बहन, मेरी माता और पिता जी हैं। मुझे भारत जाना अच्छा लगता है क्योंकि भारत में मेरे नाना, नानी, दादा, दादी, और भी बहुत सारे परिवार के सदस्य हैं। मेरे दादा, दादी, बुआ जी, फूफा जी, ताऊ जी, और मेरे सभी भाई बहन हुबली कर्नाटक में रहते हैं। हम जब वहाँ जाते हैं तो हम सब मिलकर एक साथ बैठकर खाना खाते हैं, घूमने जाते हैं और बहुत सारी गप्पे मारते हैं। मेरी दादी हमेशा मेरे लिए नारियल का पानी लाती हैं। मुझे वहाँ सब क्षण बहुत अच्छे लगते हैं।

मुंबई में मेरे नाना, नानी, मामा, मामी, मौसी, और मौसाजी रहते हैं। वहाँ मेरी मौसेरी बहन, भाई और मेरी बहन के साथ वक्त बिताना अच्छा लगता है। मेरी नानी मुझे बहुत अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाती हैं। वहाँ हम सब मिलकर घूमने जाते हैं। हम सब मिलकर हिंदी सिनेमा देखने जाते हैं। मुझे मेरे फुफेरे भाई के साथ और मेरे मामा के साथ स्कूटर पर घूमने में बहुत मजा आता है। जब हम अमेरिका वापस आते हैं, तो हम सभी को बहुत याद करते हैं।

परिवार और व्यवसाय

चेतना मल्लारपु एवं गुंताश कौर मथरु

मैं, चेतना मल्लारपु, आठ वर्षों से हिंदी यू.एस.ए की स्वयंसेविका हूँ तथा पिछले तीन वर्षों से विल्टन पाठशाला की संचालिका हूँ। इस वर्ष मध्यमा-३ में मेरे साथ गुंताश कौर मथरु जी ने भी पढ़ाने का उत्तरदायित्व संभाला है। इस कक्षा के बच्चों ने व्यवसाय सम्बन्धी शब्द सीखे। उसी का उपयोग करने हेतु हमने परिवार के सदस्यों को उनके विभिन्न व्यवसायों से जोड़ दिया। सभी बच्चों को यह कक्षा परियोजना करने में बड़ा मज़ा आया। उन्होंने सरल शब्दों में अपने परिवार का परिचय दिया है। हमें उनके इस प्रयास पर बहुत गर्व है।

मेरा नाम आरुषी मल्लारपु है।मैं ग्यारह वर्ष की हूँ और मैं छठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं अपने माता-पिता एवं भाई के साथ कनेक्टिकट में रहती हूँ। मेरी माता जी, चेतना, विल्टन हिंदी पाठशाला की संचालिका हैं और मेरी मध्यमा- ३ की अध्यापिका भी हैं। उन्हें अपने परिवार की देखभाल करना अच्छा लगता है । मेरे पिता जी, रवि, कंप्यूटर इंजीनियर हैं और वे दफ्तर में अधिकारी हैं। मेरा भाई, रुशिल, नवीं कक्षा का छात्र है और उसे विज्ञान बहुत पसंद है। मेरी नानी माँ भारत में रहती हैं। वे हमारे परिवार की मुखिया हैं। मुझे अपने परिवार के साथ देश-विदेश की यात्रा करना पसदं है। मैं अपने परिवार की लाड़ली हूँ।

मैं रिया राघवन हूँ और मैं आठवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मेरे परिवार में चार लोग हैं - मैं, मेरे पिता जी, मेरी माता जी, और मेरी छोटी बहन। हमारा छोटा और सुखी परिवार विल्टन में रहता है। मेरे पिता जी ऊर्जा व्यापारी हैं। मेरी माता जी कंप्यूटर अधिकारी हैं। मेरी छोटी बहन भी हिंदी पाठशाला में पढ़ती है। मेरे माता-पिता हमारा बहुत अच्छे से देखभाल करते हैं।

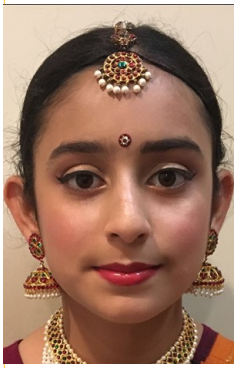

मेरा नाम शिवाली पठानिआ है। मैं छठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मेरे परिवार में चार लोग रहते हैं। मेरे पिता जी एक कंपनी में कर्मचारी हैं। मेरी माता जी मुनीम हैं और वे घर भी संभालती हैं। मेरी माता जी एक अच्छी रसोइया भी हैं। मेरी बड़ी बहन कॉलेज में पढ़ती है। मेरी दीदी को अपनी पढ़ाई के बाद कर्मचारी बनना हैं। मेरा विस्तृत परिवार अब भी भारत में रहता है। मैं अपने परिवार से बहुत प्यार करती हूँ। वे मुझे छाते की तरह धूप, बरसात, और बर्फ से बचाते हैं।

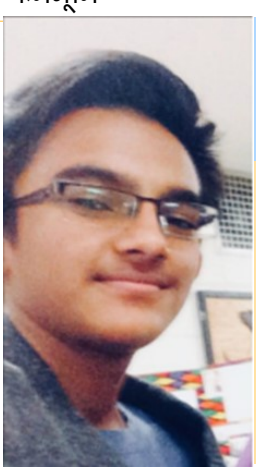

हर परिवार की कहानी

नोटबंदी, नोटबंदी, नोटबंदी

आज से बराबर डेढ़ साल पहले, यानी आठ नवम्बर साल दो हजार सोलह (११/८/२०१६) के दिन, एक ऐतिहासिक घोषणा हुई। वह थी ५०० और १००० रुपये की नोटबंदी। कुछ ही पल में मूल्यवान नोट मूल्यहीन हो गये। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का यह ऐतिहासिक फैसला था। यह गुप्त मिशन था। इसके बारे में किसी को जानकारी नहीं थी।

पिछले कई सालों से भारत की अर्थव्यवस्था को खराब करने के लिये कुछ आतंकवादी संगठन कार्यरत हो चुके थे। ऐसे लोगों के द्वारा हमारे देश भारत में नकली नोटों का भेजना बहुत सामान्य हो गया था। नकली नोटों की वजह से भारतीय रुपये का मूल्य गिरने लगा था।

नोटबंदी की खबर पूरे देश में बिजली की तरह फ़ैल गई। इंटरनेट द्वारा पूरे विश्व में उसकी जानकारी हो गई। भारत में हर गांव, राज्य, गली-गली में नोट बंदी चर्चा का विषय था। कई लोगों के घर मे शादियाँ थी। उन्हें बहुत मुसीबत का सामना करना पड़ा। पुराने नोटों के बदले मे नए नोट पाने के लिये बैंक मे अजगर की तरह लंबी लाइन लगी थी। घंटों तक लाइन में खड़ा रहना बूढ़े लोगों के लिए बहुत कष्टदायी था। कड़ी धूप की वजह से कई लोग बेहोश हो गये। कई जगहों पर लूटपाट भी हुई थी।

इतनी मुश्किल का सामना करते हुई भी आम जनता प्रधान मंत्री के नोटबंदी के निर्णय का स्वागत कर रही थी... सिर्फ देश के उज्ज्वल भविष्य के लिये!

मेरे परिवार में ५०० और १००० के नोट थे। इन रुपयों को हमें बदलना पड़ा। मेरे दादा जी भी नोट बदलने के लिए लाइन में खड़े थे। आज, उनके पास नए नोट हैं। अमेरिका और दूसरे देशों में जहाँ भारतीय लोग रहते है, वहाँ एक ही चर्चा हो रही थी -- नोटबंदी! कई तरह की अफवाहें भी फैल रही थीं। परन्तु जिन के पास काला धन नहीं था, उन्हें चिंता करने की कोई जरूरत नहीं थी। वे जब भी अपने देश में जाए वहाँ ५०० और १००० के नोट वापस कर नए नोट ले सकते हैं।

आज हर परिवार जो देश की प्रगति चाहते हैं, वे नोटबंदी के निर्णय का स्वागत करते हैं।

मेरा भारत महान!

देव बी दोशी, एडिसन पाठशाला, मध्यमा-३

"परिवार का प्यार और मित्रों का आदर, धन और विशेषाधिकार से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है"

Khushboo

Pure Indian vegetarian Restaurant

1734 OakTree Road, Edison, NJ 08820

Tel : 732-548-0013 Fax : 732-548-3607

www. khushbooo.restaurant.com

Jain Food available for Catering

We do Special South Indian Catering

We have a Party Hall up to 1200 Persons at Low, Mid and High End

We do Wedding Breakfast in Franchise, Hotel or Any Place

- Brand Name
- Hotel and
- Many other Private Halls

Specialized in Marriage-Garba, Wedding and Reception

Baby Shower, Sweet Sixteen, Engagement and Birthday Party

We make Live Food on Occasion

For Wedding we are Specialty in Gujarati Items

For Reception we have Punjabi, Italian, South Indian and Chinese Dishes Available

We do on site Picnic catering up to 2000 persons

Contact: Nicky (Naresh) Kapadia - Tel: 732-829-2099

We have live station of

Baraf Gola Center

Sugarcane Juice Center

Paan Center

Kulfi Maker

Jalabi

Green Coconut

WE LOVE BEING CLOSE TO YOUR HEART.

WITH OVER 15 LOCATIONS, THE REGION'S #1 HEART PROGRAM IS ALWAYS CLOSE TO HOME.

Make a heart-healthy appointment with an expert Penn Cardiologist, right in your own neighborhood.

Jignesh Bhavsar, MD

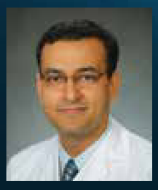
Manish Malik, MD

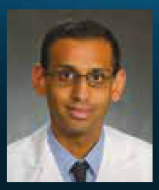
Sameer Khandhar, MD

Benjamin D'Souza, MD

Physicians are fluent in Hindi, Gujarati, Punjabi and Marathi.

To find a Penn Cardiologist near you, call 800.789.PENN (7366) or visit PennHeart.org

Cherry Hill | 1865 Route 70 East | Cherry Hill | 856.216.0300
Willingboro | 200 Campbell Drive | Willingboro | 609.871.7070
Woodbury | 1006 Mantua Pike | Woodbury Heights | 856.216.0300

Penn Medicine
Heart and Vascular Center

मेरी दीदी

रिया जैन, मध्यमा-२, साउथ ब्रन्सविक पाठशाला

मेरा नाम रिया जैन है। मैं पाँचवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं पिछले पाँच साल से साउथ ब्रन्सविक हिन्दी पाठशाला में हिन्दी सीख रही हूँ। अभी मैं मध्यमा-२ में पढ़ रही हूँ। मुझे किताब पढ़ना और तैरना अच्छा लगता है।

मेरी दीदी प्यारी दीदी

सब बहनों से प्यारी दीदी

माँ पापा की प्यारी दीदी

ऐसी है मेरी नेहा दीदी

काम वक्त पर सब वह करती

मेरा बहुत ध्यान वह रखती

कभी जो मुझसे होती गलती

पर वो गुस्सा कभी न करती

सुबह सवेरे उठाती दीदी

माँ का हाथ बँटाती दीदी

कुछ खट्टी कुछ मीठी दीदी

ऐसी है मेरी नेहा दीदी

परिवार - एक अटूट बंधन

भगवान ने न केवल मनुष्य को अपितु समस्त पशु-पक्षियों एवं प्राणियों को परिवार रूपी उपहार प्रदान किए हैं। जैसे फूल की शुरूआत कली से होती है, वैसे ही मेरे जीवन की शुरूआत मेरे परिवार के प्यार से होती है, माता-पिता, दादा-दादी और नाना-नानी से होती है। बेशक मेरे परिवार की माला छोटी है, पर उसमें सारे गुलाब के ही फूल हैं। परिवार से हमें शिक्षा, सुरक्षा, प्यार और समाज में उन्नत होकर रहने का ज्ञान मिलता है। यही शिक्षा हमें हमारी आने वाले पीडियों को देनी चाहिए। इसलिए परिवार को सहेज कर रखने के लिए परिवार के सभी सदस्यों को मिलजुल कर रहना चाहिए और हमेशा एक दूसरे का साथ देना चाहिये।

श्लोक गांगुली, मध्यमा-३

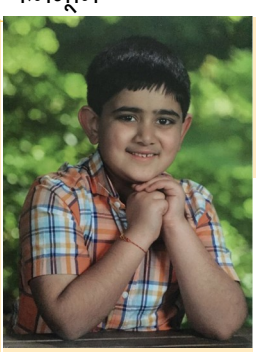

तरन सिंह

हिंदुस्तानी

तरन सिंह, प्रथमा-२, ईस्ट ब्रंस्विक पाठशाला

तरन सिंह भारत के राजस्थान राज्य से हैं और अपने भारतीय मूल पर बहुत गर्व करते हैं। तरन को भारतीय संस्कृति, त्योहार, रीति रिवाज और खानपान में बहुत रुचि है। भारत की अनेकता में एकता तरन को बहुत अच्छी लगती है। यह कविता तरन की स्वरचित है एवम् अभिभावक ने हिंदी भाषा में टाइप की है।

हम, मराठी, राजस्थानी और पंजाबी बोलते हैं,
लेकिन हम हिंदुस्तानी हैं।
हम भरतनाट्यम, घूमर, कत्थक और भांगड़ा करते हैं,
लेकिन हम हिंदुस्तानी हैं।
हम इडली सांभर, पाव भाजी, घेवर और दाल बाटी खाते हैं,
लेकिन हम हिंदुस्तानी हैं।
हम धोती, लूँगी, साड़ी और लहंगा पहनते हैं,
लेकिन हम हिंदुस्तानी हैं।
हम पोंगल, लोड़ी, घनघोर और बैसाखी मनाते हैं,
लेकिन हम हिंदुस्तानी हैं।
आओ हम सब मिल कर आगे बढ़ें,
हाँ, हम सब हिंदुस्तानी हैं।
जय हिंद!

बचपन

ईशा शर्मा
वुडब्रिज पाठशाला, उच्चस्तर-१

बचपन की पुरानी यादें!
वे बचपन के दिन ही कुछ और थे।
जब बारिश के पानी में हमारे भी जहाज़ चला करते थे।
मुझे मेरे बचपन के दोस्तों का साथ हमेशा चाहिए।
बचपन में हमारे पास घड़ी नहीं थी, पर समय सबके पास था,
आज सबके पास घड़ी है पर समय किसी के पास नहीं।
बचपन में तो शामें भी हुआ करती थी,
अब तो बस सुबह के बाद रात हो जाती है।
बचपन के एक-एक दिन बहुत सुहाने हुआ करते थे।
बचपन की यादें बहुत प्यारी होती हैं, लेकिन वे दिन वापस नहीं आएँगे।

साऊथ ब्रंस्विक पाठशाला, मध्यमा-१

पुनीत माहेश्वरी, अदिति माहेश्वरी, पृथवी ओकडे

पृथवी ओकडे - युवा स्वयंसेवक

जब मैं तीसरी कक्षा में थी, तब मैंने हिंदी स्कूल में पढ़ना शुरू किया था। मुझे कविता प्रतियोगिता और हिंदी महोत्सव में भाग लेने में बहुत मजा आया। इस दौरान मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। दिवाली समारोह बहुत मज़ेदार था और हमें विभिन्न प्रकार की भारतीय मिठाइयाँ खाने को मिलती थीं। हमने बहुत सारे दिवाली के प्रोजेक्ट बनाने भी सीखे। जब मैं आठवीं कक्षा में थी, तब मैं हिंदी स्कूल से ग्रेजुएट हो गयी। ग्रेजुएट होने के बाद मैंने हिंदी स्कूल में स्वयंसेवी के लिए निवेदन किया। मेरा आवेदन स्वीकार किया गया और मैं एक सहायक छात्र अध्यापिका बन गयी! मेरे लिए यह बहुत गर्व का क्षण था। इन सभी वर्षों के बाद, मेरे लिए मेरा प्यारा हिंदी स्कूल और मेरे प्यारे छात्रों को अलविदा कहने का वक्त आया है! मैं कई आयोजकों और शिक्षकों की आभारी हूँ जिन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया था - उमेश जी, शिल्पा जी, आदिति जी और रुचि जी। मैं अपने साऊथ ब्रंसविक हिंदी विद्यालय के समय को कभी नहीं भूलूंगी। जब मुझे वक्त मिलेगा मैं हिंदी पाठशाला पढ़ाने ज़रूर आऊंगी। सभी को शुभकामनाएं!

मेरा परिवार - गायत्री किलरु

मेरी माताजी का नाम शशि है। मुझे माताजी बहुत प्यार करती हैं। मेरे पिताजी का नाम फनी है। मेरे पिताजी भी बहुत प्यार करते हैं। मेरा एक छोटा भाई है, उसका नाम कृष्णा है। मेरा भाई मेरा सबसे अच्छा दोस्त है। मुझे मेरा परिवार बहुत प्यारा लगता है।

परिवार - प्रणव हलाहरवी

मुझे मेरे परिवार से बहुत प्रेम है। मेरे पिताजी मुझे जो भी चाहिए वह दिलवाते हैं। मेरी माताजी बहुत अच्छी हैं और मेरे लिए टेस्टी खाना बनाती हैं। मेरी बहन बहुत शरारती है, लेकिन जब मैं उदास होता हूँ, तो वह मुझे हँसाती है। मुझे अपने परिवार से बहुत प्यार है।

परिवार के साथ छुटिया मनाई - इशान सतीजा

पिछली छुट्टियों में मैं भारत गया था। वहाँ मैं अपने दादा-दादी के घर में रहा था। वे मुझसे मिलकर बहुत खुश हुए। वे मुझे रोज़ घूमने ले जाते थे। मेरी दादी मेरा मन पसंद खाना बनाती थीं। मेरी दादी ने मुझे बहुत सारे खिलौने लेकर दिए। अपनी इस यात्रा में मैं अपने नाना-नानी, मामा-मामी, मौसा-मौसी सभी से मिला। पूरे परिवार से मिलकर बहुत मज़ा आया।

भारत की यात्रा परिवार के साथ - चिराग बविसकर

मेरे परिवार में हम चार लोग हैं। मैं, मेरा छोटा भाई, मेरी मम्मी और मेरे पापा। मेरे दादा-दादी पुणे में रहते हैं। मैं दादाजी के साथ हर रविवार को बात करता हूँ। मुझे उनसे बात करके बहुत अच्छा लगता है। हम जब भारत जाते हैं, तब हम बुआ और उनके बच्चों के साथ खूब मस्ती करते हैं। मेरे नाना-नानी वाई नाम के गाँव में रहते हैं। नानाजी हमें बहुत अच्छी-अच्छी जगह घूमाने ले जाते हैं। नानीजी बहुत अच्छे पकवान बनाती हैं। मेरी मौसी मौसाजी उनके बच्चों के साथ नाशिक में रहते हैं। मैं इस साल फिर से भारत जाने का इंतज़ार कर रहा हूँ।

नाना-नानी का इंतज़ार – सचिन अरविंद

परिवार एक प्रतिबद्धता (जिम्मेदारी) नहीं है। यह एक खुशी है और एक उपहार भी है। मेरे लिए मेरा परिवार एक आशीर्वाद है। मेरे परिवार में मेरे माता, पिता, चाचा, चाची, और नाना, नानी शामिल हैं। मैं बहुत उत्साहित हूँ क्यूंकि मुझे पता है कि मई में मेरे नाना-नानी अमेरिका आ रहे हैं। उनके आने में कुछ महीने ही रह गए हैं। वे लम्बे समय के लिए आ रहे हैं। वे नवंबर तक रहेंगे। मेरे नाना-नानी दुनिया के सबसे अच्छे नाना नानी हैं और बहुत दयालु भी हैं। वे कभी नाराज़ नहीं होते हैं। मेरी नानी बहुत स्वादिष्ठ भोजन बनाती हैं। मेरे नानाजी बहुत होशियार हैं। वे मुझे नई चीज़ें सिखाते हैं। मैं अपने परिवार से बहुत प्यार करता हूँ।

महाशिवरात्रि परिवार के साथ - आदित्या पाठक

हमारा भारत त्योहारों का देश है। महाशिवरात्रि अमावस्या से एक दिन पहले वाली रात को मनाई जाती है। इस दिन सब लोग जल और दूध से भगवान शिव का अभिषेक करते हैं। फिर उन पर चन्दन लगाकर उन्हें फूल और बेल के पत्ते चढ़ाते हैं। धूप और दीप से भगवान शिव का पूजन किया जाता है। हमारा परिवार मंदिर जाता है और व्रत भी करता है।

मेरा प्यारा परिवार - श्रद्धा दुव्वुरी

मेरे परिवार में चार लोग हैं। मेरे माता, पिता, दीदी और मैं। मेरी माताजी का नाम शामला है और मेरे पिताजी का नाम विजय है। मेरी दीदी का नाम वेदा है और हम कभी नहीं झगड़ते हैं। पाठशाला की छुट्टियाँ होते ही हम सब घूमने निकल जाते हैं। गर्मी की छुट्टियों में हम सब हैदराबाद जाते हैं और मेरे नाना नानी के साथ रहते हैं। हमारा सारा परिवार बहुत सारे बोर्ड गेम्स खेलता है। मुझे भारत में अपने परिवार के साथ रहना बहुत अच्छा लगता है।

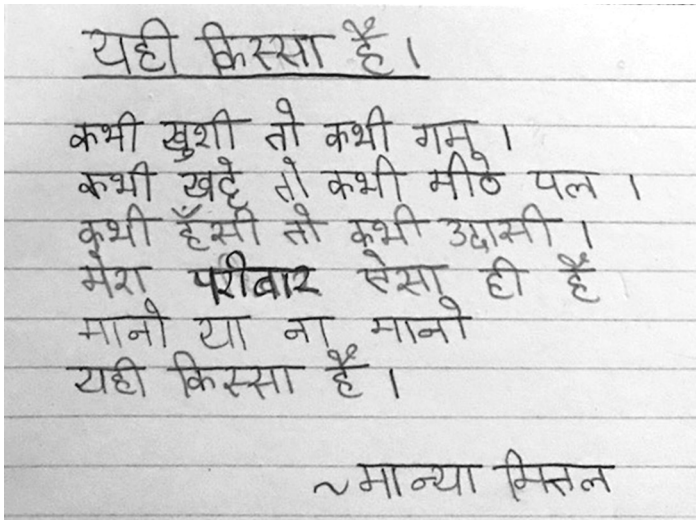

दिवाली कक्षा प्रोजेक्ट २०१७-१८

विद्यार्थियों ने साल के त्यौहार ऐसे मनाए

एडिसन पाठशाला - प्रथमा १

बढ़ाते ही आगे एक-एक कदम, समझने लगे हैं एक-एक अक्षर।

हिंदी के अथांग समंदर के, सीखेंगे सारे व्यंजन और स्वर ।।

नमस्ते,

इस दो पंक्तियों से आप समझ गए होंगे कि, हमारे प्रथमा-१ के विद्यार्थी इस साल क्या-क्या अध्ययन कर रहे हैं। कनिष्ठा-१ से लेकर अब तक का सफर इन बच्चों के लिए बहुत चुनौती भरा था। इस साल की अर्धवार्षिक परीक्षा के परिणाम के बाद हमारी कक्षा में, मैं कुछ अलग सा विश्वास देख रही हूँ जो बहुत आश्चर्यचकित करने वाला है। जैसे ही हमने व्यंजन की दूसरी पंक्ति पढ़ना शुरु किया, मानो बच्चों की हिंदी शब्दावली में जैसे बाढ़ आ गयी। इन बच्चों ने एक-एक अक्षर के १०-१५ से ज्यादा हिंदी शब्द बताए और हर शुक्रवार इनमें नए अक्षर सीखने की और अपने-अपने शब्द बताने की जैसे प्रतियोगिता चलती रहती है। इसी प्रकार गिनती में २० से आगे पढ़ने की भी स्पर्धा लगी रहती है। क्रिया कलाप की पुस्तक तो मुझे जैसे जादू जैसी लगती है। जो भी बच्चों के मन में है उसी प्रकार की कला-शिल्प इस पुस्तक में मौजूद है। इन बच्चों की शुक्रवार की उपस्थिति और मजे लेकर पढ़ने का जोश, हम शिक्षिकाओं को भी पढ़ाने का एक नया उत्साह देता है। प्रथमा-१ तक आकर नयी भाषा, नए सहपाठी, नए शिक्षक और नई पाठशाला से अब ये बहुत आनंदित लगते है। हम इन बच्चों के माता-पिता को धन्यवाद कहना चाहेंगे की वे भी नियमित रूप से इनकी हिंदी शिक्षा में आनंदपूर्वक शामिल हैं। सारे हिंदी यू.एस.ए. के बच्चों को आगे की पढ़ाई के लिए मन:पूर्वक शुभकामनाएँ।

धन्यवाद

प्रिया गोडबोले, योगिता सांगलीकर

मेरा परिवार

लॉरेंसविल हिन्दी पाठशाला, मध्यमा-१

नमस्ते,

मेरा नाम सुमति श्रीधर है और मेरी सह-शिक्षिका संयोगिता शर्मा हैं। हम लॉरेंसविल हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-१ स्तर को पढ़ाते हैं। हमारे छात्रों द्वारा लिखे हुए लेख यहाँ प्रस्तुत हैं। इन बच्चों को अभी व्याकरण या वाक्य बनाने की पूरा जानकारी नहीं है, फिर भी हमारी सहायता और निर्देशन में ये अपने परिवार के बारे में जो कुछ विशेष कहना चाहते हैं, वह लिखा है। हमें यह प्रयास बहुत प्यारा और सच्चा लगा। आशा है कि आप भी इनका जोश देखेंगे और इनकी मेहनत की प्रशंसा करेंगे।

मेरा परिवार

मेरे परिवार में चार लोग हैं। मेरी छोटी बहन का नाम माया है और वो मेरी सबसे प्यारी सहेली है। मेरी मम्मी मुझसे बहुत प्यार करता हैं और हर रोज मेरे लिए बढ़िया खाना बनाती हैं। मेरे पापा बहुत मजाक करते हैं और घर की सारी चीज़ों का ख्याल रखते हैं। हम लोगों को होटल में खाना और सिनेमा देखना पसन्द है।

-माहीका कुमार

हम सब मन्दिर जाते हैं। हम सब मिलकर खेलते हैं। मेरे दादा और दादी राँची में रहते हैं। मेरे नाना और नानी कॉटा में रहते हैं। हम सब भाई बहन एकही पाठशाला में पढ़ते हैं।

नवेद्य वत्सय

हमारे परिवार में चार लोग हैं। मैं अपने पिताजी, माताजी, और दीदी के साथ रहता हूँ। छुट्टी में हम साथ में घूमने जाते हैं। मेरे दादी-दादाजी और नानी-नानाजी भारत में रहते हैं। मेरी मनपसंद जगह ऐटलांटा है। वहाँ की कोक फैक्टरी बहुत अच्छी है।

रोहन मिश्रा

मेरे नाना और नानी केरल में रहते हैं। हम सब मिलकर मंदिर जाते हैं। हम सब मिलकर सुपर बॉल का खेल देखते हैं। हम सब मिलकर फिल्में देखते हैं। मेरे माता पिता साथ में खेल खेलते हैं।

नेहा कुन्नुमपुरत

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

मेरे परिवार में ३ लोग हैं। हम सब मिलकर फिलमें देखते हैं और हम सब साथ में खाना खाते हैं। हम कभी कभी बाहर घूमने भी जाते हैं, जैसे पोकोनोस। मेरे नाना और नानी मुम्बई में रहते हैं। मुझे मेरी दादी के हाथ के पराठे बहुत पसंद हैं।

-रेवा अरुण

हम सब मिलकर मंदिर जाते हैं। हम सब मिलकर रेसटोरन्ट जाते हैं। हम सब बोर्ड गेम खलते हैं। हम कभी काभी बाहर घमने भी जाते हैं। इंडिया में मेरी चचेरी बहन और भाई रहते हैं।

माही पटेल

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

मेरे परिवार में चार लोग हैं। मेरी १ बहन है। हम सब मिल कर पूजा करते हैं। हम सब सुपर बॉल का खेल देखते हैं। मेरे दादा, दादी, नाना, नानी भारत में रहते हैं। मेरी मनपसंद जगह युनिवरसल स्टुडियोस, डिस्नी वर्ल्ड है।

अक्षय होनावर

हम सब मिलकर भगवान का भजन करते हैं। हम सब मिलकर सुपरबाल देखते हैं। हम सब फिल्में भी देखते हैं। मेरे नाना और नानी कोटा में रहते हैं और हम सब बाते करते हैं। यह मेरा परिवार है।

नाईशा वैश्य

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

हम सब मंदिर में साथ में मंत्र गाते हैं। हम सब साथ में मजे करते हैं। पापा के साथ में खेलना अच्छा लगता है। इंडिया में मेरी दादी, बड़े पापा, बड़ी माँ और मेरी दीदी रहती हैं। मुझे बड़े पापा के स्कूटर पर घूमना अच्छा लगता है।

वान्या शर्मा

साऊथ ब्रंस्विक पाठशाला, मध्यमा-२

मेरा परिवार

मेरा नाम वर्षा गुप्ता है। मैं कंम्प्यूटर इंजीनियर हूँ और मैंने बिज़नेस एडमिनिस्ट्रेशन में परास्नातक किया है। मैं साऊथ ब्रंस्विक पाठशाला से पिछले चार वर्षों से जुड़ी हुई हूँ। मैंने अब तक प्रथमा-१, उच्चतर-२ और मध्यमा-२ वर्ग को पढ़ाया है। अपने विद्यार्थियों को हिन्दी पढ़ाना मुझको बहुत पसंद है। मेरे दोनों बेटे भी हिन्दी पाठशाला आते हैं। मेरा प्रयास होता है कि हर वर्ष मैं कम से कम दो मित्रों को अपने हिन्दी परिवार से जोड़ूँ। अपने देश से हज़ारों मील दूर होते हुए भी हमारी भारतीय संस्कृति को सीखने और जानने के लिए यह सर्वोत्तम स्थान है। हर वर्ष हिन्दी यू.एस.ए. में "वसुंधरा कुटुम्बकम्" का आचरण करते हुए हम सब मिलकर सारे त्योहार मनाते हैं। इस लेख को पढ़कर स्पष्ट होता है कि हम भारतीय मूल के अभिभावकों की संतान कैसे अपने छोटे से परिवार की प्रेम पूर्वक विवेचना करते हैं।

मेरा नाम शार्दुल कुलकर्णा है। मुझे बड़ा होकर सॉकर का खिलाड़ी होने की बड़ी इच्छा है। मुझे सॉकर खेलना बहुत पसंद है। मैं हर हफ्ते उपवन में जाकर सॉकर खेलता हूँ। मुझे मेरे सॉकर के कोच अलग-अलग ट्रिक्स सिखाते हैं। मुझे आगे जाकर अपनी पाठशाला की टीम में खेलना है। इसके लिए मैं जी जान से कोशिश कर रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि मैं एक दिन सफल जरूर होऊँगा। कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

मेरा नाम ईशान नायर है। मुझे कुत्ते बहुत पसंद है। मुझे बास्केटबॉल और वीडियो गेम्स खेलना अच्छा लगता है। मैं बड़ा होकर चिकित्सक बनना चाहता हूँ। मुझे दूसरों की सहायता करना अच्छा लगता है। बीमार लोगों का इलाज करना मेरी इच्छा है।

मेरे परिवार में पाँच लोग हैं। मेरे परिवार में माँ, पापा, दीदी, और नानीजी हैं। मेरे पिताजी मेरे साथ बास्केटबॉल खेलते हैं। मेरी माँ मुझे पढ़ाई मे मदद करती हैं। मैं और मेरी दीदी साथ-साथ खेलते हैं। हम सब मिलकर छुट्टियों मे घूमने जाते हैं। मुझे मेरे परिवार से बहुत प्यार है।

नमस्ते, मेरा नाम अनिशा वैद्य है। मैं मॉनमाउथ जंक्शन पाठशाला में चौथी कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे पिआनो बजाना पसन्द है। मुझे गाने का भी शौक है। मैं भरतनाट्यम भी सीखती हूँ। मैं खूब सारी किताबें पढ़ती हूँ। मेरे परिवार में तीन सदस्य है - मैं और मेरे माता-पिता। हमें जगह-जगह घूमना पसन्द है। पिछले साल गर्मियों की छुट्टियों में हम यूरोप और भारत गए थे। घर में हम अक्सर ताश खेलते हैं। मुझे अपने परिवार से बहुत प्यार है। वे मुझे जरूरत पड़ने पर मदद करते हैं और मुझे बहुत सारा प्यार देते हैं। अगर वे गुस्सा भी होते हैं तब भी मुझे प्यार करते हैं। मेरी अपने परिवार के साथ बहुत सारी यादें हैं।

मेरा नाम द्विषा जोशी है। मैं मध्यमा-२ में पढ़ती हूँ, मुझे खेल खेलना बहुत अच्छा लगता है। मैं सॉकर, बास्केटबॉल तथा अन्य खेल खेलती हूँ। मुझे नृत्य सीखने में भी रुचि है। खाली समय में मैं पुस्तक पढ़ना और वीडियो गेम खेलना पसंद करती हूँ। मुझे अपना घर बहुत प्यारा लगता है। मेरा एक बड़ा भाई है। वह मेरा सबसे अच्छा दोस्त है। वह मेरी हर कार्य में मदद करता है और मुझे उसके साथ खेलना और बातें करना अच्छा लगता है। हमारे माता-पिता हमारा बहुत ख्याल रखते हैं और हम भी उनकी हर बात मानने की कोशिश करते हैं।

मेरा नाम आद्या जैन है। मैं मध्यमा-२ की छात्रा हूँ। मैं अपने परिवार के बारे में लिख रही हूँ। मेरे परिवार में चार लोग हैं और दो चिड़ियां हैं। मेरी एक बहन है। वह मेरी बहुत मदद करती है। हम सब मिलकर खेलते हैं और एक दूसरे की मदद करते हैं। मेरे दादा जी और दादी जी भारत में रहते हैं। हम उनसे मिलने भारत जाते हैं।

मेरा नाम मयंक देवरस है। मैं मध्यमा-२ में पढ़ता हूँ। मैं मॉनमाउथ जंक्शन एलिमेंटरी स्कूल में पढ़ता हूँ। मुझे क्लेरीनेट बजाना, कराटे सीखना, किताबें पढ़ना और ओरिगामी करना बहुत पसंद है। मेरे परिवार में चार लोग है। मेरे पिताजी, मेरी माँ, मेरी छोटी बहन और मैं। मैं अपने परिवार से बहुत प्यार करता हूँ। मेरे काफी सारे रिश्तेदार भारत में रहते हैं। मेरे दादा-दादी, नाना-नानी, बुआ, मौसी, मेरे चचेरे, मौसेर भाई बहन सब लोग भारत में रहते हैं। हम लोग स्कूल की छुट्टियों में भारत जाते हैं। मुझे रिश्तेदारों से मिलकर बहुत खुशी होती है। मैं मेरे भाई बहनों के साथ समय बिताकर और खेलकर बहुत खुश होता हूँ। मेरे परिवार को अलग अलग चीजें करना काफी पसंद है। हम लोग नयी नयी जगह घूमना काफी पसंद करते हैं। मेरे परिवार को विविध प्रकार के खेल खेलना, सिनेमा देखना, दोस्तों के साथ समय बिताना काफी पसंद है। हम लोग इस साल भी छुट्टियों में भारत जाने वाले हैं और हमारा कनाडा जाने का मन है। मैं छुट्टियों का और कनाडा की सैर का इंतजार कर रहा हूँ।

मेरा नाम आयुष अनुमोलु है। मैं साउथ ब्रुंसविक पाठशाला के मध्यमा -२ वर्ग में पढ़ता हूँ। मेरी अध्यापिका का नाम श्रीमती वर्षा गुप्ता है। मैं आपको अपने परिवार के बारे में कुछ बताना चाहता हूँ।
परिवार सबको प्यारा होता है, जो हर एक के अच्छे बुरे समय में साथ देता है। मेरे माता-पिता के कारण मुझे मेरा घर स्वर्ग लगता है। हम तीन, एक परिवार के रूप में अच्छा समय बिताते हैं। मैं जब घर में होता हूँ तो खुश महसूस करता हूँ। मेरे पिता और माँ दोनों काम करते है, फिर भी हम अपने दैनिक अनुभव को साझा करते हैं। मेरी माँ मेरे लिए स्वादिष्ट खाना बनातीं हैं। मेरे पिताजी मेरे सबसे अच्छे दोस्त और संरक्षक है। मैं अपने माता-पिता जी से बहुत प्यार करता हूँ और हमेशा अपने परिवार के साथ रहना चाहता हूँ।

मेरा नाम अबीर पटेल है। मैं दस साल का हूँ और चौथी कक्षा में पढ़ता हूँ। मेरे परिवार में मैं, मेरे पिताजी, माताजी और दादीजी के साथ रहता हूँ। मेरे पिताजी इंजीनियर है और मेरी माताजी न्यूट्रीशिनिस्ट हैं। मेरी दादीजी मुझे शिक्षाप्रद और रोचक कहानियां सुनाती हूँ। मेरी माताजी स्वादिष्ट व्यंजन पकाती हैं और मेरे पिताजी मेरे साथ खेलते हैं। इस तरह मैं कह सकता हूँ कि मेरा छोटा और खुशहाल परिवार है।

मेरा नाम मिहिका चंद है। मेरा परिवार बहुत छोटा है, जिसमें मैं, मेरे पिताजी और मेरी माँ रहती हैं। मेरे ताऊजी और ताई जी भी हमारे नजदीक रहते हैं। मैं उन्हें बड़े पापा और बड़ी मम्मा कहती हूँ। मुझे अपनी दीदियों के साथ समय बिताना अच्छा लगता है। छुट्टियों में हम भारत दादा-दादी, नाना-नानी और रिश्तेदारों को मिलने जाते हैं। मैं वहाँ अपने ममेरे छोटे भाई के साथ खूब खेलती हूँ। पिछले साल हमने पूरे परिवार के साथ दीवाली का त्योहार, भारत में मनाया और बहुत मजे किये।

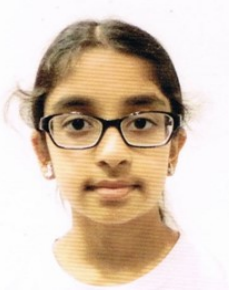

मेरा नाम शैली ठक्कर है। मैं मध्यमा-२ में पढ़ती हूँ। मेरे परिवार में चार लोग है। मेरे परिवार में पिताजी, माताजी और भाई हैं। मेरी माताजी घर पर खाना बनाती हैं और हम सबका ध्यान रखती हैं। मेरे पिताजी दफ्तर जाते हैं। मुझे किताब पढ़ना और वायलिन बजाना अच्छा लगता है। मेरा परिवार एक आदर्श और खुशहाल परिवार है।

साईरक्षा तिरुनावकरसू

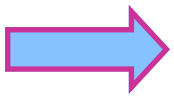

मेरा नाम शैली ठक्कर है। मैं मध्यमा-२ में पढ़ती हूँ। मेरे परिवार में चार लोग है। मेरे परिवार में पिताजी, माताजी और भाई हैं। मेरी माताजी घर पर खाना बनाती हैं और हम सबका ध्यान रखती हैं। मेरे पिताजी दफ्तर जाते हैं। मुझे किताब पढ़ना और वायलिन बजाना अच्छा लगता है। मेरा परिवार एक आदर्श और खुशहाल परिवार है।

मेरा नाम अदिती ठाकुर है। मैं चौथी कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं हिन्दी यू.एस.ए. में मध्यमा-२ की छात्रा हूँ। मुझे हिन्दी सीखना अच्छा लगता है।

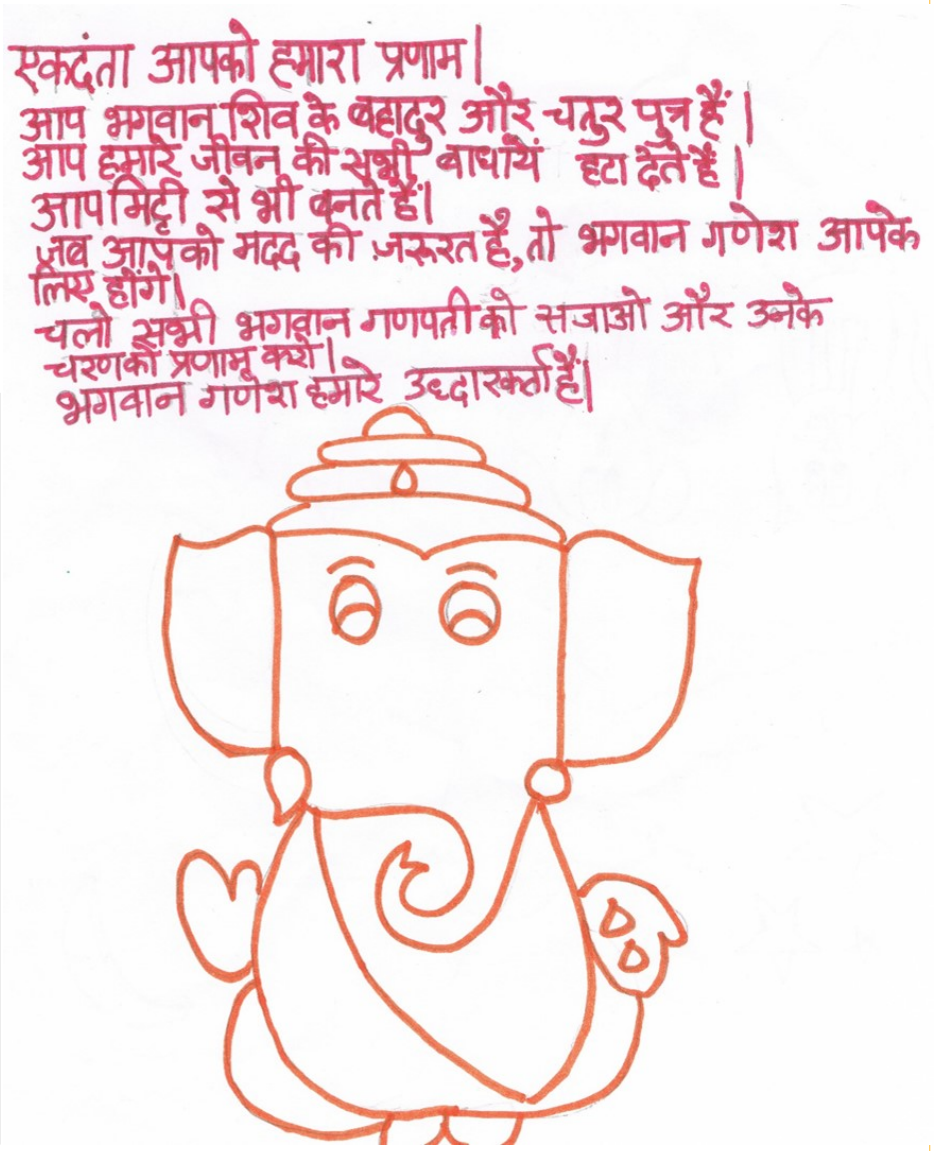

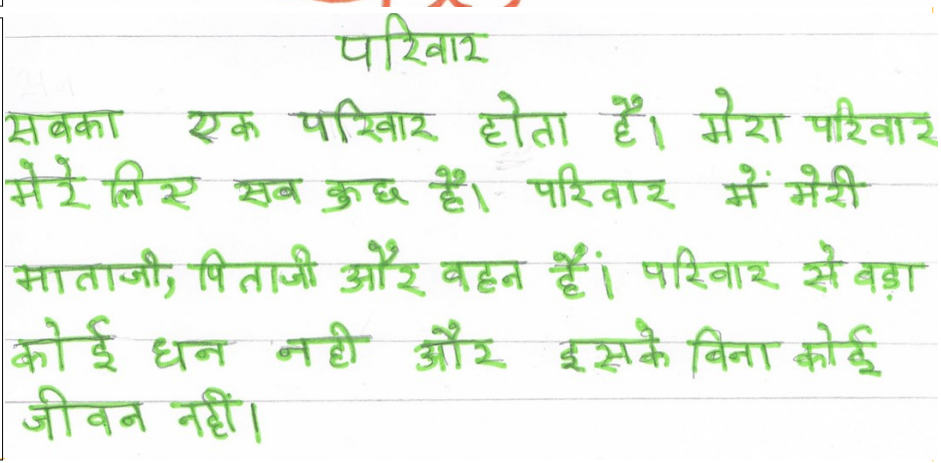

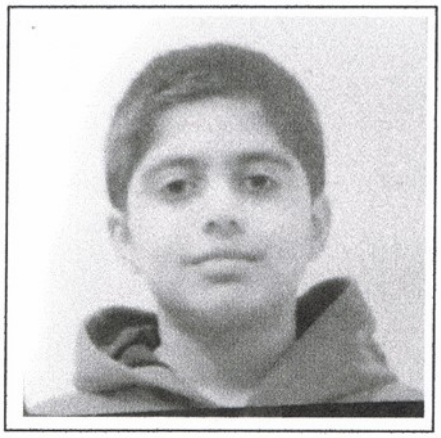

नमस्ते, मेरा नाम देवेश खिलनानी है। बड़ा होकर मैं एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनना चाहता हूं। सॉफ्टवेयर इंजीनियर कंप्यूटर के साथ काम करते हैं। सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनकर मैं एक नई तकनीक विकसित करना चाहता हूं जो सिस्टम में प्रवेश करने वाले हैकरों और वायरस को रोक देता है। मेरे पसंदीदा शौक हैं, तैराकी, कोडिंग, और किताबें पढ़ना।

मेरा छोटा भाई आया है।
वह हमारे जीवन में खुशी लाया है ॥
मेरा छोटा भाई आया है।
हर दिन मस्ती वाला दिन बनाया है ॥
मेरा छोटा भाई आया है।
पूरा दिन खाता,पिता, सोता है ॥
मेरा छोटा भाई आया है।
सब को काम पर लगाया है ॥
मेरा छोटा भाई आया है।
उसकी आंखों में जिज्ञासा है ॥
मेरा छोटा भाई आया है।

मेरा नाम क्रिशा शाह है। मैं चौथी कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे बांसुरी और पियानो बजाना पसंद है। मुझे पढ़ना भी पसंद है।

मुझे अपने परिवार के साथ दौरे के लिए जाना अच्छा लगता है। मेरी एक यादगार यात्रा बेंफ़ और जैस्पर है। हमने कई पहाड़ों और झीलें को देखा। हमने एक ग्लेशियर भी देखा। हमने बहुत ज्यादा लंबी पैदल यात्रा की है। यह सबसे बढ़िया यात्रा थी।

क्रिशा शाह
I-2

नमस्ते। मेरा नाम श्रुति अय्यर है। मेरे परिवार में ४ लोग हैं। पापा, मम्मी, दीदी और मैं। मैं अपने परिवार के साथ न्यू जर्सी में रहती हूँ। मुझे अपने परिवार के साथ समय बिताना अच्छा लगता है।

कर्मभूमि मुख्य पृष्ठ प्रतियोगिता के उपविजेता

मोहनीश महाजन
एलिकोट सिटी

मेधा महेश शिंदे
चैरी हिल

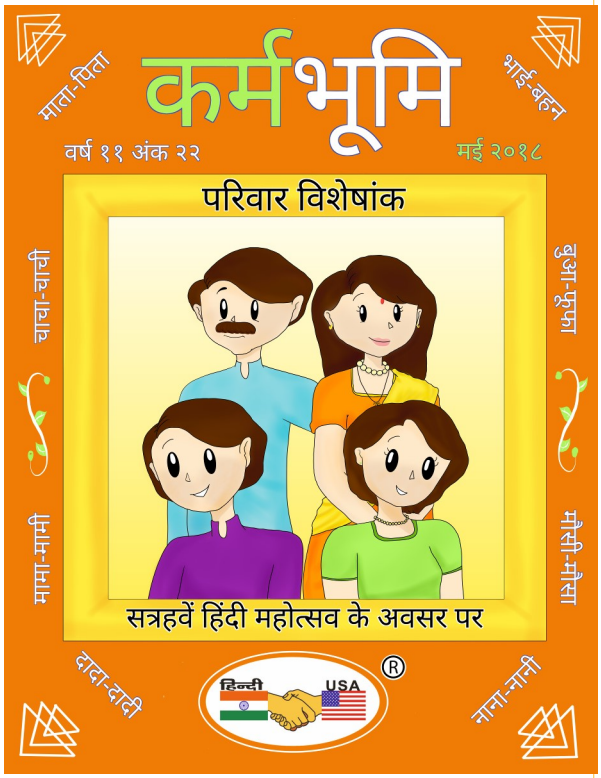

सत्रहवें हिंदी महोत्सव के अवसर पर
हिंदी यू.एस.ए. को हार्दिक शुभकामनाएँ!

REDDY REALTY

1708 Ellington Rd ▪ South Windsor ▪ CT, 06074
realtormadhu@gmail.com ▪ 860-918-2921 ▪ **Broker License:** REB.0791892

FOR SALE ▪ SOLD ▪ 2018

Farmington ▪ $459,900

40 Snowberry Ln

Farmington ▪ $515,000

12 West Gate Rd

Avon ▪ $549,000

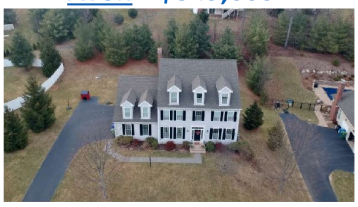

18 Fenwick Dr

Farmington ▪ $505,000

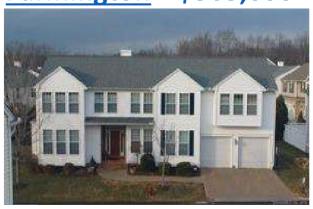

10 Cobble Ct

Ellington ▪ $539,00

3 Woodland Trail

East Granby ▪ $269,000

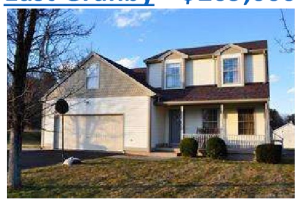

1 Harvest Ln

Ellington ▪ $439,000

28 Windermere Village

Vernon ▪ $249,000

41 Elizabeth Ln

Avon

SOLD-$577,500

Farmington

SOLD-$405,000

Farmington

SOLD-$465,000

Farmington

SOLD-$575,000

Farmington

SOLD-$615,000

Rocky Hill

SOLD - $425,000

South Windsor – Toll Brother New Construction

SOLD 8 Lots in South Windsor Estates $600k-$750k.

SOLD >15 Million in 2018 (as of 4/7/18)

New Construction: ▪Sold 8 lots in new subdivision by Toll Brothers ▪10 in Windermere Village, Ellington ▪ 2 in Avalon Farms, Glastonbury ▪ 1 in Wendell Homes, Glastonbury ▪ 1 in Ollari Farms, Rocky Hill.

Ready to Sell, Buy or Lease, Call Reddy Realty for all your Real Estate Needs

A CHILD CAN REACH GREAT HEIGHTS
WHEN GIVEN A SOLID START.

Eye Level's approach to education develops critical thinkers and self-directed learners. Whether your goals are early learning, supplemental education, or academic challenge, Eye Level supports success in math, English and beyond.

- Individualized Instruction
- Low Student to Instructor Ratio
- Basic Thinking & Critical Thinking Math
- Reading Comprehension & Vocabulary
- Writing Program

CALL FOR FREE CONSULTATIONS

Eye Level
I am the key.

Eye Level of North Brunswick
1460 Livingston Ave. Bldg 400
North Brunswick, NJ 08902

Phone # (908) 818-9668; (732) 640-1588
Fax # (732) 907-1260
eMail: northbrunswick@myeyelevel.com

LITTLE SPRING MONTESSORI ACADEMY

We believe that all children are very unique and special in their own way. We promote social, intellectual, physical, and emotional development.

Circle Time - Read Aloud - Art and Craft - Gross Motor Skills
Fine Motor Skills - Cooperative Learning - Dramatic Play
Core values and goals: Independence, Leadership, Integrity, Responsibility, Diversity, Citizenship, Critical thinking, Creativity, Communication, Collaboration and Confidence

We offer Before School, After School and homework support.

1460 Livingston Ave, Bldg. 400, North Brunswick, NJ 08902
Phone # (908) 818-9668 or (732) 640-1588
www.littlespringmontessori.com – littlespringacademy@gmail.com

चैरी हिल पाठशाला - कनिष्ठ २

शिक्षिकाएँ - हेमांगी शिंदे और वंदना वर्मा

तिरंगी पतंग - मकर संक्रान्ति और गणतंत्र दिवस

हिंदी यू.एस.ए. की प्रत्येक पाठशाला एक छोटे से परिवार की तरह है, जिसकी नींव हिंदी यू.एस.ए. संस्था के आदर्शों पर मजबूती से टिकी हुई है। हमारा यह परिवार सप्ताह में केवल एक दिन मिलता है, लेकिन इस एक दिन में हम हिंदी भाषा भी सीखतें हैं, त्यौहार भी मनातें हैं और एक दूसरे को अच्छे कार्य के लिए प्रोत्साहित भी करते हैं। कनिष्ठ-२ के छात्रों के इसी उत्साह को दर्शाते हुए कुछ क्रिया-कलाप यहाँ प्रस्तुत किए हैं। इन सभी को बच्चों एवं उनके अभिभावकों ने बहुत ही मेहनत और कलात्मकता से बनाया है। आशा है यह आपको निश्चित ही अच्छी अनुभूति देंगे।

दीपावली - रंगोली

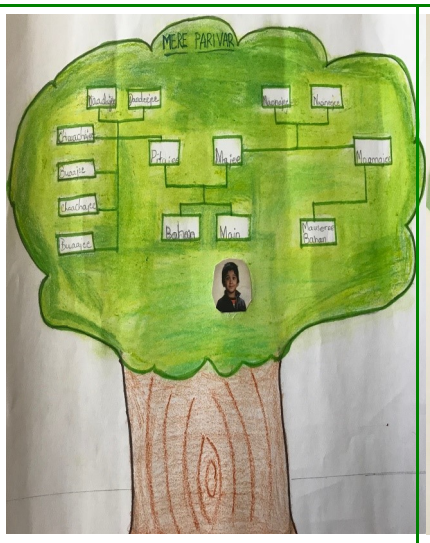

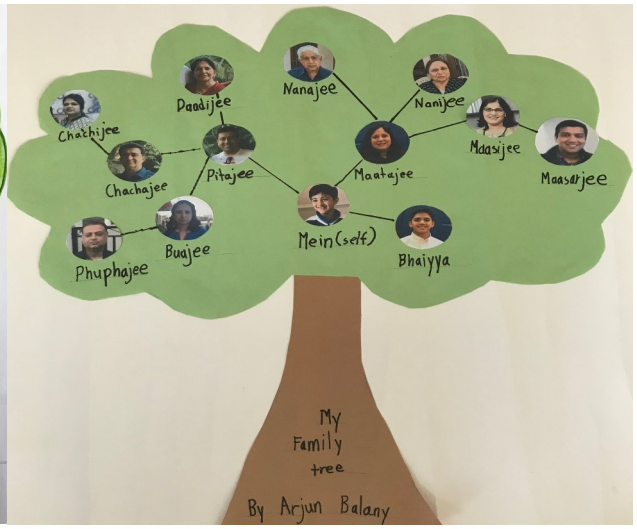

मेरा परिवार :: वंश-वृक्ष

दुनिया में सिर्फ माँ-बाप ही ऐसे हैं जो बिना किसी स्वार्थ के प्यार करते हैं

चेरी हिल हिंदी पाठशाला – कनिष्ठ-१

क्षमा सोनी

चेरी हिल पाठशाला के बच्चों ने अपनी पहली कक्षा की शुरुआत अपने-अपने नाम के मुकुट बना कर की। सब बच्चों ने इसमें बहुत आनंद उठाया।

बच्चों ने सर्दी की छुट्टियों में अपने काल्पनिक कमरे बनाए। इस परियोजना से उन्होंने प्रतिदिन काम आने वाली चीज़ों के नाम सीखे, रंग सीखे, जानवरों के नाम सीखे तथा गिनती सीखी। उन्होंने बड़ी ही रुचि के साथ अपने-अपने कोलाज बनाए और बहुत ही जोश के साथ कक्षा में प्रस्तुत किए। इस कार्य में उन्होंने बहुत कुछ सीखा और सबको बहुत आनंद आया।

दिवाली के शुभ अवसर पर बच्चों ने दीये बनाए और दिवाली का महत्व जाना।

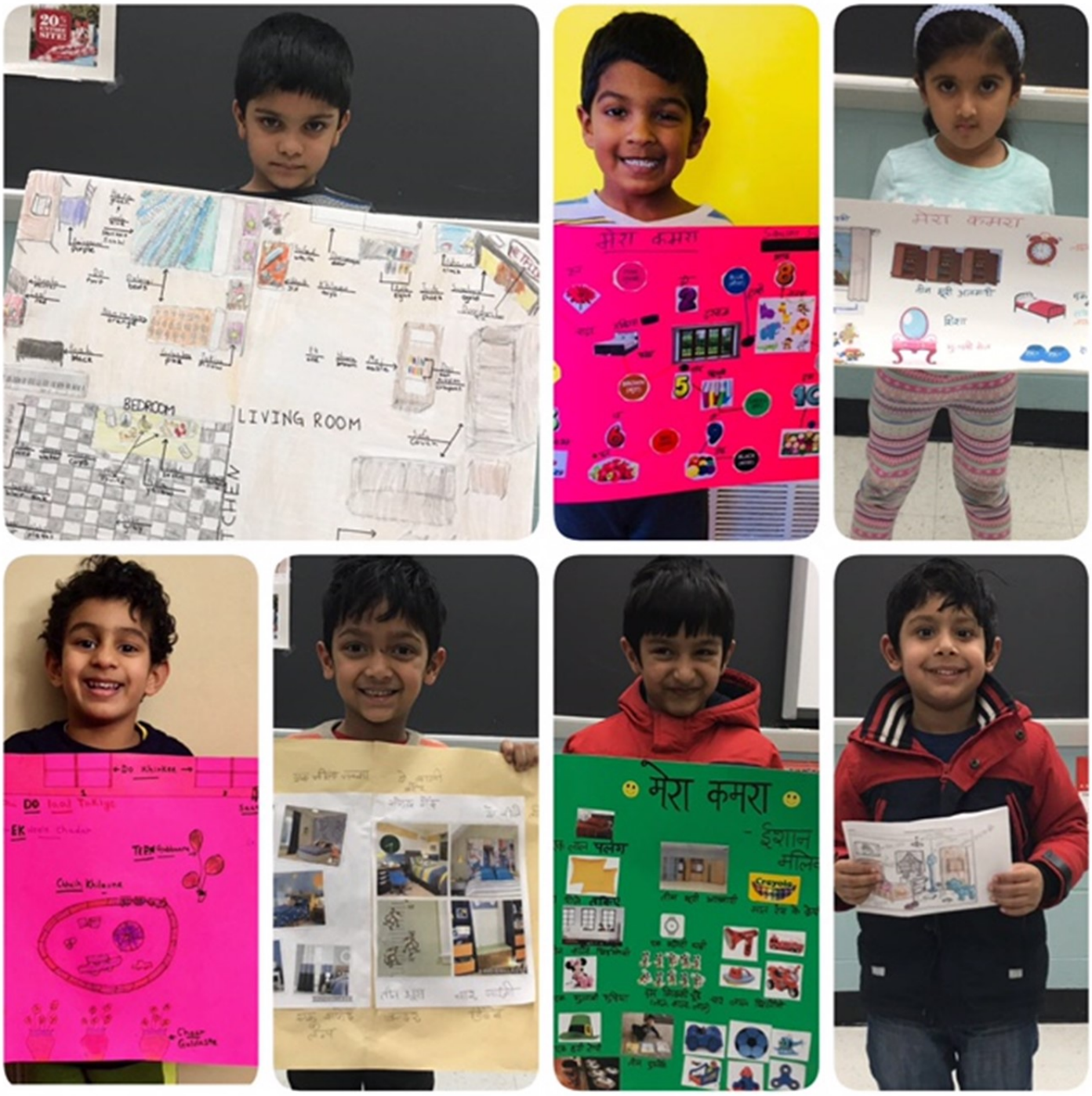

अगर हम अपने समय को एक भेंट की तरह समझें और स्वयंसेवक बनकर उन लोगों की सहायता करें जो हमारे जितने भाग्यवान नहीं हैं तो वह हमारे जीवन की प्रचुरता और उत्तमता की याद दिलाने का एक उत्तम तरीक़ा होगा

मेरा नाम अनन्या श्रीवास्तव है। मेरी रुचि बाँसुरी बजाना, चित्रकारी करना और गाना है। मैं एडिसन पाठशाला की मध्यमा-1 की कक्षा में पढ़ती हूँ।

सबकी दुनिया एक

धरती है हम सबकी एक
आसमान है हम सबका एक
सूरज है हम सबका एक
चंदा है हम सबका एक।

पानी है हम सबका एक
और पवन है सबकी एक
है दुनिया में लोग अनेक
लेकिन सबकी दुनिया एक।

वुडब्रिज हिंदी पाठशाला – प्रथमा-२

मेरा नाम अंकिता है। मैं वुडब्रिज हिंदी पाठशाला में प्रथमा-२ को पढ़ाती हूँ। मेरे साथ युवा स्वयंसेवक प्रियम और अभिनव भी प्रथमा-२ को पढ़ाते हैं। मैं भारत में भी एक शिक्षका थी। मुझे बच्चों को पढ़ाने में बहुत आनंद आता है। हमारी वुडब्रिज पाठशाला के संचालक शिवा आर्य जी हैं। हम सब एक परिवार की तरह रहते हैं। आर्य जी हमेशा घर के बड़े की तरह हमारा मार्गदर्शन करते है। यह सौभाग्य है कि मुझे अमेरिका में आने के बाद हिंदी यू.एस.ए. के परिवार का एक छोटा सा हिस्सा बनने का अवसर मिला।

मेरा नाम सन्या है।
मैं वुडब्रिज पाठशाला मे प्रथमा२ में पढ़ती हूँ। मुझे हिंदी पढना बहुत अच्छा लगता है। मुझे हिंदी पाठशाला से बहुत सीखने को मिला। मैं अब हिंदी कहानियाँ और हनुमान चालीसा पढ सकती हूँ। मुझे बहुत खुशी हुई जब मैंने अपने दादा जी को फोन पर हिंदी पढ कर सुनाई वह बहुत खुश हुए। मुझे कला मे बहुत रुची है।

साऊथ ब्रंस्विक - कनिष्ठा-१

नमस्ते, मेरा नाम प्रिया हैं और मैं हिंदी यू.एस.ए. की साऊथ ब्रंस्विक पाठशाला में पढ़ाती हूँ। मुझे यह बताते हुए अत्यंत गर्व होता है कि मैं १० वर्षों से हिंदी यू.एस.ए. के साथ जुड़ीं हूँ और बच्चों को हिंदी पढ़ा रही हूँ। यह वास्तव में एक सम्मान की बात है कि मुझे हिंदी यू.एस.ए. के माध्यम से अपने समाज की सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ है। मुझे स्वयंसेवक के रूप में कार्य करना अत्यंत प्रिय है तथा मेरे दोनों बच्चे अनिरुद्ध एवं अनिका, सफलतापूर्वक स्नातक होने के पश्चात, मेरे पति, अनिल के साथ साउथ ब्रुन्सविक पाठशाला में स्वयंसेवक के तौर पर अपना योगदान दे रहे हैं। मैं अपने सह-शिक्षक एवं छात्र सहायकों की मदद से पिछले कई सालों से कनिष्ठा-१ स्तर के बच्चों को हिंदी सिखाने का प्रयास कर रही हूँ। मुझे इस आयु के बच्चों को पढ़ाने में बड़ा आनंद आता है और मुझे भी अवसर मिलता है कि हिंदी के प्रति अपनी जानकारी बढ़ाने का प्रयास करती रहूँ। इस साल कर्मभूमि संस्करण के लिए हमारी कक्षा ने कई सुंदर सुंदर कलाकृतियां बनाईं तथा उन रंगों का प्रयोग किया जो बच्चों ने अपने पाठ्यक्रम में सीखे। उन्होंने सफेद गायें, काला कुत्ता, पीली पतंग और लाल चिडिया एक पिंजड़े में बनाई। मुझे आशा है कि मेरी तरह आप भी बच्चों की कलाकृति सराहेंगे।

बच्चों की कला कृतियाँ

BOLLYWOOD TADKA
An Exclusive Indian Cuisine
Village Green Shopping Center
(Near The Vitamin Shop)
415 Rte. 18 South • East Brunswick
732-23-TADKA
732-238-2352
www.bollywoodtadkanj.com
Lunch Buffet Everyday
$8.95 Mon. - Fri.
$10.95 Sat.-Sun
Lunch Box Available $7.95-$8.95
WE DELIVER
Catering For All Occasions
Banquet Hall Available
Hours:
Buffet Lunch: Mon. - Fri: 11:30 - 2:30
Sat. & Sun. Brunch: 12:00 - 3:00
DINNER:
Sun. - Thurs: 5:00pm - 10:00pm
Fri. - Sat:: 5:00pm - 10:30pm

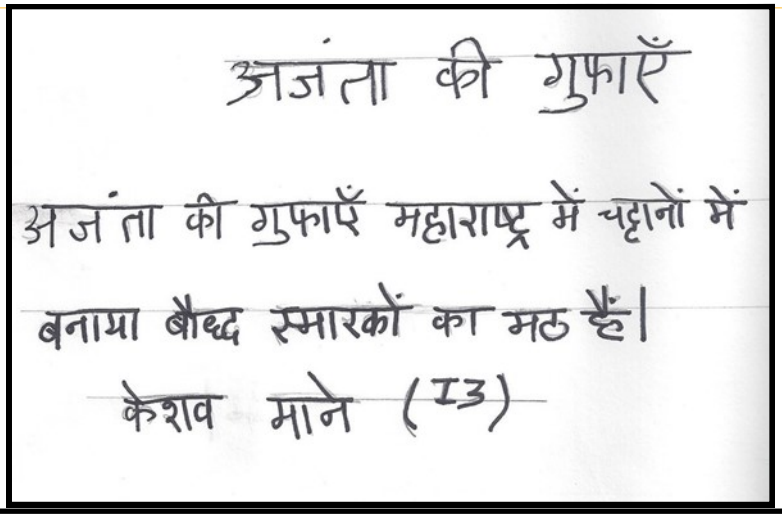

नमस्ते, मेरा नाम केशव माने है। मैं ईस्ट ब्रंसविक की हिंदी की मध्यमा-३ की कक्षा और Central School की चौथी कक्षा में पढ़ता हूँ। कर्मभूमि में हर साल लिखने की मेरी कोशिश जारी रहती है। "पुरातत्व की खोज" एक कार्यक्रम भारत में देखा था। उसमें "अजंता" की गुफाओं के बारे में बताया जा रहा था। बड़ी उस्तुकता के साथ मैंने भी इसकी ख़ोज करनी शुरू की। अजंता की गुफाएँ महाराष्ट्र में चट्टानों में बनाया बौद्ध स्मारकों का मठ है। मेरे सारे रिश्तेदार महाराष्ट्र में रहते हैं। उनसे भी इन गुफाओं के बारे में ज्ञान लिया। भारत में हम अपने परिवार वालों से मिलने जाते हैं तब प्रसिद्ध पुरातन ठिकानों को हम भेंट देते रहते हैं। कुछ संग्रहालयों में भी जा चुका हूँ। अजंता की गुफाओं में जैसा देखा वैसा चित्र बनाने की कोशिश भी की। यह सफल भी रही। भविष्य में ऐसी और खोज करने का मेरा प्रयत्न रहेगा। इसे लिखने में मेरी माँ ने मेरी मदद की।

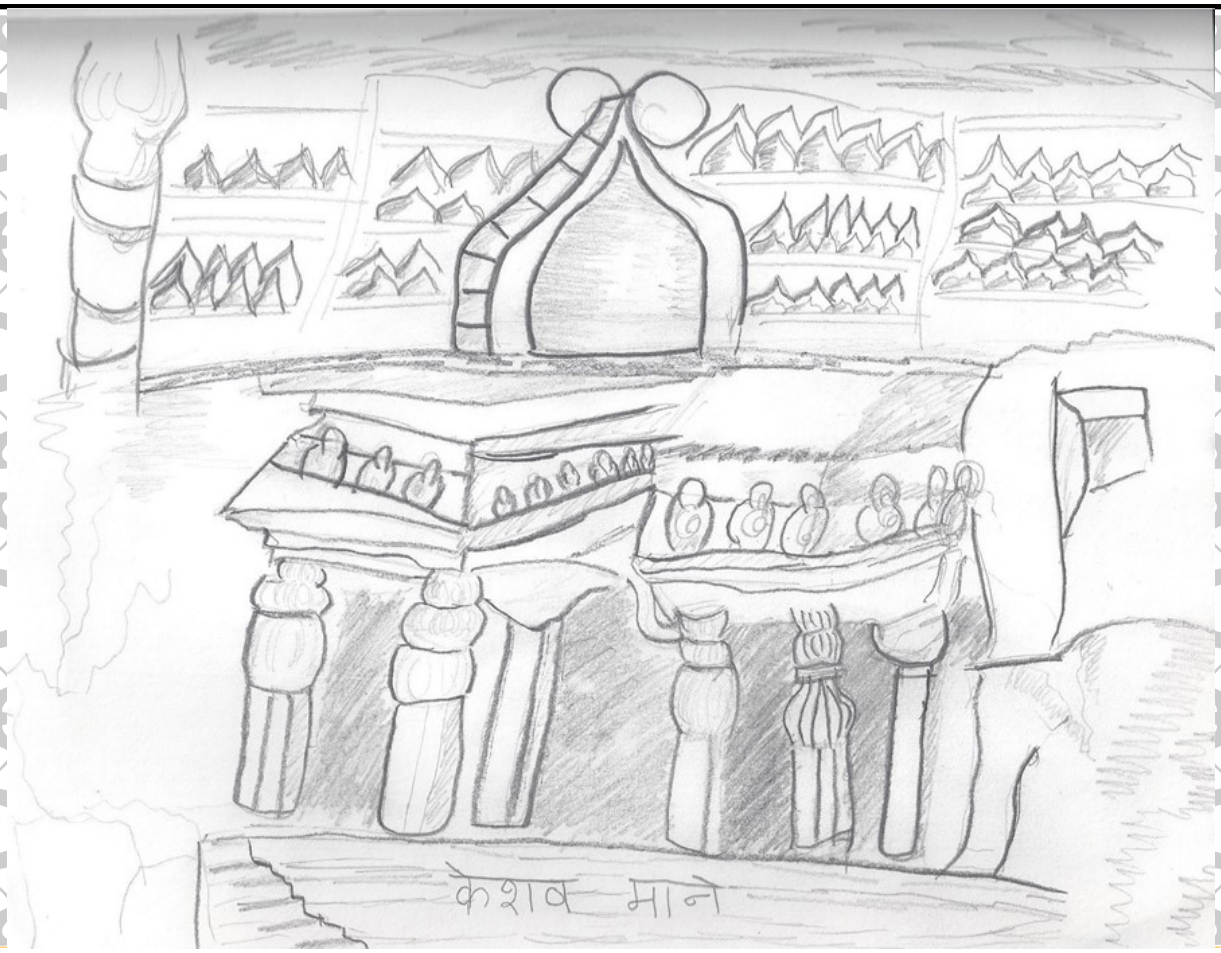

Are you ready to take ACT or SAT? Let us help you...

Do you know which test fits you the best? Optimize Your Results!

Free ACT/SAT Diagnostic Test

June 2, June 16 or July 14
Free Consultation to help you select ACT or SAT!

ACT/SAT Summer Camp - Register Early & Save

Free Foundation Building Program (PSAT/PreACT)
$1,000 Value – Use Coupon Code **H10518**

Summer Camps Staring Soon

Early Summer	Late Summer
June 25 to July 20	July 23 to August 17

Our Five Steps Process

- ACT & SAT Diagnostic Test
- Foundation Building Program
- ACT or SAT Summer Camp
- Bridge Sessions
- Refresher Program and more...

All Inclusive Program Features

- Small Group Size
- 12:4 Students:Teachers Ratio
- ANAdvantage SRI Sessions Strategies, Review & Instruction
- Teacher-Led Workshops
- 1:1 Tutoring Sessions
- 12 Practice Tests
- Essay for ACT or SAT and more...

Copyright © 2018 Academic Navigator LLC. All rights reserved.

Academic Navigator LLC
Let's Optimize Results...

www.AcademicNavigator.com • 732•902•6200 • ask@academicnavigator.com
101 Lincoln Highway, Edison, NJ 08820

Thinking of Applying to College? Let us help you...

FREE SEMINAR

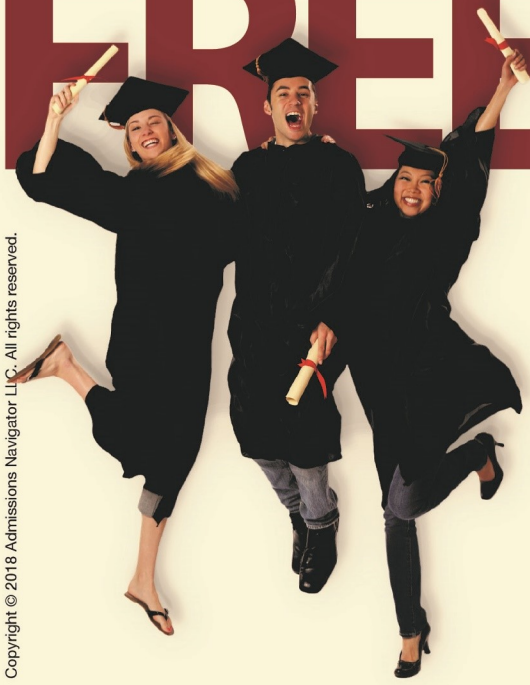

Copyright © 2018 Admissions Navigator LLC. All rights reserved.

Getting Organized to Apply

Sign up early • Seating is limited • Register now
June 10 Sunday (11 AM to 12:30 PM)

Offer Options to Fit Your Every Need!
Free initial Consultation - Individualized Admission Assistance

It is never too early to Start Planning for College

Let ANAdvavntage work for you

- Admission Strategies
- Visiting & Selecting Colleges
- Application Essays
- Admission Interviews
- Scholarship & Financial Aid
- Career Goals
- Building a Solid Foundation
- Standardized Tests
- Extracurricular Activities
- Parent's Role

Admissions Navigator LLC
Let's Talk Admissions...

www.AdmissionsNavigator.com • 732•343•1111 • ask@admissionsnavigator.com
101 Lincoln Highway, Edison, NJ 08820

राणा कुंभा की कहानी

मेरा नाम काव्या सिंह है। मैं ईस्ट ब्रंज़्विक हिन्दी पाठशाला की मध्यमा-१ कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे हिन्दी सीखना बहुत अच्छा लगता है। पहले मैं भारत से इंग्लिश में किताबें ला कर पढ़ती थी। लेकिन अब मैं हिंदी की किताबें भी पढ़ती हूँ। किताबों के साथ मुझे आर्ट, संगीत और टेनिस भी अच्छा लगता है। मैं कथक और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीखती हूँ।

"जय मेवाड़"! अपने पिता से ये सुन कर राजकुमार कुंभा ने बहादुरी से जीना सीखा। बड़े हो कर यही राजकुमार राणा कुंभा के नाम से दूर-दूर तक जाने गए। राणा कुंभा ने अपने पिता को मारने वाले बुरे लोगों को पकड़ने की क़सम ली। उनमें से एक था माफ़ा जिसको राणा ढूँढ रहे थे। मुग़ल सुल्तान ख़िलजी ने माफ़ा को अपने क़िले में छुपा कर रखा था। राणा कुंभा को जब ये बात पता चली तो उन्होंने सुल्तान ख़िलजी से माफ़ा को भेजने को कहा। सुल्तान ने मना कर दिया। राजपूत सेना ने लड़ाई में सुल्तान को हरा दिया और उसको जेल में बन्द कर दिया। माफ़ा बच कर निकल गया। राणा कुंभा ने सुल्तान से अपनी जीत की ख़ुशी में चित्तौड़ गढ़ में ९ माले ऊँचा विजय स्तंभ बनवाया। ये विजय स्तम्भ आज भी लोग देखने जाते हैं। कुछ साल बाद माफ़ा ने राणा से माफ़ी माँग ली और राणा ने उसे माफ़ कर दिया। राणा कुंभा ने सुल्तान को भी जेल से छोड़ दिया। सुल्तान ने फिर से राणा पर हमला किया और फिर से सुल्तान हार गया। राजस्थान में मेवाड़ के ८४ में से ३२ क़िले राणा कुंभा ने बनवाए थे। राजस्थान का सबसे बड़ा क़िला, कुम्भलगढ़, राणा कुंभा ने ही बनवाया था। कुम्भलगढ़ की दीवार दुनिया की दूसरी सबसे लम्बी दीवार है, ग्रेट वॉल अफ चीन, पहले स्थान पर है। राणा कुंभा की कहानी हमें बहुत सी अच्छी बातें सिखाती है।

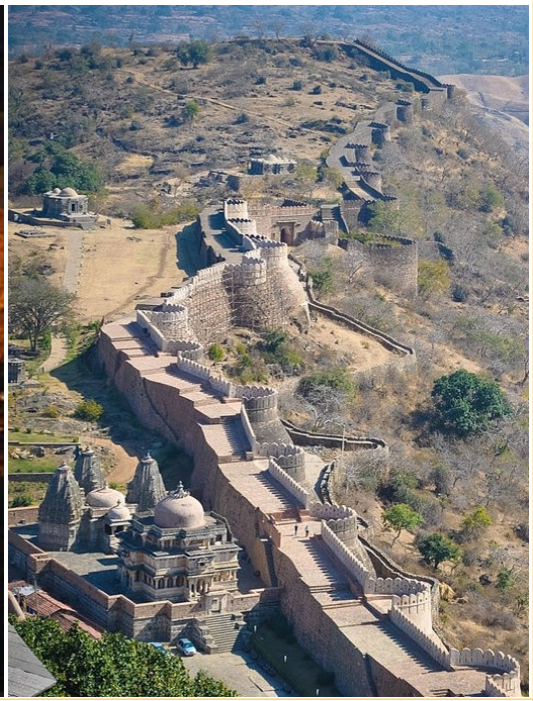

Are your $$'s working as hard as you are?

Are you in the right investments... are they suitable for you?

Are your goals being met by your current investments?

Are you getting the personal care you deserve?

npi NORTHSTAR PORTFOLIO INVESTMENTS

* 401K * IRA's * 529 * Trusts

FUTURE ALIGN YOUR FINANCIALS WITH US...
DECADES OF EXPERIENCE PUT TO WORK FOR YOU

Our Hindi USA relationship gets you beneficial pricing!!

investments@onenorthstar.com 203-343-0880 www.onenorthstar.com

Disclaimer: Past performance is no guarantee of future results. A risk of loss is involved with investments in capital markets. Please consider investment actions in light of your goals, objectives, cash flow needs, time horizon and other lasting factors.

WE COULDN'T BE MORE EXCITED ABOUT THIS MESSAGE

Yes, WE ARE GROWING

Yes, WE ARE HIRING

Even in this economy

For a career opportunity as Financial Advisor or Manager

Thevan Theivakumar, CLF®

Sr. PARTNER, New Jersey Sales Office

(732) 319-8758

ntheivakuma@ft.newyorklife.com

WE STAND STRONG

JOIN OUR TEAM

NEW YORK LIFE

The Company You Keep®

New York Life Insurance Company 379 Thornall Street, 8th Floor Edison, NJ 08837

EOE.M/F/D/V

454352 CV 6/18/17